डाक पंजीयन नं. 99/2021-23
E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com
website:www.aadhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

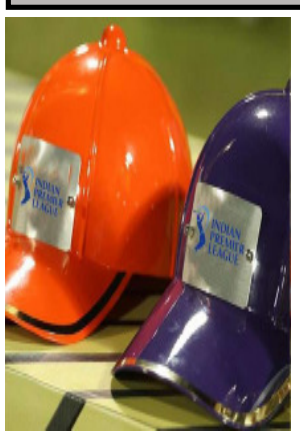

आधुनिक समाचार

PG-8

PG-8

सिनेमाः बॉक्स ऑफिस पर की बंपर कमाई

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -08 अंक -29 | प्रयागराज, शनिवार 02 अप्रैल, 2022 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

कब्जा पत्र जारी होने तक नगर निगम को भरना होगा हर्जाना

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को कहा कि खोरी गांव निवासियों की पुनर्वास योजना के तहत ईडब्ल्यूएस फ्लैट पाने के पात्र लोगों को कब्जा पत्र जारी होने तक उन्हें 2,000 रुपये प्रतिमाह हर्जाना देने की जिम्मेदारी फरीदाबाद नगर निगम की है। इस बीच, पीठ ने हरियाणा में वन और गैर-वन भूमि के संबंध में मुद्दों को उठाने वाली अलग-अलग याचिकाओं पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है। गौरतलब है कि खोरी गांव के अरावली वन क्षेत्र में अवैध निर्माण के खिलाफ हुई ध्वस्तीकरण की कार्रवाई के कारण वहां के कई परिवार बेघर हो गए हैं। नगर निगम की ओर से पेश वकील ने कोर्ट को बताया कि 1,027 आवेदक पात्र पाए गए हैं। उन्हें अप्रैल के अंत तक स्थायी फ्लैट आवंटित कर दिए जाएंगे। जस्टिस एएम खानविलकर, जस्टिस एएस ओक और जस्टिस सीटी रविकुमार की पीठ को याचिकाकर्ताओं की ओर से पेश वकील ने बताया कि प्रोविजनल आवंटन के तहत कुछ पात्र आवेदकों को जो फ्लैट दिए गए हैं, वे रहने के काबिल नहीं हैं। याचिकाकर्ताओं के वकील वरिष्ठ अधिवक्ता संजय पारिख ने दलील दी कि हर्जाने का भुगतान (जोकि पहले छह महीने के लिए किया जाना था) उस वक्त तक जारी रहना चाहिए जब तक कि लोगों को रहने योग्य फ्लैट नहीं मिल जाते।

भ्रामक विज्ञापनों पर केंद्र सरकार का सख्त रुख

नई दिल्ली। भ्रामक विज्ञापनों पर सरकार ने सख्त रुख अपनाते हुए कई कंपनियों के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई की है। सरकार के कड़े तेवर को देखते हुए एक दर्जन से अधिक कंपनियों ने अपने विज्ञापन वापस ले लिए हैं। कुछ कंपनियों ने तत्काल प्रभाव से अपने विज्ञापनों में जरूरी सुधार कर लिया है। जबकि उपभोक्ता मामले मंत्रालय ने उपभोक्ताओं को भ्रमित करने वाले विज्ञापनों के लिए दोषी पाई गई तीन कंपनियों पर जुर्माना भी लगाया है। उपभोक्ताओं को ठगने वाले इस तरह की गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) का गठन किया है। सूरत संवारने, दांत चमकाने, काले को गोरा बनाने, आंखों की रोशनी बढ़ाने ही नहीं बिना किसी वैज्ञानिक आधार के कोरोना वायरस को भगाने जैसे भ्रामक विज्ञापनों की बाढ़ आई है।

पीएम मोदी छात्रों के साथ आज करेंगे परीक्षा पे चर्चा, 15 लाख से ज्यादा लोग होंगे शामिल

नई दिल्ली। परीक्षाओं से ठीक पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की छात्रों के साथ होने वाली परीक्षा पे चर्चा को लेकर आखिरकार इंतजार खत्म हुआ। पीएम की छात्रों के साथ यह चर्चा शुक्रवार सुबह 11 बजे नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में होगी। करीब एक हजार छात्र और शिक्षक इस कार्यक्रम में पीएम के सामने मौजूद रहेंगे, जबकि लाखों की संख्या में छात्र, शिक्षक और अभिभावक आनलाइन जुड़ेंगे। पीएम मोदी की छात्रों के साथ होने वाली इस महत्वपूर्ण चर्चा से जुड़ी तैयारियों को गुरुवार को शिक्षा मंत्रालय ने अंतिम रूप दिया। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने गुरुवार को सहयोगी मंत्रियों के साथ तालकटोरा स्टेडियम पहुंचकर तैयारियों को जांचा। प्रधान ने कहा कि, 'परीक्षा पे चर्चा एक बहुप्रतीक्षित वार्षिक कार्यक्रम है, जिसमें प्रधानमंत्री परीक्षा के तनाव से संबंधित सवालों का जवाब देते हैं और एक जीवंत कार्यक्रम में छात्रों द्वारा अपनी अनूठी आकर्षक शैली में संबंधित क्षेत्रों को प्रस्तुत करते हैं।' परीक्षा पे चर्चा, एक सार्वजनिक आंदोलन करार देते हुए, मंत्री प्रधान ने देश के कोविड-19 महामारी से बाहर आने और परीक्षाओं को आफलाइन मोड में स्थानांतरित करने के मद्देनजर इस वर्ष के परीक्षा पे चर्चा के महत्व को रेखांकित किया। 21वीं सदी की ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के निर्माण में परीक्षा पे चर्चा जैसी पहलों के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि इसकी एक औपचारिक संस्था बन रही है जिसके माध्यम से प्रधानमंत्री सीधे छात्रों से बातचीत करते हैं। गौरतलब है कि कार्यक्रम में शामिल होने के लिए इस बार करीब 15 लाख छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों ने अपना रजिस्ट्रेशन कराया है। इसके साथ ही शिक्षा मंत्रालय ने इस चर्चा का देश के सभी शैक्षणिक संस्थानों में सीधे प्रसारण का निर्देश दिया है। पीएम मोदी की छात्रों के साथ परीक्षा पे चर्चा का यह पांचवां संस्करण है। इस दौरान वे छात्रों को परीक्षा के दौरान होने वाले तनाव को भगाने का मंत्र देते दिखेंगे।

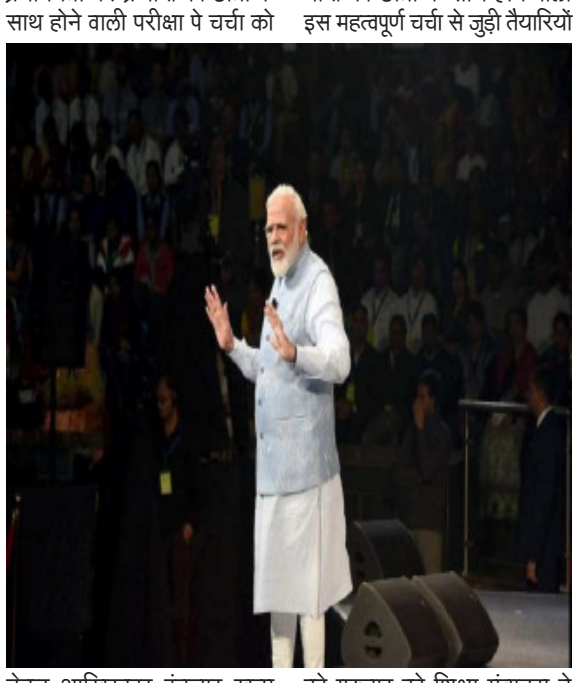

देश के लिए खतरा है जाकिर नाइक का संगठन
गृह मंत्रालय ने मुस्लिम युवाओं को कट्टरपंथी बनाने के आरोप में 5 साल का लगाया बैन

नई दिल्ली। देश के लिए खतरा बताते हुए गृह मंत्रालय ने इस्लामिक रिसर्च फाउंडेशन (आइआरएफ) को एक गैरकानूनी संगठन घोषित कर इसपर पांच साल के लिए बैन लगा दिया है। एमएचए (र्श्ईं) की एक अधिसूचना के अनुसार आइआरएफ के संस्थापक जाकिर नाइक अपने आपत्तिजनक भाषण में आतंकवादियों की प्रशंसा करते रहे हैं और हर मुसलमान को आतंकवादी बनने को कहते हैं। मंत्रालय के अनुसार आइआरएफ संस्थापक युवाओं के इस्लाम में जबरन धर्मांतरण को बढ़ावा दे रहा है और अपने भाषणों में आत्मघाती बम विस्फोटों को सही ठहराता है। गृह मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना में कहा गया है कि नाइक भारत और विदेशों में मुस्लिम युवाओं को आतंकवादी कृत्य करने के लिए प्रेरित करता रहा है। जाकिर हिंदुओं, हिंदू देवताओं और अन्य धर्मों के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी भी पोस्ट करता है, जो अन्य धर्मों के लिए अपमानजनक हैं। बता दें कि नाइक के एनजीओ आइआरएफ के गुजरात, कर्नाटक, जम्मू और कश्मीर, झारखंड, केरल, महाराष्ट्र और ओडिशा में गैरकानूनी गतिविधियों में लिप्त होने की बात सामने आइ है। आतंकवाद विरोधी न्यायाधिकरण के समक्ष पेश हुए सॉलिसिटर जनरल ने बताया कि उनके पास यह दिखाने के लिए भारी सबूत हैं कि जाकिर नाइक वीडियो के माध्यम से अपनी शिक्षाओं का प्रचार करके और विभिनन्‍ सोशल मीडिया चैनलों के माध्यम से भड़काऊ भाषण और व्याख्यान देकर भारत में अपने अनुयायियों तक पहुंचाता है। मंत्रालय ने यह भी कहा है कि एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी द्वारा सीलबंद लिफाफे में इस ट्रिब्यूनल के समक्ष रिकॉर्ड की गई सामग्री से पता चलता है कि आइआरएफ के ट्रस्टी और विशेष रूप से जाकिर नाइक ने धन जुटाने के उद्देश्य से खाड़ी देशों की यात्रा जारी रखी है और ट्रस्ट, एनजीओ, शेल कंपनियां खोली हैं। जानकारी के अनुसार इन सबका एक ही उद्देश्य है और वह है मुस्लिम समुदाय के युवाओं को कट्टरपंथी बनाना।

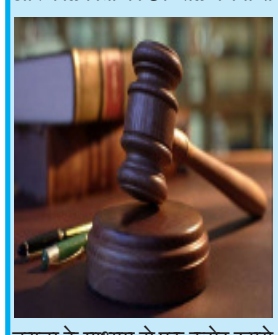

नीट-पीजी में विसंगतियों को दुरुस्त करने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने खाली 146 सीटों पर काउंसलिंग को किया रद

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने 146 से अधिक खाली सीटों पर 'विसंगतियों को दुरुस्त करने' के लिए नीट-पीजी 2021-22 दाखिले की खातिर आल इंडिया कोटे की काउंसलिंग गुरुवार को रद कर दी। ये 146 सीटें उम्मीदवारों के लिए पिछले दौर की काउंसलिंग में उपलब्ध नहीं थीं। उम्मीदवारों के पास इन खाली बची सीटों पर दाखिले के लिए काउंसलिंग में भाग लेने का कोई अवसर नहीं था जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, सूर्यकांत और बेला एम. त्रिवेदी की पीठ ने 146 खाली सीटों पर काउंसलिंग के लिए विशेष चरण आयोजित करने और दूसरे चरण में अखिल भारतीय कोटा या राज्य कोटा में शामिल होने वाले छात्रों को इसमें भाग लेने की अनुमति दी। पीठ ने स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक को 24 घंटे के भीतर छात्रों से विकल्प आमंत्रित करने और विकल्प मिलने के बाद 72 घंटे के भीतर प्रक्रिया पूरी करने का निर्देश दिया। अदालत ने स्पष्ट किया कि संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत उसके न्यायाधिकार क्षेत्र का इस्तेमाल करते हुए सभी निर्देश दिए गए हैं। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को केंद्र को नीट-पीजी 2021-22 काउंसलिंग के 'माप अप राउंड' में गुरुवार तक यथास्थिति बनाए रखने का निर्देश दिया था। शुरू में केंद्र सरकार की ओर से पेश अतिरिक्त सालिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी ने कहा कि स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक ने 146 खाली सीटों को निरस्त करने का फैसला किया है, लेकिन अदालत इससे सहमत नहीं हुई। उसने कहा कि इन सीटों को भरने के लिए एक और चरण की काउंसलिंग की जा सकती है। इससे हमारे पास 146 और डाक्टर होंगे। सीटों को निरस्त करना आपराधिक कदम होगा।

यंग इंडिया मामले में आयकर अभिकरण से गांधी परिवार को राहत नहीं

नई दिल्ली। आयकर अभिकरण ने गुरुवार को गांधी परिवार के खिलाफ 800 करोड़ से अधिक की अचल वाणिज्यिक संपत्ति के मामले को बरकरार रखा है। यह मामला गांधी परिवार द्वारा पांच लाख रुपये की शेयर कैपिटल वाली कंपनी यंग इंडिया बनाने और कोलकाता की एक शेल कंपनी से हवाला के माध्यम से एक करोड़ रुपये की रकम से जुड़ा है। मामले की शुरुआत 26 फरवरी 2011 को एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटिड (एजेएल) के शेयरों के अधिग्रहण के साथ चर्चा में आया था। एजेएल का गठन एक पब्लिक लिमिटेड कंपनी के तौर पर 20 नवंबर 1937 को भारतीय कंपनी अधिनियम, 1913,के अंतर्गत विभिनन्‍ भाषाओं में समाचार पत्रों को प्रकाशन के लिए किया गया था। एजेएल ने अंग्रेजी में नेशनल हेराल्ड, हिंदी में नवजीवन और उर्दू में कौमी आवाज समाचार पत्र प्रकाशित करने शुरू किए थे। इस मामले में आयकर विभाग की कार्रवाई और एसेसमेंट आदेश को गांधी परिवार द्वारा दो बार याचिका दाखिल कर दिल्ली हाई कोर्ट में चुनौती दी गई थी। हालांकि कोर्ट ने दोनों याचिकाएं निरस्त कर दी थीं। आयकर अधिकारियों द्वारा 249.15 करोड़ रुपये का टैक्स लगाए जाने के आदेश पर आयकर आयुक्त अपील (सीआइटी ए) छह दिसंबर 2018 को मुहर लगा चुका है। बता दें, एजेएल की वाणिज्यिक परिसंपत्तियों का अधिग्रहण यंग इंडिया का गठन होने के तीन माह के भीतर कोई टैक्स और स्टैंप ड्यूटी चुकाए बिना ही पूरा कर लिया गया था। 27 दिसंबर, 2017 के एक आदेश में आयकर विभाग ने इस 'धोखाधड़ी वाले सौदे' में गांधी परिवार को उपार्जित (एक्रूड) 414.40 करोड़ के लाभ पर 249.15 करोड़ रुपये का टैक्स निर्धारित किया था। यंग इंडिया ने इस सीआइटी (ए) के आदेश को आयकर अपीलीय अभिकरण में चुनौती दी। इसकी दूसरी अपील का अभिकरण ने 31 मार्च 2022 को निस्तारण किया। इसमें अभिकरण ने मूल्यांकन अधिकारी और प्रथम अपीलीय अधिकारी के गांधी परिवार को उपार्जित लाभ की रकम 395 करोड़ करने के फैसले को बरकरार रखा। इससे गांधी परिवार को 17 करोड़ रुपये की कमी के रूप में थोड़ी राहत मिली।

यूक्रेन में अभी भी फंसे हैं 40-50 भारतीय, विदेश राज्यमंत्री मीनाक्षी लेखी ने राज्यसभा को दी जानकारी

नई दिल्ली। यूक्रेन में रूसी हमले के बाद वहां फंसे भारतीय लोगों को निकालने के लिए सरकार ने तमाम उपाय भी किए और लगभग सभी भारतीयों को वहां से निकाल भी लिया गया। लेकिन अब सरकार ने बताया है कि वहां अब भी 40-50 भारतीय फंसे हैं। सरकार ने गुरुवार को राज्यसभा को बताया कि यूक्रेन पर रूस के हमले के बाद फरवरी से अब तक वहां से 22,500 नागरिक भारत लौट चुके हैं। लगभग 40-50 भारतीय अभी भी युद्धग्रस्त देश में हैं, जिनमें से कुछ ही लौटने को तैयार हैं। विदेश राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी ने यूक्रेन से सुरक्षित निकाले गए लोगों की संख्या पर एक प्रशन के लिखित उत्तर में कहा, कुल मिलाकर 22,500 नागरिक फरवरी 2022 से अब तक भारत लौट आए हैं। लगभग 40-50 भारतीय नागरिक अभी भी यूक्रेन में हैं, जिनमें से कुछ ही भारत लौटने के लिए इच्छुक हैं। उनकी वापसी की सुविधा दूतावास द्वारा दी जा रही है। 24 फरवरी को रूसी हमले के बाद यूक्रेनी अधिकारियों ने नागरिक विमानों के लिए देश के हवाई क्षेत्र को बंद कर दिया था। पिछले पांच वर्षों के दौरान फंसे भारतीयों और अन्य नागरिकों को निकालने के लिए किए गए अभियानों की संख्या पर एक अन्य सवाल पर उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के दौरान सरकार ने भारतीय नागरिकों को भारत और दुनिया के अन्य हिस्सों से वापस लाने के लिए वंदे भारत मिशन शुरू किया था। उन्होंने कहा, वंदे भारत मिशन और एयर बबल व्यवस्था के तहत अब तक संचालित उड़ानों में लगभग 2.97 करोड़ यात्रियों (इन-बाउंड और आउट-बाउंड) को सुविधा प्रदान की गई है। लेखी ने कहा, आपरेशन देवी शक्ति के तहत सात उड़ानों में 448 भारतीय नागरिकों, 206 अफगानों (हिंदू सिख अल्पसंख्यक समुदाय के सदस्यों सहित) और अन्य देशों के 15 लोगों (नेपाल, लेबनान और युगांडा) सहित कुल 669 लोगों को अफगानिस्तान से निकाला गया था। उन्होंने कहा कि भारत लौटने की मांग करने वाले सभी भारतीय नागरिकों को सुरक्षित निकाल लिया गया है।

24 फरवरी को रूस द्वारा हमला किए जाने के बाद यूक्रेन ने अपने वायु क्षेत्र को नागरिक विमानों के लिए बंद कर दिया था जिसके बाद वहां कई देशों के नागरिक फंस गए थे। सरकार ने बताया कि फरवरी से अब तक कितने भारतीयों को वापस लाया जा चुका है।

उत्तर व मध्य भारत लू की चपेट में, जानें- दिल्ली एनसीआर सहित अन्य राज्यों में कैसा रहेगा मौसम

नई दिल्ली। देशभर के कई हिस्सों में तापमान लगातार बढ़ रहा है। इस साल मार्च के महीने में पूरे देश में गर्मी का प्रचंड मार्च जारी रहा। मौसम विभाग के मुताबिक, दिल्ली के कुछ हिस्सों में भीषण गर्मी पड़ने की उम्मीद है। मौसम विभाग ने बताया है कि शुक्रवार यानी आज दिल्ली में अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस रह सकता है। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व पूर्वी राजस्थान के अधिकांश शहरों में तापमान मार्च के अंत में 40 डिग्री से अधिक दर्ज हुआ है। ऐसा पहली बार है। पिछले एक दशक में आमतौर पर पश्चिमी राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, तेलंगाना, आंध्र व कर्नाटक के कुछ शहरों में मार्च में पारा 40 डिग्री के पार जाता रहा है। भारतीय मौसम विभाग के विज्ञानी आरके जेनामनी ने बताया, सामान्य रूप से पश्चिमी राजस्थान, गुजरात, विदर्भ, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश व ओडिशा में मार्च में दो-तीन दिन तापमान 40 डिग्री सेल्सियस के पार जाता था, लेकिन इस बार असाधारण स्थिति है। दिल्ली में 15 मार्च के बाद तापमान सामान्य से 5-10 डिग्री अधिक है। जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, उत्तराखंड, हिमाचल में 19 से 27 मार्च तक तापमान सामान्य से 9-10 डिग्री ज्यादा रहा। मैदानी इलाकों में 13 से 19 मार्च के बीच हीटवेव आई। 27 मार्च से हीटवेव का दूसरा दौर शुरू हुआ, जो 2 अप्रैल तक चल सकता है। अगले 15 दिन गर्म हवाएं चलती रहेंगी। हवा की दिशा में बदलाव के चलते अगले दो दिन दिल्ली वासियों को लू से मिलेगी थोड़ी राहत। इसके बाद फिर से झेलने पड़ेंगे भीषण लू के थपेड़े। शुक्रवार को भी आसमान रहेगा साफ। हवा की गति 20 से 30 किलोमीटर प्रति घंटा रहने की संभावना। पंजाब में शुक्रवार से मौसम का मिजाज बदलेगा। हवा चलने से लोगों को राहत मिल सकती है। मौसम विशेषज्ञों के अनुसार हवा का रुख उत्तर-पश्चिम दिशा से रहेगा। जम्मू में तापमान 36 डिग्री पहुंचने से बेहाल करने लगी गर्मी। मौसम विभाग के अनुसार अप्रैल के पहले सप्ताह में 40 डिग्री तक पहुंच सकता है पारा। फिलहाल बारिश की कोई संभावना नहीं। हिमाचल प्रदेश में गर्मी से अभी राहत मिलने की संभावना नहीं। मौसम विभाग के अनुसार अगले चार दिन तक मौसम में बदलाव नहीं आएगा। धूप खिलने से गर्मी और बढ़ेगी। जमीन में नमी खत्म होने के आसार। कई जिलों में तेज लू चलने की जताई आशंका मौसम विभाग के मुताबिक पश्चिम यूपी में 3 अप्रैल तक लू का भयानक कहर बरपने की आशंका है।

AFSPA पर केंद्र के फैसले का असम के मुख्यमंत्री ने किया स्वागत, 1 अप्रैल से होगा लागू

गुवाहाटी। असम से अफस्पा कानून को हटाने को लेकर केंद्र के फैसले पर राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत विश्व सरमा ने बुधवार को प्रसन्नता जताई है। इस फैसले के बाद असम के जिन क्षेत्रों में लागू है वह हटा दिया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा, 'अफस्पा के हटने से राज्य का 60 फीसद क्षेत्र आजाद हो जाएगा।' बता दें कि 1 अप्रैल से केंद्र का यह फैसला असम के 9 जिलों व एक सबडिविजन को छोड़ पूरे राज्य में लागू हो जाएगा। सरमा ने कहा, 'मैं पूरे दिल से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के फैसले का स्वागत करता हूं जिसमें असम के सभी इलाकों से को हटाने का निर्देश दिया गया है। इसके लिए मैं केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने इतना अहम फैसला लिया। अब राज्य का करीब 60 फीसद इलाका अफस्पा से आजाद हो जाएगा।' मुख्यमंत्री ने कहा साल 1990 से लागू है और यह नया फैसला असम के भविष्य में नए अध्याय की शुरुआत है। मैं राज्य की जनता को भी इसके लिए बधाई देता हूं।

फाफामऊ पुल रिपेयरिंग: जाम से बचने के लिए बना डायवर्जन प्लान

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

प्रयागराज। फाफामऊ पुल (चन्द्रशेखर आजाद सेतु) के क्षतिग्रस्त एक्सपैंशन ज्वाइन्ट, फुटपाथ के रिपेयर और नमामि गंगे कार्यक्रम के अन्तर्गत फाफामऊ क्षेत्र में सीवेज ट्रीटमेन्ट प्लान्ट वे निर्माण को देखते हुए पुल पर बड़े वाहनों का आवागमन बंद किया जाएगा। जिला प्रशासन के अनुसार प्रयागराज से आने और जाने वाले वाले भारी कॉमिर्शियल ट्रकों व छोटे कॉमिर्शियल वाहनों व रोडवेज बसों के लिए यातायात डायवर्जन की व्यवस्था लागू की गयी हैं। 1.प्रतापगढ़ मार्ग की ओर से जनपद प्रयागराज आने वाले भारी, कॉमिर्शियल ट्रक, छोटे कॉमिर्शियल वाहन व रोडवेज बस सोरावं बाईपास से सहसों बाईपास-अंदावा चौराहा-शास्त्री ब्रिज-झूसी-जीटी जवाहर चौराहा होते हुए अपने गतंव्य को जायेंगें। 2.लखनऊ/ रायबरेली मार्ग की ओर से प्रयागराज आने वाले भारी कॉमिर्शियल ट्रकों, छोटे कॉमिर्शियल वाहनों व रोडवेज बस नवाबगंज बाईपास से सहसों बाईपास-अंदावा चौराहा-शास्त्र ब्रिज-झूसी-जीटी

जवाहर चौराहा होते हुए अपने गतंव्य को जायेंगें 3.इस अवधि में चन्द्रशेखर आजाद सेतु पर केवल दो पहिया वाहनों का संचालन किया जायेग 4.इस अवधि में दोनों पाण्टून पुलों पर चार पहिया वाहन, हल्के प्राइवेट वाहन का संचालन किया जायेगा 5.इस अवधि में चार पहिया वाहन (हल्के प्राइवेट वाहन) फाफामऊ पानी टंकी तिराहा से दाहिने-बेला कछार से पाण्टून पुल होते हुए महावीरपुरी कालोनी होते हुए अपने गंतव्य (शहर क्षेत्र में) को जायेंगें 6.शहर क्षेत्र से लखनऊ/ रायबरेली/प्रतापगढ़ जाने वाले चार पहिया वाहन (हल्के प्राइवेट वाहन) तेलियरगंज चौराहा से बांये-शंकर घाट कालोनी से पाण्टून पुल होते हुए बेला कछार से फाफामऊ पानी टंकी तिराहा होते अपने गंतव्य को जायेंगें। 7. शहर क्षेत्र से भारी/ कॉमिर्शियल/ट्रकों/छोटे कॉमिर्शियल वाहनों व रोडवेज बसों का डायवर्जन लोक सेवा आयोग चौराहा से इण्डियन प्रेस-बालसन-जीटी जवाहर चौराहा-शास्त्री ब्रिज-झूसी-अंदावा चौराहा-सहसों बाईपास होते हुए लखनऊ/रायबरेली/प्रतापगढ़ को जायेंगें। 8.इस अवधि में शहर क्षेत्र से भारी/कॉमिर्शियल/ट्रकों/छोटे कॉमिर्शियल वाहनों व रोडवेज बसों का डायवर्जन लोक सेवा आयोग चौराहा से इण्डियन प्रेस-बालसन-जीटी जवाहर चौराहा-शास्त्री ब्रिज-झूसी-अंदावा चौराहा होते हुए जौनपुर/वाराणसी को जायेंगें। 9. कॉमिर्शियल सवारी छोटे वाहन (ई-रिक्शा, टैम्पों, आटो आदि) सिविल लाइन से तेलियरगंज चौराहा/ गोविन्दपुर मोड़ तक संचालन कराया जायेगा। 10.इस अवधि में कॉमिर्शियल सवारी छोटे वाहन (ई-रिक्शा, टैम्पों, आटो आदि) फाफामऊ क्षेत्र की तरफ से फाफामऊ बाजार होते हुए फाफामऊ पार्क तिराहा तक संचालन कराया जायेगा। कॉमिर्शियल सवारी छोटे वाहन ई-रिक्शा, टैम्पों, आटो आदि का संचालन पाण्टून पुल पर पूर्णतया बंद रहेगा।

ठेकेदार एवं निगम विभाग की लापरवाहीयों को चुटकी में निस्तारित

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। मार्च 2022 दिन बृहस्पतिवार को नैनी स्थित चक भटाई वार्ड 59 के राम नगर चौराहे पर पिछले कई वर्षों से जलभराव का बहुत बड़ी समस्या जो कि गई थी वह नगर निगम के ठेकेदार आसमा कंस्ट्रक्शन एवं नगर निगम नैनी के सिविल विभाग के अधिकारी व कर्मचारी के मिलीभगत की थी जो मानक अनुरूप कार्य नहीं किया गया। यह गलत व लापरवाही कार्य किया गया था उस पर आज चक भटाई पार्षद इंजीनियर नीलम यादव जी के उपस्थिति में और वार्ड के सफाई नायक व सफाई कर्मी के माध्यम से चौराहे पर पूर्व में निर्मित एक आपातकालीन पुलिया को जलकल के जेटिंग मशीन के माध्यम से सफाई करा कर से नालों को जोड़ा गया और कई वर्ष की यह समस्या को 1 घंटे में खत्म किया गया। जिसके लिए निगम के अधिकारी जनता की धन का बंटरवार करने में लुप्त है और कहने पर अंदेखा किया करते हैं। इस कार्य के लिए विभाग को क्षेत्रीय जनता ने कई बार लिखित शिकायत एवं पार्षद जी के द्वारा कार्य के प्रति लापरवाही के लिए कई बार जांच के लिए लिखित रूप से प्रेषित किया किंतु कोई भी कार्यवाही सुनिश्चित नहीं की गई। अंतः खुद मौजूद होकर अपनी खुद की सोच और मेहनत से यह कार्य सिद्ध करके दिखाया। आखिरकार सरकार के विभागों में बैठे ऐसे कर्मचारियों को इतना वेतन क्यों देती है और जनता को लाभ न पहुंचाकर उन्हें और सताया जाता है ऐसे अधिकारी व कर्मचारियों को एवं ठेकेदारों पर कोई कार्यवाही क्यों नहीं की जाती है इसकी भी मांग अपने प्रयागराज की महापौर, नगर आयुक्त,जिलाधिकारी, क्षेत्रीय विधायक, सांसद एवं माननीय मुख्यमंत्री जी तक किया जाआयेगा।

सरसेंडी में विदाई समारोह सम्पन्न

(आधुनिक समाचार सेवा)
राकेश मीश्रा

बारा। प्रयागराज विकास खंड जसरा के उच्च प्राथमिक विद्यालय सरसेंडी में गुरुवार को रतन श्रीवास्तव के सेवानिवृत्त होने पर

विदाई समारोह आयोजित हुआ। विद्यालय के बच्चों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। देशभक्ति से ओतप्रोत गानों पर बच्चे जमकर थिरके। बाल कलाकारों में आकांक्षा, अर्पिता भार्गव, पलक, अनामिका, दीपिका, प्रियंका, सचिन, दीपक, आकाश, नव्या, पंखुड़ी, कावेरी, आँचल, प्रतिमा, आशीष आदि बच्चों ने मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। ग्राम प्रधान प्र. राम भारती सहित आये हुए सम्भ्रांत लोगों ने कार्यक्रम को सम्बोधित किया। विद्यालय परिवार की ओर से संतोष कुमारी, कंचन सिंह, रेखा रानी, सुजीत कुमार, महेंद्र कुमार व सुमन्त कुमार ने उपहार देते हुए सुखद जीवन की कामना की। इस मौके पर सत्येन्द्र कुमार श्रीवास्तव, राज कुमार, सईदा बीबी, नितिन, मनोज तिवारी, श्याम सुंदर द्विवेदी, लता सिंह, कल्पना पांडेय, मीरा देवी, सुशीला देवी, आलोक कुमार, अंकित, मोहित श्रीवास्तव सहित सैकड़ों बच्चे उपस्थित रहे।

हेड मास्टर ने रसोईया से की अभद्रता दी जान से मारने की धमकी

(आधुनिक समाचार सेवा)
राकेश मीश्रा

प्रयागराज। बारा क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम पंचायत छीड़ी के मजरा प्राथमिक विद्यालय गोदलापुर में हेड मास्टर और रसोइया के बीच चल रहा विवाद बुधवार को बढ़ गया। विवाद में हेडमास्टर ने शिक्षक की गरिमा के खिलाफ अमर्यादित भाषा का प्रयोग किया। वहां मौजूद

छात्र छात्राएं हतप्रभ रह गई। इसकी जानकारी होने पर खंड शिक्षाधिकारी जसरा गुरुवार मौके पर पहुंच कर घटना की जानकारी ली ग्राम पंचायत छीड़ी के मजरा गोदलापुर के हेड मास्टर संजय चौरसिया इस विद्यालय में लगभग 15 वर्ष से है। प्रधानाध्यापक और महिला रसोइया में अक्सर विवाद होता रहता है। बुधवार को बच्चों की गेंद बर्तन साफ कर रही रसोइया को लग गई। रसोइया ने बच्चों को डाटा। इसी बात को लेकर हेड मास्टर उसको डाटने लगे। रसोइया ने भी प्रतिवाद किया। दोनों ओर से विवाद बढ़ गया। प्रधानाध्यापक ने एक शिक्षक की गरिमा के खिलाफ खुले आम अमर्यादित भाषा का प्रयोग शुरू कर दिया और जान से मारने की धमकी दी। वहां मौजूद छात्र छात्राएं हतप्रभ रह गई ।विद्यालय की एक शिक्षिका ने खंड शिक्षाधिकारी जसरा को सूचना दी। खंड शिक्षाधिकारी जसरा वेद प्रकाश के अनुसार घटना की जांच कर ली गयी हैं। जांच आख्या बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रयागराज को भेज रहा हूं। आगे की कार्रवाई उनको करना है।

राजकीय युनानी चिकित्सालय द्वारा पोषण सप्ताह प्राथमिक विद्यालय मैं संपन्न हुआ

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

प्रयागराज। प्रदेश सरकार की महत्वाकांक्षी योजना पोषण सप्ताह के तहत प्राथमिक विद्यालय महिला हन मैं बच्चों के बीच पोषण संबंधी जानकारी दी गई। क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी प्रयागराज डॉ शारदा प्रसाद के निर्देश पर राजकीय यूनानी चिकित्सालय के प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर श्रीकांत जोशी द्वारा बच्चों को पोषण तथा कुपोषण की जानकारी देते हुए बताया कि सरकार द्वारा पोषण सप्ताह वर्ष 1975 से मनाया जा रहा है। डॉक्टर जोशी ने कहा भोजन सेहत के लिए जरूरी है। शारीरिक विकास एवं सेहत हेतु समय-समय पर भोजन लेना जरूरी है। आलू, चुकंदर, घी, तेल आदि के सेवन से कार्बोहाइड्रेट व प्रोटीन मिलता है। शारीरिक, मानसिक बुद्धि व विकास हेतु पोषण जरूरी है। खाने से पूर्व खाने के बाद हाथों की सफाई आवश्यक है। सुबह उठ कर, नहा धोकर, नाश्ता लेकर स्कूल जाएं। हरी पत्तेदार सब्जियां खाने से प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। मौके पर पूनम सिंह, देवी शंकर यादव, अनीश अख्तर, अमरचंद यादव, रेखा मिश्रा, फार्मेसिस्ट इसरार अहमद, सिराज, अयूब खान आदि मौजूद रहे।

डॉ0अंबेडकर जयंती पर पहाड़पुर में होगा भव्य समारोह

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। डॉ0भीमराव अंबेडकर की जयंती पर 14 अप्रैल को पहाड़पुर में पहाड़ खाँ बाबा स्थल पर एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया है।राजेंद्र प्रसाद यादव ने बताया कि इस समारोह के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक जीतलाल पटेल होंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में मोतीलाल चौधरी और बीएल वर्मा होंगे। अध्यक्षता गिरिजेश कुमार विश्वकर्मा साईं के द्वारा की जाएगी।इस अवसर पर 100 मीटर एवं 200 मीटर की दौड़ एवं लंबी कूद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया है।संचालन का दायित्व शिवकुमार यादव के द्वारा निभाया जाएगा।कार्यक्रम शिव मूर्ति वर्मा के दिशा निर्देशन में आयोजित किया गया है। कार्यक्रम के संयोजक संयोजक लखपति क्रांतिकारी हैं।

ऑस्ट्रेलिया में ठगाय हमारी माता हैठफिल्म को मिला बेस्ट सिनेमेटोग्राफी का अवाड

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। यूं तो अच्छी कहानी पर आधारित फिल्म एक अच्छे पायदान को प्राप्त कर ही लेती है, पर लीक से हट के कुछ मुद्दों पर

जब फिल्म बनती है तो क्रिटिक्स और दर्शकों का खास प्यार देखने को मिलता है। ऐसी ही एक फिल्म है गाय हमारी माता है। जिसके प्रोड्यूसर विवेक गयाप्रसाद श्रीवास्तव है जो कि प्रयागराज शहर के रहने वाले है।फिल्म के डायरेक्टर शुजा अली और फिल्म की पटकथा रूपाली सक्सेना जी ने लिखी है।फिल्म में अभिनय करने वाले चार्ल्स थॉमसन आस्ट्रेलिया के रहने वाले है। फिल्म की ज्यादातर शूटिंग हरिद्वार और देहरादून में की गई है।इस फिल्म में गाय के वैज्ञानिक महत्व को वरीयता दी गई है। फिल्म में कई जानेमाने और चर्चित चेहरे भी भूमिका में है जैसे लिलिपुट फारूकी ,देव चौहान,नितिन मशीन,एवं नंद किशोर पंत।अभी तक इस फिल्म ने कई अवॉर्ड जीत लिए है जिसमें विशेषकर ऑस्ट्रेलिया में बेस्ट सिनेमेटोग्राफी , कल्ट क्रिटिक में बेस्ट फिल्म ऑन रिलिजन एवं राजस्थान फिल्म फेस्टिवल में बेस्ट हिंदी फीचर फिल्म स्पेशल ज्यूरी अवार्ड मिला है।

गर्मी में पंछियों के लिए दाना-पानी की व्यवस्था

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

प्रयागराज। गर्मी लगातार बढ़ती जा रही है।भीषण गर्मी में आमजन के साथ-साथ पशु-पक्षी भी बेहाल हैं।

इस समस्या को समझते हुये मदर टेरेसा फाउंडेशन के नगर महासचिव व समाजसेवी गुफरान खान ने पंछियों को दाना-पानी के लिए 50 मिट्टी के प्याले विभिन्न स्थानों पर रखवाया जिसकी शुरुआत यमुना सेक्टर त्रिवेणीपुरम झूंसी पार्क से किया गया इस दौरान आमनज से लेकर समाजसेवी लोगो ने इसमें बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। यह शपथ लिया कि पूरे गर्मी के मौसम में वह इन मिट्टी के प्यालो मे नियमित रूप से पानी व दाना रखेंगे।समाजसेवी गुफरान ने कहा इस भागदौड़ की जिंदगी में हम लोग ऐसे बेजुबान लोगों के बारे में नहीं सोच पाते, लेकिन समय का तकाज़ा ये कहता है कि हमें इनको अपने साथ लेकर चलना है। उन्होने सदस्यों को एक- एक मिटटी का प्याला देकर उसको अपने घर या छत पर रखने व उसमें दाना व पानी की मुकम्मल व्यवस्था करने को कहा, फाउंडेशन ऐसे कार्य आगे भी करता रहेगा। इस मौके पर गुफरान खान,विनोद शर्मा,निशा मिश्रा,प्रियम शर्मा राजमणि आदि उपस्थित थे।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

भारत सरकार की कौशल विकास योजना में अगस्त 2021 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित ट्रेड प्रवेश योग्यता तथा प्रस्तुत विभिन्न पाठ्यक्रमों की अवधि इस प्रकार है-

क0सं0	ट्रेड का नाम	ट्रेड की अवधि	योग्यता
1.	कोपा	1 वर्ष	12वीं पास
2.	फिटर	2 वर्ष	10वीं पास
3.	बेसिक कम्प्युटिंग	6 माह	साक्षर
4.	डाटा इंट्री ऑपरेटर	6 माह	10वीं पास
5.	फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6 माह	8वीं पास
6.	सेक्योरिटी सर्विस	6 माह	8वीं पास
7.	कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली	1 वर्ष	10वीं पास
8.	सर्टिफिकेट इन कम्प्युटर एप्लीकेशन	1 वर्ष	10वीं पास
9.	इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स	1 वर्ष	8वीं पास
10.	रेफरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग	1 वर्ष	8वीं पास
11.	योगा असिस्टेन्ट	1 वर्ष	10वीं पास
12.	वेल्डिंग टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	8वीं पास
13.	कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स	1 वर्ष	10वीं पास

1.प्रमाण पत्रः- सफल प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो केंन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अधीनस्थ पद एवं सेवा में भर्ती के लिए मान्य है। **2.चयन की प्रक्रियाः-** इस वर्ष कोविड-19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किये जायेंगे। **3.आयु सीमाः-** उम्मीदवारों की आयु 1 अगस्त 2021 को न्यूनतम 14 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। **4.आवेदन कैसे करेः-** आवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते है तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है। **5.**आवेदन फॉर्म भरते समय पंजीकरण शुल्क रूपये 2665/- का भी देय होगा। **6.कक्षायें/उपस्थितिः-** छात्रों की उपस्थिति में दो भाग शामिल है- थ्योरी क्लास और ट्रेनिंग इस वर्ष कोविड-19 स्थिति के कारण सभी छात्र संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेंगे तथा उसके लिए संस्थान में छात्रों की भौतिक उपस्थिती की अनिवार्यता नहीं है, जब तक कोविड-19 की वर्तमान स्थिति समाप्त नहीं हो जाती है। प्रशिक्षण के लिए छात्रो को प्रधानाचार्य की अनूमति के साथ, अपने सम्बंधित मूल स्थानों पर प्रशिक्षण पूरा करने की अनुमति है। परीक्षा के समय छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। **7.छात्रवृत्तिः-** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिनके पास आय प्रमाण पत्र एवं सम्बन्धित दस्तावेज मौजूद हो वे सभी भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है। **8.** अधिक जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइटः- **www.nainiiti.com** देखें। **9.दाखिले की अंतिम तिथिः-** 15 अप्रैल 2022

सम्पर्क सूत्र :- 0532-2695959, 9415608710,
9807278552, 9415608790

देश की जनता को मोदी सरकार ने निराश किया

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

प्रयागराज। कांग्रेश राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी के निर्देश पर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी फूलपुर के तत्वाधान में ब्लॉक अध्यक्ष सिंधु सिंह की अध्यक्षता में शेखपुर मोहल्ले में पेट्रोल, डीजल,रसोई गैस सिलेंडर एवं सीएनजी,पीएनजी के दामों में बेतहाशा वृद्धि एवं महंगाई के खिलाफ धरना प्रदर्शन किया गया धरने को संबोधित करते हुए वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष प्रभारी संगठन बृजेश सिंह ने कहा कि देश की जनता को मोदी सरकार ने धोखा दिया,ठगा और निराश किया है।जनता के वोट को हासिल करने के लिए पेट्रोल,डीजल, गैस सिलेंडर,पीएनजी एवं सीएनजी की कीमतों 137 दिन तक नहीं बढ़ाया किंतु जैसे ही चुनाव खत्म हुए कीमतों में हर रोज बेतहाशा वृद्धि करके मोदी सरकार ने यह कहावत साबित

कर दी कि जनता को लूटो और खजाना भरो यदि भाजपा सरकार बढ़े हुए डीजल पेट्रोल एवं रसोई गैस के दाम मैं वृद्धि वापस नहीं लेगी तो कांग्रेस पार्टी सड़कों पर आकर धरना प्रदर्शन करेगी। जिला सचिव शिवचंद्र बिंद ने कहा कि भाजपा ने वादा किया था कि जैसे ही सरकार बनेगी सभी गरीबों को मुफ्त में भरा गैस सिलेंडर होली पर दिया जाएगा किंतु भाजपा की सरकार बन जाने पर भी लोगों को मुफ्त भरा गैस सिलेंडर नहीं दिया गया उल्टा गैस के दाम बढ़ाकर महंगाई से बेहाल कर दिया प्रदेश में अराजकता का माहौल है भ्रष्टाचार एवं चारों तरफ लूट का बोलबाला है धरना प्रदर्शन में मुख्य रूप से जगदंबा यादव,गिरधारी लाल, विपिन कुमार, अरविंद,राहुल ,रेखा देवी मंजू देवी कुसुम शीला निर्मला उषा गायत्री गीता देवी सहित महिलाएं उपस्थित रही।

शफीक अहमद संगठन मंत्री मनोनीत.....

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। लेखपाल संघ प्रयागराज की कार्यकारणी के गठन के बाद संवर्ग को मजबूत एवं लेखपाल संघ के कायी के निर्वहन हेतु नवनिर्वाचित जिलाध्यक्ष राजकुमार सागर की अध्यक्षता में बैठक हुई जिसमें सर्वसम्मति से कपसा निवासी हंडिया तहसील क्षेत्र वेज सरायहरिराम में कार्यरत लेखपाल शफीक अहमद को संगठन मंत्री की जिम्मेदारी सौंपी गयी।इस अवसर पर जिलाध्यक्ष ने उन्हें शुभकामनाएं देते हुए कहा आशा करता हूँ संघ की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए लेखपालों के हित के लिए कार्य करेंगे।मनोनीत संगठन मंत्री शफीक अहमद ने जिलाध्यक्ष सहित कार्यकारणी के सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया।

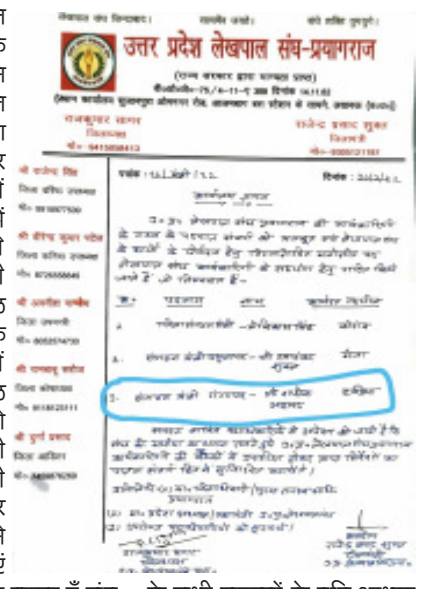
उत्तर प्रदेश लेखपाल संघ-प्रयागराज

पेट्रोल डीजल और रसोई की बढ़ी कीमतों के खिलाफ गरजे कांग्रेसी

(आधुनिक समाचार सेवा)
अजय कुमार गुप्ता

प्रयागराज। पेट्रोल, डीजल, रसोई गैस और अन्य चीजों के दामों में हो रही बढ़ोतरी के विरोध में कांग्रेस का हल्ला बोल शुरू हो गया है।

कांग्रेस के नेता और कार्यकर्ता 'महंगाई मुक्त भारत' नाम से देशव्यापी प्रदर्शन कर रहे हैं। ब्रस्पतिवार को सिविल लाइन्स स्थित धरना स्थल पर जुटे जिला कांग्रेस के पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं ने सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। प्रदर्शन के दौरान कांग्रेसियो ने रसोई गैस सिलेंडर पर नींबू मिर्च की माला और मोटरसाइकिल पर फूल की माला चढ़ाकर सांकेतिक विरोध दर्ज कराया। विरोध कर रहे नेताओ ने 'चुनाव खत्म, लूट चालू' के नारे भी लगाए। गंगापार जिलाध्यक्ष सुरेश यादव ने कहा कि पिछले 10 दिनों में 9 बार पेट्रोल-डीज़ल के दाम बढ़ाए गए हैं। इसकी मार मध्यम वर्ग और गरीब लोगों पर पड़ रही है। प्रदेश महासचिव मुकुन्द तिवारी और विवेकानंद पाठक ने कहा कि जब पेट्रोल-डीज़ल के दाम बढ़ते हैं, तब हर चीज़ के दाम बढ़ते हैं। जब दुनिया में कच्चे तेल के दाम सबसे कम थे, तब भी मोदी सरकार पेट्रोल-डीज़ल के दाम बढ़ा रही थी। कांग्रेस के जिला प्रवक्ता हसीब अहमद ने आरोप लगाते हुए कहा कि चुनाव के दौरान 137 दिनों तक कोई बढ़ोतरी नहीं हुई, अब चुनाव खत्म होते ही धड़ल्ले से दाम बढ़ाए जा रहे हैं। कांग्रेस ने तीन चरणों में 'महंगाई मुक्त भारत अभियान' चलाने का ऐलान किया है। पहला चरण 31 मार्च से 7 अप्रैल तक चलेगा, दूसरे चरण में 2 से 4 अप्रैल तक विरोध प्रदर्शन किए जाएंगे। अंतिम चरण 7 अप्रैल तक चलेगा। इसी तरह 2 से 4 अप्रैल के बीच जिला मुख्यालय पर जिला और शहर कांग्रेस कमेटियां महंगाई मुक्त भारत धरना और मार्च करेंगी।

भाजपा नेता के साथ बहस करना हेड मुहर्रिर को पड़ा महंगा,कप्तान ने किया निलंबित

(आधुनिक समाचार सेवा)
देवभूषण कननैजिया

वाराणसी ।बड़ागांव थाना क्षेत्र मे भाजपा के बरिष्ठ भाजपा नेता एवं जिला कार्यसमिति सदस्य शैलेश मिश्रा के साथ बड़ागाँव थाने का हेड कांस्टेबल (हेड मुहर्रिर) राजू विश्वकर्मा ने बहस के दौरान अभद्र भाषा का प्रयोग किया। क्षेत्रीय बिधायक के द्वारा मामलें की जानकारी कप्तान को दिया गया। कप्तान के आदेश पर कार्यवाहक क्षेत्राधिकारी चारु द्विवेदी ने बड़ागाँव थाने पर जाकर पीड़ित पक्ष से बात किया और बताई की हेड मुहर्रिर राजू विश्वकर्मा को निलंबित कर दिया गया है,और थानाध्यक्ष के खिलाफ कार्यवाही की बात को कप्तान साहब के जानकारी में देने की बात कही। क्षेत्राधिकारी बड़ागाँव चारु द्विवेदी के साथ सीओ अंदर ट्रेनिग मयंक तिवारी भी उपस्थित रहे। इस मौके पर पवन सिंह,दीपक सिंह,अरविन्द मिश्रा,मनीष पाठक, बृजेश दूबे,संदीप दूबे, रवि मिश्रा,हौशिला पाण्डेय,राकेश मिश्रा,आजाद त्रिपाठी, आशीष प्रकाश सिंह शिव रतन गिरी साजू मिश्रा सहित क्षेत्र के सैकड़ों भाजपा पदाधिकारी उपस्थित रहे।

राजातालाब तहसील पर छेड़खानी व मारपीट को लेकर महिला अधिवक्ताओं ने धरना पर बैठी

(आधुनिक समाचार सेवा)
सर्वेश कुमार यश

रोहनिया (वाराणसी)। तहसील राजातालाब में गुरुवार को महिला अधिवक्ता के भाई ने बहन के साथ छेड़खानी करने और असलहा

सटाकर धमकी दिए जाने तथा मारपीट किए जाने का आरोप लगाया। घटना को लेकर अधिवक्ता ने राजातालाब पुलिस को तहरीर देकर रिपोट दर्ज करने की मांग की है।दूसरी ओर महिला अधिवक्ता अपने साथियों के साथ राजातालाब तहसील परिसर में धरने पर बैठ गई। तहसील के अन्य अधिवक्ताओं द्वारा विरोध करने पर हमलावर मौके से भाग निकले। घटना के बाद अधिवक्ता दिव्य सिंह की बहन ज्योति व अन्य अधिवक्ता आक्रोशित होकर एसडीएम न्यायालय के सामने धरने पर बैठ गए। अधिवक्ताओं के आक्रोश के चलते उप जिलाधिकारी राजातालाब अपना सरकारी वाहन परिसर से नहीं निकाल सके वह दूसरे वाहन से तहसील से चले गए। देर शाम तक अधिवक्ता तहसील परिसर में धरने पर बैठे हुए थे।घटना को जब तहसील के अधिवक्ताओं ने सीसीटीवी में देखना चाहा तो पता चला कि तहसील की सीसीटीवी ही खराब पड़ी है। अधिवक्ताओं का आरोप था कितहसील के अधिकारियों के निष्क्रियता के चलते इस तरह की घटना घटित हुई है। दूसरी ओर अधिवक्ता दिव्य सिंह ने अपने ही गांव बिशनपुर थाना लोहता के चार नामजद और दो अज्ञात लोगों के खिलाफ राजातालाब थाने में तहरीर दिया है।बताया जाता है कि दोनों पक्ष के लोग किसी मामले को लेकर यहां पैरवी करने के लिए आए थे। धरने पर बैठे अधिवक्ताओं ने मनबढ़ों की गिरफ्तारी होने तक धरने पर बैठे रहने की बात कही है।अधिवक्ताओ का धरना-प्रदर्शन जारी रहा। अधिवक्ताओ के आगे नतमस्तक हुए एसडीएम व तहसीलदार ,तहसील परिसर में गाड़ी छोड़ प्राइवेट वाहन से अपने आवास चले गये। धरने पर बैठने वालों में पीडित अधिवक्ता के साथ प्रिया,लक्ष्मी सिंह, ज्योति सिंह, सोमनाथ, आनंदपाल, रंजीत मिश्रा आदि रहे।

अतीक अहमद के सहयोगी खालिद ज़फर के 75 बीघा ज़मीन पर अवैध प्लाटिंग ध्वस्त

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

प्रयागराज। पूर्व सांसद अतीक अहमद के सहयोगी खालिद जफर

के भीटी असदउल्लापुर में बगैर लेआउट पास कराए लगभग 75 बीघा भूखंड पर अवैध प्लॉटिंग को गुरुवार को ध्वस्त कर दिया गया। प्रयागराज विकास प्राधिकरण ने नगर नियोजन एवं विकास अधिनियम 1973 की धारा 27 (एक) के अंतर्गत कारण बताओ नोटिस तथा धारा 28 (1) के अंतर्गत विकास कार्य रोकने को 20 जुलाई 2021 को नोटिस दिया था। लेकिन जफर ने नोटिस को दरकिनार करते हुए अवैध प्लाटिंग जारी रखी। पीडीए से ले आउट स्वीकृत नहीं कराया। जिसके बाद यह कार्यवाही की गयी । इसके साथ ही अरुण कुमार और दुर्गेश चौहान के 25 बीघा पर बने अवैध प्लाटिंग को भी तोड़ दिया गया ।

नरायनपुर में अम्बेडकर जयंती पर होगा रंगारंग कार्यक्रम

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। विकास खंड लक्ष्मणपुर के नारायनपुर गाँव में 14 अप्रैल को 12से 6 तक अंबेडकर जयंती पर विविध कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।ग्राम प्रधान के प्रतिनिधि शैलेश कुमार ने बताया कि इस समारोह में डॉ0अंबेडकर की जयंती पर झाँकी प्रदर्शन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। विनय कुमार के संयोजन में होने वाले इस समारोह के मुख्य अतिथि सांसद प्रतापगढ़ संगम लाल गुप्ता तथा विशिष्ट अतिथि विधायक विश्वनाथगंज जीत लाल पटेल होंगे।

डॉ0अंबेडकर जयंती पर पहाड़पुर में होगा भव्य समारोह

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। डॉ0भीमराव अंबेडकर की जयंती पर 14 अप्रैल को पहाड़पुर में शाम 4बजे पहाड़ खाँ बाबा स्थल पर एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया है।राजेंद्र प्रसाद यादव ने बताया कि इस समारोह के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक जीतलाल पटेल होंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में मोतीलाल चौधरी और बीएल वर्मा होंगे। अध्यक्षता गिरिजेश कुमार विश्वकर्मा साईं के द्वारा की जाएगी।इस अवसर पर 100 मीटर एवं 200 मीटर की दौड़ एवं लंबी कूद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया है।संचालन का दायित्व शिवकुमार यादव के द्वारा निभाया जाएगा।कार्यक्रम शिव मूर्ति वर्मा के दिशा निर्देशन में आयोजित किया गया है। कार्यक्रम के संयोजक संयोजक लखपति क्रांतिकारी हैं।

मां दुर्गा आ रही आपके द्वार

(आधुनिक समाचार सेवा)
पंडित सुधांशु तिवारी
(श्री राम कथा प्रवक्ता)

नवरात्रि के समय पूरे नौ दिन मां दुर्गा के अलग-अलग स्वरूपों की पूजा की जाती है. कहते हैं इस व्रत को करने से मनोकामना पूरी हो जाती है. इस नवरात्रि कैसे करें मां की अराधना नवरात्रि के समय पूरे नौ दिन मां दुर्गा के अलग-अलग स्वरूपों की पूजा की जाती है. ये त्योहार सालभर में दो बार मनाया जाता है. लेकिन इनमें सबसे प्रमुख चैत्र व शारदीय नवरात्रि है. इस नवरात्र से ग्रीष्म ऋतु की भी शुरुआत हो जाती है. नवरात्रि चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से शुरू हो जाते हैं. जो कि इस

साल 2 अप्रैल 2022 से शुरू हो रहे हैं, जिसका समापन 10 अप्रैल 2022 को होगा. इस बार नवरात्र की विशेष बात ये है कि इस साल किसी भी तिथि का क्षय नहीं हो रहा है. इसलिए इस बार नवरात्रि पूरे नौ दिनों की होगी. हर नवरात्रि में मां दुर्गा अलग-अलग वाहनों पर सवार होकर आती हैं और विदाई के वक्त माता रानी का वाहन अलग होता है. इस चैत्र नवरात्रि में मां दुर्गा घोड़े पर सवार होकर आएंगी. ऐसे में क्या है कलश स्थापना का शुभ मुहूर्त और इसकी स्थापना कैसे की जाए इसकी जानकारी पंडित सुधांशु तिवारी जी ने दी . **कलश स्थापना का शुभ मुहूर्त** चैत्र नवरात्रि के पहले दिन घटस्थापना की जाएगी. घट स्थापना का शुभ मुहूर्त 02 अप्रैल को सुबह 08 बजकर 04 मिनट से 08 बजकर 29 मिनट तक शुभ का चौघडिया रहेगा. कुल अवधि 25 मिनट की है. **घटस्थापना कैसे करें**- 1. नवरात्रि के पहले दिन सुबह जल्दी सनन कर स्वच्छ वस्त्र धारण करे. 2. मंदिर की साफ-सफाई कर गंगा जल से शुद्ध करके पुष्प से मंदिर सजाए. फिर पूजा में सभी देवी - देवताओं को आमंत्रित करें. घटस्थापना करने से पहले भगवान गणेश की आराधना करें. 3. अब मंदिर के नजदीक ही एक बजोट पर लाल रंग का वस्त्र बिछाएं. 4. अब उसके मध्य अक्षत की एक ढेरी बनाए. ढेरी के उपर जल से भरा कलश स्थापित करें. 5. कलश पर स्वास्तिक बनाकर मोली बांधें. कलश में साबुत, सुपारी, सिक्का, हल्दी की गांठ, दूर्वा, अक्षत और आम का पत्ते डालें. 6. एक नारियल लें कर उस पर चुनरी लपेटें और इसे कलश के ऊपर रख दें. 7. अब देवी मां का आवाहन करें. धूप-दीप से कलश की पूजा करें और फिर मां दुर्गा की पूजा करें. मां को भोग लगाए. पूरे परिवार के साथ सुख समृद्धि की कामना करे. **इन राशि वालों के लिए बेहद शुभ हैं चैत्र नवरात्रि** चैत्र नवरात्रि के दौरान 2 बेहद अहम ग्रह राशि बदलने जा रहे हैं. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इन 9 दिनों में शनि और मंगल का मकर राशि में गोचर हो रहा है. यह दोनों ग्रह एक-दूसरे के शत्रु हैं, लिहाजा एक ही राशि में इनका मिलना कई मुश्किलें पैदा करेगा, यह परिवर्तन कर्क, कन्या और धनु राशि वालों के लिए शुभ नहीं रहेगा और उन्हें इस दौरान सतर्क रहना चाहिए. वहीं मेष, मकर और कुंभ राशि वालों के लिए यह बहुत शुभ रहेगा. उन्हें यह समय जमकर लाभ कराएगा. अच्छी खबरें सुनने को मिलेंगी. करियर-कारोबार में तरक्की मिल सकती है. चैत्र नवरात्रि पर हो रहा ग्रहों का बड़ा उलटफेर, इन राशि वालों को होगा तगड़ा फायदा **घोड़े पर सवार हो आ रहीं मां दुर्गा** 2 अप्रैल 2022, शनिवार से चैत्र नवरात्रि शुरू हो रही हैं, जो 11 अप्रैल 2022 तक रहेंगी. इन 9 दिनों में विधि-विधान से मां दुर्गा के रूपों की पूजा करनी चाहिए, इससे घर में सुख-समृद्धि आती है. इस बार मां दुर्गा घोड़े पर सवार होकर आ रही हैं और भैंसे पर प्रस्थान करेंगी. माता की इन सवारी को शुभ नहीं माना जाता है. लेकिन इस बार ग्रहों के उलटफेर ने कुछ राशि वालों के लिए इन नवरात्रि को बेहद खास बना दिया है. चैत्र नवरात्रि पर अपनी राशिनुसार लगाएं माता रानी को भोग, मां अंबे की हमेशा बनी रहेगी कृपा मेष- मेष राशि वालों के लिए जातक स्कंद माता की उपासना करें और रोज दुर्गा सप्तशती या दुर्गा चालीसा का पाठ करें। इसके अलावा मां शैलपुत्री को सफेद चीजों का भोग लगाएं। माता रानी को नारियल चढ़ाएं। **वृषभ**- वृषभ राशि के लोग नवरात्रि में घर में मोर पंख लगाएं। सौभाग्य की प्राप्ति के लिए नवरात्रि के समय माता को मिश्री व पंचामृत का भोग लगाएं। **मिथुन**- नवरात्रि के नौ दिन मां दुर्गा के शक्कर का भोग लगाना शुभ रहेगा। मान्यता है कि इससे धन व वैभव की प्राप्ति होती है। **कर्क**- कर्क राशि वालों को गाय का घी अर्पित करना चाहिए। मान्यता है कि ऐसा करने से भक्त को मां दुर्गा का विशेष आशीर्वाद प्राप्त होता है। **सिंह**- सिंह राशि के जातक माता रानी को मालपुए का भोग लगाएं। मान्यता है कि ऐसा करने से बुद्धि व कौशल का विकास होता है। **कन्या**- कन्या राशि वालों को मां दुर्गा को शक्कर का भोग लगाना चाहिए। इससे धन व वैभव की प्राप्ति होती है। **तुला**- तुला राशि वालों को मिठाई का भोग लगाना चाहिए। मान्यता है कि ऐसा करने से घर में सुख-शांति व खुशहाली आती है। **वृश्चिक**- वृश्चिक राशि वालों को नवरात्रि के दिनों में मां दुर्गा को रोज 1 नारियल चढ़ाना चाहिए। ऐसा करने से मां दुर्गा के प्रसनन होने की मान्यता है। **धनु**- धनु राशि वालों को मां दुर्गा को दूध व उससे बनी चीजों का भोग लगाना चाहिए। ऐसा करने से दुख व भय दूर होते हैं। **मकर**- मकर राशि वालों को नवरात्रि के दिनों में दूध व खीर का भोग लगाना चाहिए। सभी प्रकार के संकटों से मुक्ति मिलने की मान्यता है।**कुंभ**- कुंभ राशि वालों को मां दुर्गा को गुड़ का भोग लगाना चाहिए। ऐसा करने से पापों से मुक्ति मिलने की मान्यता है। **मीन**- मीन राशि वाले मां दुर्गा को खीर या दूध से बनी चीजों का भोग लगाएं। ऐसा करने से घर में खुशहाली आने की मान्यता है।

कोविड-19 से अनाथ हुए बच्चों का प्रदेश सरकार कर रही है भरण-पोषण

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। प्रदेश में कोविड-19 महामारी के कारण अनाथ हुए बच्चों के उनके भरण-पोषण, शिक्षा चिकित्सा आदि की व्यवस्था हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उ0प्र0मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना प्रारम्भ की है शून्य

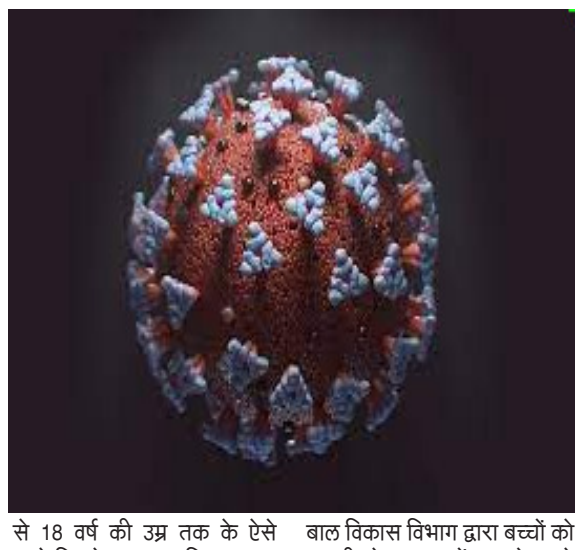

से 18 वर्ष की उम्र तक के ऐसे बच्चे जिनके माता या पिता अथवा दोनों की मृत्यु कोविड-19 के संक्रमण से हो गई है। ऐसे बच्चों को रू0 4000 प्रतिमाह की दर से सरकार द्वारा सहायता दी जा रही है। इस महामारी में कुछ ऐसे बच्चे जो पूर्णतया अनाथ हो गए है, उन्हें बाल कल्याण समिति के आदेश से महिला एवं बाल विकास विभाग के अंतर्गत संचालित बाल्य देखभाल संस्थाओं में आवासित कराया जा रहा है। 11 से 18 वर्ष तक की आयु के बच्चों की कक्षा-12 तक की निःशुल्क शिक्षा हेतु अटल आवासीय विद्यालयों तथा बालिकाओं को कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों में प्रवेश कराया जा रहा है। प्रदेश सरकार अनाथ हुई बालिकाओं के शादी योग्य होने पर शादी हेतु रू0 101000 की राशि भी उपलब्ध करा रही है। ऐसी श्रेणी के अन्तर्गत आने वाले कक्षा-9 या इससे ऊपर की कक्षा में अथवा व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर रहे 18 वर्ष तक के बच्चों को सरकार द्वारा टैबलेट/लैपटॉप भी उपलब्ध कराये जा रहे हैं।प्रदेश में जनपद स्तर पर अनाथ हुए बच्चों को लाभ दिलाने हेतु महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा बच्चों को अपनी देखभाल में रखने वाले अभिभावकों से सम्पर्क कर आवेदन पर भराए जा रहें हैं। अब तक प्रदेश में 9,904 ऐसे बच्चे जिनके माता-पिता दोनों या माता या पिता में से किसी एक की मृत्यु कोविड से हुयी है, को चिन्हित कर लगातार त्रैमासिक रूप में अग्रिम धनराशि प्रेषित करते हुए प्रदेश सरकार इनका भरण-पोषण, शिक्षा, चिकित्सा, बालिकाओं के विवाह आदि पर धनराशि दे रही है प्रदेश सरकार के मुखिया योगी आदित्यनाथ जी ने कोविड-19 के कारण माता-पिता दोनों या किसी एक अथवा अभिभावक को खोने वाले बच्चों के साथ ही अब उन बच्चों को भी हरसंभव मदद पहुॅचाने की योजना शुरू की है जिन्होने कोविड से इतर कारणों से कोरोना काल में अपनों को खोया है। सरकार द्वारा जुलाई 2021 में उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (सामान्य) शुरू की गई है। इस योजना का लाभ बच्चों, किशोरों को प्रदान किये जाने हेतु सरकार द्वारा समस्त जिलाधिकारियों को विस्तृत दिशा-निर्देश जारी कर दिये गये है। इस योजना के अंतर्गत 18 साल से कम उम्र के ऐसे बच्चे जिन्होनें कोरोना से इतर कारणों से पहली मार्च 2020 के बाद माता-पिता दोनों या किसी एक को अथवा अभिभावक को खोया है, उनको प्रतिमाह 2500 रूपये की मदद पहुंचाई जा रही है। इस श्रेणी में आने वाले 18 से 23 साल के युवक/युवती जिन्होंने कक्षा-12 की परीक्षा उत्तीर्ण कर राजकीय डिग्री कालेज, विश्वविद्यालय अथवा तकनीकी संस्थान से सनतक की डिग्री या डिप्लोमा प्राप्त करना चाह रहे हैं, उन्हें लाभान्वित किया जा रहा है। इसके अलावा नीट, जेईई व क्लैट जैसे राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले मेधावी छात्रों को 23 वर्ष की आयु पूरी होने या सनतक शिक्षा अथवा मान्यता प्राप्त तकनीकी संस्थान से डिप्लोमा प्राप्त करने में जो भी पहले हो तक, इस योजना का लाभ दिया जा रहा है। इसमें वह किशोर भी शामिल किये जा रहे हैं जिनकी माता तलाकशुदा या परित्यक्त हैं अथवा जिनके माता-पिता या परिवार का मुख्यकर्ता जेल में हैं। इसके साथ ही बाल श्रम/बाल भिक्षावृत्ति/बाल वेश्यावृत्ति से मुक्त कराकर परिवार/पारिवारिक वातावरण में समायोजित कराये गये या भिक्षावृत्ति/वेश्यावृत्ति में शामिल परिवारों के बच्चों को भी इस योजना में लाभान्वित किया जा रहा है। प्रदेश में इस योजना के अंतर्गत अभी तक कुल 4,946 बच्चों को चिन्हित कर लाभान्वित किया गया है।

कल से नवरात्र शुरू बढ़ गए बाजार के भाव

प्रयागराज। कल दो अप्रैल से नवरात्र शुरू हो रहा है, ऐसे में फल, सिंघाड़े का आटा, ड्राई फ्रूट जैसे सामानों की कीमत में बढ़ोतरी हो गई है। फलों की बात करें तो सेब 80 रुपए से 100 रुपए प्रति किलोग्राम की दर से बिक रहे हैं। ट्रैफिक चौराहे फलों की सैकड़ों अस्थायी दुकानें है यहां तो मनमाने रुपये फलों के बताए जा रहे हैं। अनार 100 से 120 रुपये, संतरा 50 से 70 रुपये किलो तो, केला 40 से 60 रुपये दर्जन में बेचे जा रहे हैं। ग्राहकों के पूछने पर यह बताते हैं कि बड़ी दूर से आया है, बड़ी मुश्किल से मिल रहा है।

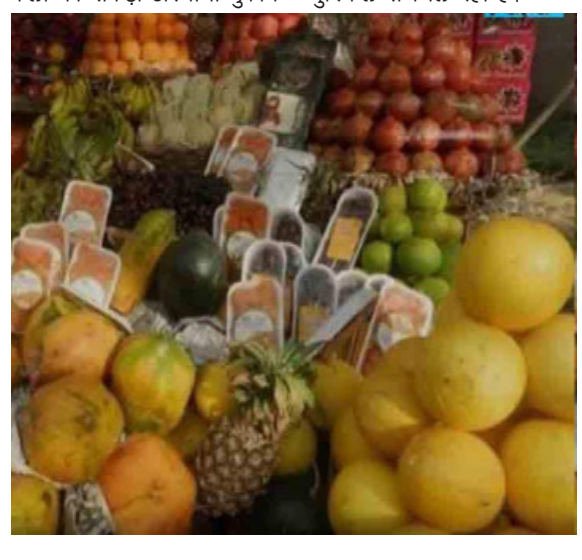

दरगाह शरीफ के मेले में उमड़ी जायरीनों की भीड़

चुनार (मीरजापुर)। चुनार स्थित बाबा कासिम सुलेमानी की दरगाह पर गुरुवार को लगे दूसरे मेले में हजारों अकीदतमंदों ने दरगाह पर चादरपोशी कर दुआएं मांगी। चिलचिलाती धूप के बावजूद जायरीनों का हुजूम दरगाह पर उमड़ पड़ा। पूर्वांचल के विभिन्न जिलों से आए हजारों जायरीनों ने अकीदत के साथ बाबा साहब की दरगाह पर जियारत करते हुए अमन चैन की कामना की। दरगाह शरीफ के चैती मेले में पांच गुरुवार मेला लगेगा। गंगा जमुनी तहजीब की मिसाल इस दरगाह पर पुरुष, महिलाएं, वृद्ध एवं बच्चे सभी ने बाबा की मजार पर सिर झुकाकर सजदा किया। मेले में पूरे दिन रौनक बनी रही। इसमें जनपद के साथ ही भदोही, सोनभद्र, वाराणसी, गाजीपुर, चंदौली, प्रयागराज, जौनपुर आदि स्थानों के जायरीन भारी संख्या में शिरकत करने पहुंचे। मजार पर चादर चढ़ाने के बाद जायरीनों ने बढ़ चढ़कर खरीदारी भी की। मेले में चुनार के बनने वाले बिस्कुटों की लोगों ने जमकर खरीदारी की। बड़े-बड़े झूले बच्चों के आकर्षण का केंद्र थे। शांतिपूर्ण ढंग से मेला संपादित करने के लिए सीओ रामानंद राय व कोतवाल गोपाल प्रसाद गुप्ता की देखरेख में भारी पुलिस व पीएसी बल तैनाती थी। ईओ राजपति बैस के निर्देशन में पालिका प्रशासन ने मेले में पेयजल के लिए टैंकर की व्यवस्था कराई थी।

3438 परीक्षार्थियों ने दी परीक्षा, 280 रहे अनुपस्थित

सोनभद्र। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की हाईस्कूल व इंटरमीडिएट की परीक्षा में गुरुवार को 3438 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। जबकि 280 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ ही परीक्षा को सकुशल संपन्न कराने के लिए तैनात मजिस्ट्रेटों ने परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण किया। जिला विद्यालय निरीक्षक रविशंकर ने बताया कि गुरुवार को प्रथम पाली में हाईस्कूल की कृषि विषय की परीक्षा थी। इसमें 226 परीक्षार्थी पंजीकृत थे, जिसमें से 204 परीक्षार्थी उपस्थित रहे, जबकि 22 परीक्षार्थियों ने परीक्षा छोड़ दी। उधर दूसरी पाली में इंटरमीडिएट की इतिहास विषय की परीक्षा थी। इसमें 3492 परीक्षार्थी पंजीकृत थे, जिसमें से 3234 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी और 258 बच्चों ने परीक्षा छोड़ दी। डीआईओएस ने हंसवाहिनी इंटर कालेज केकराही, कलावती बालिका इंटर कालेज, मोती सिंह इंटर कालेज धौरहरा व बाबा बिहारी इंटर कालेज करमा का निरीक्षण किया। इसी तरह बीएसए ने कई परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण किया। इस दौरान सुरक्षा के कड़े इंतजाम रहे। बुधवार को इंटरमीडिएट का अंग्रेजी विषय का कई जिलों में प्रशनपत्र लीक होने के बाद विभागीय अधिकारी सतर्क रहे। दोनों पालियों में अधिकारियों का परीक्षा केंद्रों पर दौरा होता रहा। कोविड गाइड लाइन के तहत परीक्षार्थियों को परीक्षा केंद्र में प्रवेश दिया गया।

गेहूं खरीद आज से, 67 हजार टन लक्ष्य

सोनभद्र। जिले में गेहूं खरीद शुक्रवार से शुरु हो जाएगी। इसको लेकर तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। जिले में गेहूं खरीद के लिए कुल 45 क्रय केन्द्र बनाए गए है। इन केंद्रों के माध्यम से कुल 67 हजार एमटी गेहूं खरीद का लक्ष्य रखा गया है। लक्ष्य को पूरा करने के लिए खरीद की तिथि 15 जून तक निर्धारित की गई है। जिले में गेहूं खरीद को लेकर क्रय केंद्रों का निर्धारण कर दिया गया है। एक अप्रैल से 15 जून तक चलने वाले गेहूं खरीद के लिए 45 क्रय केंद्र बनाए गए हैं। खाद्य विभाग, पीसीएफ, पीसीयू व भारतीय खाद्य निगम गेहूं की खरीद करेगा। पिछली बार जनपद में 40 गेहूं क्रय केंद्र खोले गए थे। जिला खाद्य एवं विपणन अधिकारी संजय पांडेय ने बताया शासन से इस बार गेहूं खरीद को लेकर 67 हजार टन लक्ष्य निर्धारित किया गया है। बताया कि पिछले वर्ष 1975 रुपये में खरीदे जाने वाले गेहूं का समर्थन मूल्य इस बार 2015 रुपये निर्धारित किया गया है। डिप्टी आरएमओ ने बताया क्रय एजेंसियों को निर्देश दिए गए हैं कि

वह क्रय केंद्र पर किसानों के बैठने व पेयजल की मुकम्मल व्यवस्था कर लें। बताया कि इस बार गेहूं खरीद का लक्ष्य पूरा करने के लिए सबसे अधिक पीसीएफ के केंद्र बनाए गए हैं। पीसीएफ के 18 क्रय केंद्र बनाए गए हैं। इसके बाद दूसरे नंबर पर खाद्य विभाग के 16 व पीसीयू के दस क्रय केंद्र बनाए गए हैं। भारतीय खाद्य निगम का महज एक क्रय केंद्र बनाया गया है। पिछली बार जिले में 63 हजार टन गेहूं की खरीद हुई थी। इस बार गेहूं खरीद का लक्ष्य चार हजार एमटी लक्ष्य बढ़ा कर 67 हजार टन कर दिया गया है।

अवैध खन्न व भंडारण के खिलाफ कार्रवाई

सीखड़ (मीरजापुर)। अवैध गंगा बालू खनन व भंडारण की शिकायत मिलने पर पुलिस व खनन विभाग की टीम ने घमही व सीखड़ में गुरुवार को छापेमारी की। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सीखड़ परिसर में भंडारण किए गए 150 घन फीट बालू सीज कर भंडारण करने वाले एक व्यक्ति के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराया। उपजिलाधिकारी चुनार नीरज प्रसाद पटेल के नेतृत्व में की गई कार्रवाई से इलाके में अफरातफरी मची रही। क्षेत्र के अदलपुरा चौकी क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर रात के अंधेरे में अवैध खनन व परिवहन का कार्य धड़ल्ले से किया जाता है। उपजिलाधिकारी ने कहा कि अवैध खन्न के खिलाफ शिकायत मिलने पर कार्रवाई की जाएगी।

महिला प्रधान ने गरीब प्रेमी युगल की कराई शादी

राजगढ़ (मीरजापुर)। विकास खंड के कोन गढ़वा ग्राम पंचायत के महिला ग्राम प्रधान ने अपने निजी खर्च पर गरीब प्रेमी युगल की शादी धूमधाम से कराकर समाज को संदेश दिया। सोनभद्र जिले के मधुपुर गढ़ई गाड़ गांव निवासी लखंदर कुमार का प्रेम क्षेत्र के गढ़वा गांव निवासी पूजा कुमारी से चल रहा था। महिला ग्राम प्रधान प्रेमी युगल को अपने साथ ग्राम पंचायत कार्यालय पर ले आई। पंचायत के निणय्य के अनुसार दोनों पक्षों के रजामंदी से ग्राम प्रधान रिकी सिंह ने शादी संपन्न कराई। इस दौरान हेमराज सिंह, बबलू कुमार, मनोज कुमार, कमलेश कुमार, नीरज सिंह, शहीद आदि मौजूद रहे।

सैयद अनवर हुसैन को मिला लांग सर्विस मेडल

सोनभद्र। उत्तर प्रदेश भारत स्काउट गाइड की बैठक में सैयद अनवर हुसैन जिला स्काउट शिक्षक सोनभद्र को जनपद में लगातार 10 वर्ष से अधिक समय तक प्रशंसनीय स्काउट सेवा में योगदान के लिए लांग सर्विस मेडल दिया गया है। स्टेट चीफ कमिशन्र डा. प्रभात कुमार ने यह मेडल प्रदान किया। सैयद अनवर हुसैन ने वर्ष 2005 से स्काउटिग शुरू किया, जिसमें विद्यालय के बच्चों के साथ सेवा कार्य भीषण गर्मी के दिनों में निश्शुल्क पेयजल व्यवस्था का संचालन, विभिन्न मेलों में सेवा कार्य, विद्यालय के बच्चों को तैयारी करा कर जनपद स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक की स्काउट प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग कराते

रहें। अनवर ने बताया कि 29 दिसंबर से 4 जनवरी तक मैसूर कर्नाटक में आयोजित राष्ट्रीय जंबूरी में बच्चों के साथ प्रतिभाग किये। उनके नेतृत्व में स्काउट के बच्चों को राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। जनपद में विभिन्न विद्यालयों में बच्चों व अध्यापकों को प्रशिक्षण देते रहे हैं। वैश्विक महामारी कोविड-19 में जनपद में स्काउट की पूरी टीम को साथ लेकर मास्क निर्माण और जरूरतमंदों को वितरण कराते रहें। इस अवसर पर जनपद सोनभद्र के मुख्यायुक्त डा. प्रबोध कुमार, जिला सचिव काली प्रसाद मौर्य, जिला कोषाध्यक्ष अब्दुल कयूम अहमद व जनपद के अन्य पदाधिकारियों ने हर्ष जताया है।

एक क्विंटल गांजा बरामद चार आरोपित भेजे गए जेल

अहरौरा (मीरजापुर)। एसटीएफ प्रयागराज की टीम ने मार्शल जीप व कार में छिपाकर तस्करी करने ले जा रहे करीब एक क्विंटल गांजा गुरुवार को बरामद किया। अहरौरा के चितविश्राम तिराहे से चार आरोपितों को गिरफ्तार किया गया है। तस्कर आजमगढ़ स्थित एक भांग की दुकान पर गांजा की सप्लाई करने जा रहे थे। सभी से पूछताछ के बाद जेल भेज दिया गया। एसटीएफ प्रयागराज को सूचना मिली थी कि कुछ तस्कर मार्शल जीप व एक कार से उड़ीसा प्रांत से गांजा लादकर आजमगढ़ ले जाने की फिराक में हैं। जानकारी होते ही एसटीएफ के वेद प्रकाश, अनिल कुमार थानाध्यक्ष अहरौरा संजय सिंह के साथ चित्त विश्राम तिराहे पर वाहनों की जांच करने पहुंचे। इसी बीच सोनभद्र की ओर से आ रही मार्शल जीप व कार को रोक लिया। वाहनों की तलाशी कराई तो दोनों वाहनों से करीब एक क्विंटल गांजा बरामद हुआ। एसटीएफ ने पुलिस की मदद से चारों आरोपितों गणेश चौबे पुत्र रामेश्वर चौबे निवासी चकधनावा थाना कप्तानगंज जनपद आजमगढ़ वर्तमान पता रघुराज स्टेडियम के पीछे इमलीपारा बिलासपुर छत्तीसगढ़, मनोज पांडेय पुत्र स्व. जगदंबा प्रसाद पांडेय निवासी इंद्रलोक कालोनी शहजादपुर थाना अकबरपुर, जनपद अंबेडकर नगर, अजय यादव पुत्र बालचन्द निवासी चक लालचन्द्र, थाना जीयनपुर आजमगढ़ ,कृष्ण कुमार साहू पुत्र नारायण प्रसाद साहू निवासी किरारी थाना मस्तूरी बिलासपुर छत्तीसगढ़ को गिरफ्तार कर लिया। गणेश गांजा तस्करों का सरगना गांजा तस्करी का कार्य आरोपित गणेश चौबे विगत कई वर्षों से कर रहा है। आजमगढ़ के थाना बिलरियागंज के भीमवर कस्बा में उसकी भांग की दुकान है। शुरुआत में भांग की दुकान पर छोटी मात्रा में गांजा बेचने की शुरुआत की। इस दौरान उसकी मुलाकात बिहार निवासी बाबू सिंह से हो गई जिसके साथ मिलकर वह उड़ीसा के नवरंगपुर निवासी राहुल व दादा नामक बड़े गांजा तस्करों के संपर्क में आ गया और बड़े पैमाने पर गांजा तस्करी शुरू कर दिया। एसटीएफ और पुलिस ने दो अन्य को भी आरोपित बनाया है। तीन हजार में खरीदकर दस हजार रुपए प्रति किलो बेचता था उड़ीसा में गांजा तीन हजार रुपये किलो के हिसाब से खरीदकर उसे पूर्वांचल में दस हजार रुपये प्रतिकिलो के हिसाब से बेचा जाता था। एक बार में पांच से सात लाख रुपये की कमाई हो जाती थी। आरोपित गणेश चौबे ने बताया कि पैसे के लालच में वह यह काम करता था।

बंजारी पश्चिमी वनक्षेत्र तक पहुंची पहाड़ से उठी आग की लपटें

ड्रमंडगंज (मीरजापुर)। स्थानीय क्षेत्र के बबुरा रघुनाथ सिंह वन क्षेत्र स्थित करनपुर पहाड़ में तीन दिनों से लगी आग अभी तक बुझने का नाम नहीं ले रही है। तेज हवाओं के झोंके से पहाड़ों पर लगी आग तकरीबन तीन किमी के दायरे में जगह- जगह फैलकर हरे-भरे जंगलों को राख कर रही है। बुधवार को वनविभाग की टीम आग बुझाने में जुटी रही लेकिन तेज हवाओं के चलते आग पर काबू नहीं पाया जा सका है। तीन दिनों से धधक रही करनपुर जंगल से उठी आग की लपटें बंजारी पश्चिमी वनक्षेत्र के कैमूर पहाड़ तक पहुंच गई। इसके विभिन्न हिस्सों में फैली आग तकरीबन पांच किलोमीटर के दायरे में जगह-जगह जंगलों को राख कर रही है। जंगल के कई हिस्सों में लगी आग के विकराल रूप को देख वन विभाग के भी होश उड़ गए है। बुधवार रात ड्रमंडगंज वनरेंज के जंगलों में पहाड़ की चोटियों पर फैली आग अगल-बगल के गांवों में दूर से ही दिखाई पड़ रही थी। करीब एक हजार फीट से भी ऊंची पहाड़ की चोटियों पर फैली आग को बुझाने में वनकर्मियों के भी पसीने छूट रहे हैं। अगलगी के चलते जंगली जानवरों के अस्तित्व पर भी खतरा मंडराने लगा है। रेंजर ड्रमंडगंज वीरेंद्र कुमार तिवारी ने बताया कि तेज हवाओं के कारण जंगल में लगी आग कई हिस्सों में फैल गई है। आग बुझाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, हालांकि लगातार प्रयास जारी है। जल्द ही आग पर काबू पा लिया जाएगा।

फरार चल रहे आरोपित की संपत्ति होगी कुर्क नोटिस चस्पा.....

चुनार (मीरजापुर)। कोतवाली अंतर्गत शिवशंकरी धाम मंदिर में सोए अधेड़ की गत दिनों हत्या कर दी गई थी। इस मामले में फरार चल रहे आरोपित के खिलाफ न्यायालय के निर्देश पर धारा 82 की कार्रवाई कर नोटिस चस्पा किया। कोतवाल गोपाल प्रसाद गुप्ता ने बताया कि नवंबर महीने में हुई घटना के बाद से आरोपित प्रशांत उर्फ छोटू पटेल पुत्र पप्पू पटेल निवासी नियामतपुर कला थाना अदलहाट फरार चल रहा है। उसके खिलाफ न्यायालय के निर्देश पर गैर जमानती वारंट जारी किया गया था। इसके अनुपालन में आरोपित के घर पर कई बार दबिश दी गई परंतु आरोपित फरार रहा। मामले में न्यायालय के निर्देश पर आरोपित के घर व पंचायत भवन पर 82 सीआरपीसी के तहत नोटिस चस्पा कराने के साथ ही डुगडुगी पिटवाई गई। मुनादी भी कराई गई। इसके बाद आरोपित के हाजिर न होने पर न्यायालय के आदेश पर कुर्की की कार्रवाई की जाएगी।

सोनभद्र के DM को सस्पेंड किया गया

सोनभद्र। DM सोनभद्र टी के शिबू भ्रस्टाचार के मामले में सस्पेंड। खनन मामले में शिकायत पर सस्पेंड हुए डीएम, भ्रष्टाचार की शिकायतों के मामले में जनप्रतिनिधियों ने की थी शिकायत। विधानसभा चुनाव के समय लापरवाही का भी मामला आया है सामने।

कुल देवता सन्त बाबा गणिनाथ जी की याद में अखिल भारतीय मद्धेशिया (कान्दू हलवाई)वैश्य सभा का होली मिलन समारोह

(आधुनिक समाचार सेवा)
अश्विनी कुमार ठाकुर

सोनभद्र। कल दिनांक 31मार्च 2022 को बैजनाथ मद्धेशिया जिला अध्यक्ष अखिल भारतीय मध्य देशीय वैश्य सभा सोनभद्र के अध्यक्षता में रेणुकूट नगर अध्यक्ष प्रभात मोहन गुप्ता जी के अथक

प्रयास से अखिल भारतीय मद्धेशिया (कान्दू हलवाई)वैश्य सभा ने पिंपरी नगर पंचायत कल्याण मंडप में भव्य होली मिलन समारोह मनाया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री के श्रीमान राजाराम गुप्ता जी विशिष्ट अतिथि श्री ओमकार केसरी एवं बलिया से चलकर आए पूर्व चेयरमैन लक्ष्मण मद्धेशिया जी श्रीमान गिरीश चंद्र मद्धेशिया प्रदेश महामंत्री जी बीएन गुप्ता जी मनीष गुप्ता युवा प्रदेश अध्यक्ष उत्तर प्रदेश रेनुकोट नगर पंचायत चेयर मैन श्रीमती निशा सिंह ,दिग्विजय सिंह पिपरी चेयर मैन ,बी एन गुप्ता काशी पिछड़ा प्रकोष्ठ मंत्री बीजेपी, कार्यक्रम का शुरुआत बाबा गणिनाथ जी की पूजन और आरती से प्रारंभ हुआ इसके बाद ध्वज फहराया गया सभी लोग आपस में अबीर गुलाल लगाकर के गले मिलते हुए और रंगारंग कार्यक्रम का आनंद लिया इस कार्यक्रम में जिले से सभी नगर के बरीष्ठ एम् युवा की सभी पदाधिकारी व स्वजातीय जनप्रतिनिधि मातृ शक्ति ने बढ़चढ़ कर भाग लिया कार्यक्रम में मुख्य रूप से कमलेश मोहन गुप्ता ,अनिल गुप्ता,दुद्धी से शक्तिनगर से मोहन गुप्ता जी जिला उपाध्यक्ष, अशोक कुमार गुप्ता ,मनोज कान्दू युवा जिला उपाध्यक्ष अनपरा,अशोक कुमार गुप्ता रामबिलास गुप्ता रेनुसागर,राकेश कुमार एडवोकेट नंदकिशोर गुप्ता जी पत्रकार विंधमगंज जिला उपाध्यक्ष बृज किशोर गुप्ता, जिला मंत्री अजय कुमार गुप्ता , बबलू शाह, अनूप गुप्ता विजय गुप्ता रेनुकोट, राजू कुमार युवा जिला अध्यक्ष मनोज गुप्ता जी गाजीपुर से सभी लोगो का जिला अध्यक्ष जी ने आभार व्यक्त करते हुए सभी को होली एवं हिन्दू नव वर्ष कि बधाई दी

सेमेस्टर परीक्षा में नकल करते पकड़े गए बीबीए के दो छात्र

मीरजापुर। नगर के केबी कालेज में आंतरिक उड़ाका दल ने सेमेस्टर परीक्षा के दौरान बीबीए के दो छात्रों को गुरुवार को नकल करते पकड़ा। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी की परीक्षाएं चल रही हैं। इसके लिए केबी कालेज, जीडी बिनानी व केएम कालेज को परीक्षा केंद्र बनाया गया है। आंतरिक सचल दल की सक्रियता के चलते नकल पर प्रभावी अंकुश लग रहा है। सेमेस्टर परीक्षाएं जिले के कई केंद्रों पर चल रही हैं। गुरुवार को प्रथम पाली में केबीपीजी कालेज, एसएसपीडी तिसुही, स्वामी गोविंदाश्रम सनतकोत्तर महाविद्यालय पैडापुर, राम खेलावन पीजी कालेज कलवारी एवं एसके महिला पीजी कालेज में परीक्षाएं चल रहीं थीं। बीएड तृतीय सेमेस्टर के 193 व मध्यकालीन इतिहास 49, अंग्रेजी 137, हिंदी

151, प्राचीन इतिहास 48 एवं संस्कृत के परीक्षार्थी समिल्लित हुए। घनश्याम बिनानी मैनेजमेंट कालेज के बीबीए तृतीय सेमेस्टर के कुल 62 परीक्षार्थी सम्मिलित हुए। परीक्षा में प्राचार्य डा. अशोक कुमार सिंह, डा अनिल कुमार सिंह एवं आंतरिक उड़ाका दल संयोजक डा. शशांक शेखर द्विवेदी ने बीबीए तृतीय वर्ष के सेमेस्टर के दो परीक्षार्थियों को अनुचित साधन प्रयोग में (नकल) पकड़ा। दल में डा. करनैल सिंह, डा. प्रतिमा भारतीय, डा. राजेश कुमार यादव, डा. अनिल कुमार पांडेय, डा. रीता सिंह एवं डा. धनाजय सिह आदि रहे। जीडी बिनानी कालेज में प्राचार्य डा. बीना देवी सिंह के निर्देशन में बीएड व एम.काम प्रथम वर्ष की सेमेस्टर परीक्षाएं हुई। परीक्षा प्रभारी डा. मदन कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि बीएड परीक्षा में पंजीकृत 67 परीक्षार्थी सम्मिलित हुए। वहीं एम.काम प्रथम सेमेस्टर में पंजीकृत 82 में से 79 ने परीक्षा दी जबकि तीन ने छोड़ दी। डीएम व एसपी ने केंद्रों का किया निरीक्षण जिलाधिकारी प्रवीण कुमार लक्ष्कार व एसपी अजय कुमार सिंह ने यूपी बोर्ड परीक्षा के केंद्रों का गुरुवार को निरीक्षण किया। जनपद के आर्य कन्या बालिका इंटर कालेज, माता प्रसाद माता भीख इंटर कालेज व राजस्थान इंटर कालेज में निरीक्षण किया। परीक्षा हाल में लगे सीसी टीवी व सील बंद पेपर के रखरखाव का निरीक्षण किया। स्व. काशीराम राजकीय बालिका इंटर कालेज की प्रधानाचार्या अनिता यादव ने परीक्षा के बाबत जानकारी दी। पहली पाली में कृषि विषय में पंजीकृत 227 में से 221 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी, जबकि छह ने छोड़ दिया।

सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने वाले को समाज करता है अभिनंदन

अनपरा (सोनभद्र)। ककरी परियोजना स्थित सरस्वती शिशु मंदिर में गुरुवार को एक समारोह का आयोजन कर परीक्षाफल वितरण किया गया। शुभारंभ मुख्य अतिथि कार्मिक प्रबंधक एनसीएल ककरी अभय सिंह ने मां सरस्वती के चित्र के समक्ष द्वीप प्रज्वलित कर किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य अशोक कुमार उपाध्याय ने कहा कि परीक्षा जीवन में सतत चलती रहती है। जिनमें साहस, वीरता, बुद्धि, पराक्रम की परीक्षाएं समय-समय पर मार्ग में अवरोध उत्पन्न करती हैं। लेकिन श्रेष्ठ पुरुष वह है जो उसका सफलता पूर्वक सामना करके सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त करता है। समाज उसी का अभिनंदन करता है। विद्यालय के चैपियनशिप में प्राथमिक स्तर पर प्रथम स्थान छात्रा आज्ञा, पूर्व प्राथमिक स्तर पर कुशाग्र, शिशु वाटिका स्तर पर कार्तिकेय ने सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। इनके अभिभावकों को भी सम्मानित किया गया। जयराम शुक्ला ने परीक्षा का वार्षिक वृत्त निवेदन किया। परीक्षाफल शत-प्रतिशत उत्तीर्ण रहा। संचालन अजीत कुमार त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुती सराहनीय रही। ग्राम प्रधान बांसी आरती केसरी और लालसाराम ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्द्धन किया। आभार ज्ञापन राजेंद्र प्रसाद गुप्ता ने करते हुए शुभकामनाएं दी। अध्यक्षता अरुण कुमार पाठक ने किया। इस अवसर पर मातृ भारती की अध्यक्ष लक्ष्मी सिंह, नीलम चौबे समेत तमाम अभिभावक उपस्थित रहे।

इस बल्लेबाज का आरेंज कैप पर है कब्जा, पहले ही मैच में खेली धमाकेदार पारी

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग के 15वें सीजन की शुरुआत हो चुकी है। सभी टीमों ने अपने एक एक मैच खेल लिए हैं। टूर्नामेंट की शुरुआत से साथ ही शुरू हो चुकी है बल्लेबाजों के बीच रनों ही जंग। पहले ही मैच में मुंबई इंडियंस के इशान किशन ने तूफानी पारी खेली तो बैंगलोर और राजस्थान के कप्तान ने भी जड़ी हाफ सेंचुरी। इसी के साथ आरेंज कैप की रेस भी हो चुकी है शुरू। अब टूर्नामेंट के दौरान यह कैप एक से दूसरा सिर बदलती रहेगी। पहले 7 मैच के बाद अगर सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों पर नजर डालें तो यहां पहले स्थान पर आरसीबी के कप्तान फाफ डु प्लेसिस नजर आते हैं। इस खिलाड़ी ने धीमी शुरुआत के बाद पंजाब के खिलाफ ताबड़तोड़ 88 रन बना डाले। हालांकि दूसरे मैच में कोलकाता के खिलाफ वह मजह 5 रन ही बना पाए लेकिन 93 रन के साथ वह टाप पर बने हुए हैं। दूसरे नंबर पर इस सीजन के मेगा आक्शन में सबसे महंगे बिके मुंबई के इशान किशन का नाम है। भले ही उनकी टीम ने पहला मुकाबला गंवा दिया लेकिन दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ उनकी पारी लाजवाब रही। इस बल्लेबाज के खाते में 81 रन है जिसमें उन्होंने 11 चौके और

2 छक्के लगाए हैं। उनका स्ट्राइक रेट 168 का रहा है। तीसरे नंबर पर सीएसके के बल्लेबाज राबिन उथप्पा हैं जिन्होंने लखनऊ के खिलाफ 50 रन की पारी खेली। वे 71 रनों के साथ तीसरे नंबर पर हैं। इस सूची में लखनऊ के युवा बल्लेबाज आयुष बदोनी चौथे नंबर पर हैं। उनके नाम 73 रन हैं जबकि 5वें नंबर पर उन्ही के टीम के दीपक हुड्डा हैं जिनके नाम 68 रन हैं। दीपक ने गुजरात के खिलाफ पहले मुकाबले में 55 गेंद पर 6 चौके और 2 छक्के जमाते हुए 55 रन की पारी खेली थी। जैसे-जैसे मुकाबले आगे बढ़ेंगे इस सूची में लगातार बदलाव होता जाएगा।

पंजाब किंग्स में है दम लेकिन केकेआर से मिल सकती है कड़ी टक्कर

मुंबई। अब तक एक बार भी आइपीएल का खिताब नहीं जीत सकी पंजाब किंग्स इस बार मजबूत नजर आ रही है। आरसीबी को पहले मुकाबले में हराने वाली पंजाब किंग्स ने 200 से ज्यादा रनों के लक्ष्य का पीछा किया था। हालांकि उनकी गेंदबाजी अपेक्षाकृत कमजोर नजर आई। राहत की बात यह है कि उनके दक्षिण अफ्रीकी तेज गेंदबाज कैगिसो रबादा का तीन दिवसीय क्वारंटाइन पूरा हो गया और ऐसे में उनके खेलने की उम्मीद है। इससे कोलकाता नाइटराइडर्स (केकेआर) के खिलाफ शुक्रवार को होने वाला मुकाबला तगड़ा होने की उम्मीद है। वहीं पिछले मैच में केकेआर को रायल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) से तीन विकेट की हार मिली थी, लेकिन उसके गेंदबाजों ने बाद में बेहतर प्रदर्शन किया। पंजाब की बल्लेबाजी है मजबूत : पंजाब के लिए काफी कुछ उसके शीर्ष तीन खिलाड़ियों कप्तान मयंक अग्रवाल, शिखर धवन और श्रीलंकाई भानुका राजपक्षे पर निर्भर होगा। राजपक्षे ने आरसीबी के खिलाफ मैच में विजयी पारी खेली थी। मध्यक्रम में ओडियन स्मिथ और शाह रुख खान ने आरसीबी के खिलाफ अपनी कमाल की बल्लेबाजी की थी। अंडर-19 विश्व कप स्टार राज बावा को एक और मौका मिल सकता है। रबादा के आने पर हरप्रीत बरार, संदीप शर्मा और अर्शदीप सिंह में से किसी एक को बाहर का रास्ता दिखाया जा सकता है।' आउट हो गए। रहाणे को मजबूत शुरुआत करनी होगी। श्रेयस अय्यर फिर से वापसी करने में सक्षम है। इन दोनों के अलावा मध्यक्रम की जिम्मेदारी सैम बिलिंग्स, शेल्डन जैक्सन और 'बिग हिटर' आंद्रे रसेल के कंधों पर होगी। केकेआर के लाइनअप में ऐसे बल्लेबाज है जो किसी भी आक्रमण की धज्जियां उड़ा सकते है और टीम प्रबंधन उम्मीद करेगा कि पंजाब के खिलाफ ये सभी एकजुट होकर प्रदर्शन करें। गेंदबाजी की बात करें तो तेज गेंदबाज उमेश यादव दोनों मैचों में नई गेंद से शानदार रहे। न्यूजीलैंड के अनुभवी गेंदबाज टिम साउथी को भी अहम भूमिका निभानी होगी। कोलकाता के लिए चिंता का विषय स्पिनर वरुण चक्रवर्ती की फार्म है।कोलकाता नाइटराइडर्स : श्रेयस अय्यर (कप्तान), अमन खान, अशोक शर्मा, सैम बिलिंग्स, पैट कमिंस, आरोन फिंच, बाबा इंद्रजीत, वेंकटेश अय्यर, शेल्डन जैकसन, चमिका करुणारतने, मुहम्मद नबी, सुनील नरेन, प्रथम सिंह, अजिंक्य रहाणे, रमेश कुमार, नीतीश राणा, राशिख सलाम, अनुकूल राय, आंद्रे रसेल, शिवम मावी, रिंकू सिंह, टिम साउथी, अभिजीत तोमर, वरुण चक्रवर्ती, उमेश यादव।

पंजाब और कोलकाता के बीच होने वाले मैच का लेना चाहते हैं आनंद तो अपनाएं ये तरीका

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग का 8वां मैच कोलकाता और पंजाब किंग्स के बीच खेला जाएगा। एक तरफ जहां पहला मैच जीतकर पंजाब टीम के हौंसले बुलंद है तो वहीं कोलकाता को दो मैचों में से एक में जीत तो दूसरे मैच में हार का सामना करना पड़ा है। पिछले मैच में आंद्रे रसेल के बारे में कोच ने कहा था कि उनके कंधे में दर्द था और वो सौ प्रतिशत फिट नहीं थे ऐसे में इस मैच में वो अंतिम ग्यारह में रहते है या नहीं इस पर सस्पेंस बना हुआ है। दूसरी तरफ मयंक अग्रवाल के नेतृत्व में पंजाब की टीम ने पिछले मैच में आरसीबी के खिलाफ 200 से ज्यादा का स्कोर सफलतापूर्वक चेज किया था। उस मैच में ओडियन स्मिथ ने अपना पावर दिखया था टीम की खास बात ये है कि ओपेनिंग में एक तरफ शिखर धवन और मयंक की जोड़ी है तो वहीं दूसरी तरफ लियाम लिविंगस्टोन और ओडियन स्मिथ जैसे खतरनाक फिनिशर हैं जो कभी भी मैच का रुख पलट सकते है। यदि आप भी इस मैच को लाइव देखने की योजना बना रहे हैं तो आइए मैच से जुड़ी कुछ अहम बातों को जान लेते हैं।

कहां खेला जाएगा पंजाब किंग्स और कोलकाता नाइटराइडर्स के बीच ये मैच पंजाब किंग्स और कोलकाता नाइटराइडर्स के बीच ये मैच वानखेड़े स्टेडियम में खेला जाएगा। कितने बजे शुरू होगा पंजाब किंग्स और कोलकाता नाइटराइडर्स के बीच ये मैच पंजाब किंग्स और कोलकाता नाइटराइडर्स के बीच ये मैच शाम 7.30 बजे शुरू होगा। कितने बजे होगा पंजाब किंग्स और कोलकाता नाइटराइडर्स के बीच इस मैच का टास पंजाब किंग्स और कोलकाता नाइटराइडर्स के बीच इस मैच का टास शाम 7 बजे होगा। पंजाब किंग्स और कोलकाता नाइटराइडर्स के बीच इस मैच को कहां देख सकते हैं पंजाब किंग्स और कोलकाता नाइटराइडर्स के बीच इस मैच को स्टार स्पोर्ट्स के नेटवर्क या हाटस्टार पर देख सकते हैं। इसके अलावा इस मैच से जुड़ी हर खबर को आप आप दैनिक जागरण की वेबसाइट पढ़ सकते हैं। 2022: आइपीएल के एक सीजन में पहली बार सीएसके को लगातार पहले दो मैचों में मिली हार।

कोलकाता के सामने ये हो सकती है पंजाब की प्लेइंग इलेवन, इस गेंदबाज पर होगी सबकी नजर

नई दिल्ली। वानखेड़े के स्टेडियम पर जब मयंक अग्रवाल की टीम अपने दूसरे मैच में कोलकाता के सामने उतरेगी तो उसके सामने अपने जीत के सिलसिले को बरकरार रखने की चुनौती होगी। पहले मैच में पंजाब की गेंदबाजी चिंता का सबब बनी थी जब आरसीबी के बल्लेबाजों ने 200 से ज्यादा का स्कोर खड़ा किया था लेकिन इस मैच में पंजाब की ये कमी भी कगिसो रवाडा के आने से दूर हो जाएगी। रवाडा के आने से पंजाब की गेंदबाजी लाइनअप और भी खतरनाक हो जाएगी। पंजाब की ओपनिंग जोड़ी- पंजाब की ओपनिंग जोड़ी की बात करें तो टीम के पास मयंक अग्रवाल और शिखर धवन के रूप में दो बेहतरीन बल्लेबाजा हैं जो टीम को अच्छी शुरुआत दिला सकते हैं। पिछले मैच में भी दोनों ने पहले विकेट के लिए 71 रन की महत्वपूर्ण साझेदारी की थी

मध्यक्रम में पंजाब- पंजाब की ताकत उसकी मध्यक्रम की बल्लेबाजी है। टीम में लियाम लिविंगस्टोन, भानुका राजपक्षे, ओडियन स्मिथ और शाहरुख खान जैसे बल्लेबाज हैं जिन्होंने पहले मैच में पंजाब के लिए बेहतरीन बल्लेबाजी का प्रदर्शन किया था। पिछले मैच में ओडियन स्मिथ ने 8 गेंदों पर 25 रन की पारी खेलकर पंजाब को जीत दिलाई थी। गेंदबाजी में पंजाब- कगिसो रवाडा के आने से पंजाब की गेंदबाजी बेहद मजबूत हो जाएगी। टीम में पहले से ही अर्शदीप सिंह के रूप में एक युवा गेंदबाज है जो डेथ ओवर में अच्छी गेंदबाजी करता है। रवाडा के आने से पंजाब की गेंदबाजी अपनी उस कमी को पूरी कर लेगा जो पिछले मैच में दिखाई पड़ी थी और आरसीबी ने 200 से ज्यादा का स्कोर खड़ा कर लिया था। स्पिन गेंदबाजी के तौर पर टीम के पास राहुल चाहर के रूप में अच्छा विकल्प है। मयंक अग्रवाल (कप्तान), शिखर धवन, लियाम लिविंगस्टोन, भानुका राजपक्षे (विकेटकीपर), शाहरुख खान, ओडियन स्मिथ, राज बावा, अर्शदीप सिंह, कगिसो रवाडा, संदीप शर्मा, राहुल चाहर।

दो बल्लेबाजों ने एक ही मैच में बनाया वर्ल्ड रिकार्ड, पाकिस्तान ने आस्ट्रेलिया पर दर्ज की सबसे बड़ी जीत

नई दिल्ली। आस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों के पहले वनडे में हार के बाद पिछड़ी पाकिस्तान ने जोरदार वापसी की। गुरुवार को खेले गए दूसरे वनडे में मेजबान ने वनडे इतिहास की अपनी सबसे बड़ी जीत दर्ज की। पहले बल्लेबाजी करते हुए आस्ट्रेलिया ने 8 विकेट पर 348 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया था। पाकिस्तान ने इमाम उल हक और कप्तान बाबर आजम के शतक के दम पर 49 ओवर में 4 विकेट पर 352 रन बनाकर मुकाबला अपने नाम किया। इस जीत के साथ ही टीम ने सीरीज में 1-1 की बराबरी भी हासिल कर ली पाकिस्तान के कप्तान बाबर ने आस्ट्रेलिया के खिलाफ दूसरे वनडे में टास जीतकर पहले गेंदबाजी चुनी। आस्ट्रेलिया की शुरुआत खराब रही और कप्तान आरोन फिंच बिना खाता खोले वापस लौट गए। इसके बाद ट्रेविस हेड और बेन मेकडरमोट ने दमदार बल्लेबाजी करते हुए टीम के बड़े स्कोर की नींव रखी। हेड 89 रन बनाकर आउट हुए जबकि बेन ने 104 रन की पारी खेली। मार्नस लाबुशाने ने 59 जबकि मार्कस स्टोइनिस ने 49 रन की तेज पारी खेली। ओपनर इमान ने आस्ट्रेलिया के खिलाफ दूसरे वनडे में शानदार बल्लेबाजी करते हुए दमदार शतक जमाया। यह उनके वनडे करियर का नौवां शतक था जो 48वीं पारी में आया। इसी के साथ सबसे कम पारी में 9 वनडे शतक बनाने के साउथ अफ्रीका के दिग्गज हाशिम अमला के रिकार्ड को इमाम ने तोड़ा डाला। 97 गेंद पर 6 चौके और 3 छक्के की मदद के 106 रन की पारी खेलकर इमाम आउट हुए। पाकिस्तान के कप्तान बाबर ने इस मैच में 114 रन की पारी खेली और अपने करियर का 15वां वनडे शतक जमाया। इस शतकीय पारी के दम पर वह सबसे कम पारी में ऐसा करने वाले बल्लेबाज बने। बाबर ने 83वीं पारी में यह मुकाम हासिल किया और अमला के 86 पारी में 15 वनडे शतक के वर्ल्ड रिकार्ड को अपने नाम कर लिया। गुरुवार को आस्ट्रेलिया के खिलाफ 348 रन का पीछा कर जीत हासिल कर पाकिस्तान ने लक्ष्य का पीछा करते हुए अपनी सबसे बड़ी जीत दर्ज की। इससे पहले पाकिस्तान की टीम ने 2014 में बांग्लादेश के खिलाफ 329 रन के लक्ष्य का पीछा कर जीत हासिल की थी। भारत के खिलाफ मोहाली में 2007 में पाकिस्तान ने 322 रन का पीछा कर जीत दर्ज की थी जो उसकी तीसरी सबसे बड़ी जीत है।

एमएस धौनी ने खेली एक और तेज पारी

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग के 15वें सीजन के सातवें मुकाबले में चेन्नई सुपर किंग्स के साथ लखनऊ सुपर जायंट्स के साथ हुआ। पहले मैच में नाकाम बल्लेबाजी की वजह से आलोचना झेलने वाली चेन्नई की टीम ने धमाकेदार प्रदर्शन करते हुए 210 रन का स्कोर खड़ा कर डाला। इस मैच में एक बार फिर से महेंद्र सिंह धौनी के बल्ले का जोर देखने को मिला। चेन्नई के पूर्व कप्तान धौनी इस सीजन में पूरे रंग में नजर आ रहे हैं। पहले मैच में धमाकेदार अर्धशतकीय पारी खेलने के बाद दूसरे मैच में भी वह कमाल बल्लेबाजी करते दिखे। मैच फिनिश करने पहुंचे धौनी ने भले ही मजह 6 गेंद खेला लेकिन इस दौरान 16 रन बना डाले। इस धुरंधर खिलाड़ी आते ही पहली गेंद पर छक्का जमाया। 16 रन की पारी में धौनी के बल्ले से दो चौके भी निकले। इस दौरान वह टी20 क्रिकेट में 7 हजार रन बनाने वाले भी बल्लेबाज बने।लखनऊ के खिलाफ मैच से पहले धौनी के खाते में कुल 6985 रन थे। 7 हजार के आंकड़े तक पहुंचने के लिए उनको 15 रन की जरूरत थी और उन्होंने 16 रन जोड़े और इस खास लिस्ट में जगह बनाई।

आइपीएल के एक सीजन में पहली बार सीएसके को लगातार पहले दो मैचों में मिली हार

नई दिल्ली। आइपीएल 2022 में सीएसके ने अब तक दो लीग मैच खेले हैं, लेकिन रवींद्र जडेजा की कप्तानी में इस टीम को जीत नहीं मिली। ऐसा नहीं है कि सीएसके ने दूसरे मैच में पंजाब किंग्स के खिलाफ अच्छा स्कोर नहीं बनाया। लखनऊ के खिलाफ चेन्नई ने काफी अच्छी बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 7 विकेट पर 210 रन बनाए, लेकिन अपने इस स्कोर को डिफेंड करने में जडेजा की टीम कामयाब नहीं हो पाई। लखनऊ ने 19.3 ओवर में 4 विकेट पर 211 रन बनाते हुए मैच में 6 विकेट से जीत दर्ज कर ली। आइपीएल इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ जब सीएसके को किसी एक सीजन में पहले ही दो मैचों में लगातार हार का सामना करना पड़ा। इस सीजन में सीएसके ने अपना पहला मुकाबला केकेआर के खिलाफ 6 विकेट से हार गई थी और अब लखनऊ सुपर जाइंट्स ने इस टीम को 6 विकेट से ही हरा दिया। लखनऊ ने 211 रन के टारगेट को चेज कर लिया और आइपीएल इतिहास में वो चौथा सबसे बड़ा स्कोर चेज करने वाली टीम भी बनी। वहीं आइपीएल में ये तीसरा मौका था जब सीएसके ने 200 से ज्यादा रन बनाए, लेकिन इस स्कोर को डिफेंड करने में कामयाब नहीं हो पाई। इसके अलावा आइपीएल में ये 20वां मौका था जब चेन्नई की टीम ने 200 का स्कोर बनाया। चेनन्ई व लखनऊ के बीच हुए इस सीजन के 7वें लीग मैच में पहले सीएसके की टीम ने राबिन उथप्पा के 50 रन, शिवम दूबे के 49 रन व धौनी की तेज 16 रन की पारी के दम पर 20 ओवर में 210 रन बनाए। इसके जवाब में लखनऊ की टीम ने काफी अच्छी बल्लेबाजी की और कप्तान केएल राहुल 40 रन, क्विंटन डिकाक 61 रन, इविन लुईस 55 रन और आयुष बदोनी की दो छक्कों की मदद से नाबाद 19 रन की पारी के दम पर मैच में 6 विकेट से जीत दर्ज की। सीएसके की ये लगातार दूसरी हार रही तो वहीं लखनऊ की टीम ने अपना पहला मैच जीता। इविन लुईस को प्लेयर आफ द मैच चुना गया।

210 रन बनाने के बाद भी क्यों मिली हार, कप्तान रवींद्र जडेजा ने बताया कारण

नई दिल्ली। चेन्नई सुपर किंग्स ने आइपीएल 2022 के 7वें लीग मैच में केएल राहुल की कप्तानी वाली लखनऊ सुपर जाइंट्स के खिलाफ बड़ा स्कोर खड़ा किया था। राबिन उथप्पा की अर्धशतकीय पारी के दम पर इस टीम ने 20 ओवर में 7 विकेट पर 210 रन बनाए। इस स्कोर को देखकर ऐसा लग रहा था कि शायद लखनऊ सुपर जाइंट्स इस टारगेट को चेज नहीं कर पाए, लेकिन ऐसा नहीं हुआ और इस टीम ने 6 विकेट शेष रहते इस लक्ष्य को हासिल करके सीएसके को हरा दिया। अब टीम इतने बड़े टारगेट को भी क्यों नहीं बचा पाई इसके बारे में चेनन्ई के कप्तान रवींद्र जडेजा ने खुलासा किया और टीम की कमी के बारे में भी बात की। मैच में मिली हार के कप्तान कप्तान रवींद्र जडेजा ने कहा कि हमने मैच में शानदार शुरुआत की थी और राबिन उथप्पा व शिवम दूबे ने काफी अच्छी बल्लेबाजी की थी। हमारी शुरुआत अच्छी रही, लेकिन हमें कैच लपकने होंगे तभी आप मैच जीत पाएंगे। हमें कैच लपकने के मौके नहीं छोड़ने चाहिए थे। इसके अलावा जडेजा ने कहा कि मैदान पर काफी ओस थी और गेंद हाथ में सही तरीके से नहीं आ रही थी। अगली बार हमें गीली गेंद से अभ्यास करना होगा। हमने पावरप्ले और फिर बीच में काफी अच्छी बल्लेबाजी की और विकेट बल्लेबाजी के लिए काफी अच्छा था। एक गेंदबाजी यूनिट के तौर पर हमें अपनी योजनाओं पर अमल करने की जरूरत है। आपको बता दें कि इस मैच में टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धौनी ने टी20 क्रिकेट करियर में अपने 7000 रन पूरे किए तो वहीं टीम के गेंदबाज ड्वेन ब्रावो ने इतिहास रच दिया। वो अब आइपीएल में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले पहले गेंदबाज बन गए हैं। आइपीएल में अब ब्रावो के नाम पर 171 विकेट हो गए हैं और उन्होंन लसिथ मलिंगा का रिकार्ड तोड़ा जिनके नाम पर 170 विकेट दर्ज थे। इसके अलावा महेंद्र सिंह धौनी बतौर विकेटकीपर टी20 क्रिकेट में 200 कैच पकड़ने वाले भारतीय खिलाड़ी भी बन गए हैं।

राशिफल

मेष-: आज का दिन सामान्य रहेगा. शाम को ऑफिस के बाद घर लौटते समय मित्रों से विवाद हो सकता है। बेहतर होगा कि आज आप बिना जरूरत किसी को अपनी राय न दें।

वृष-: ईर्ष्या और झुंझलाहट आपका स्वास्थ्य खराब कर सकती है। पुरानी बातों में न फंसें और जितना हो सके आराम करने की कोशिश करें।

मिथुन-: आज आपके सगे-संबंधियों से अनबन हो सकती है. गपशप और अफवाहों से दूर रहें। आज दिन भर आपके मन में प्रसन्नता बनी रहेगी। आप व्यवस्थित रूप से वित्तीय योजनाएँ बनाने

कर्क-: आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। बेरोजगारों को आज रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। जो लोग शादीशुदा हैं उन्हें आज उपयुक्त विवाह प्रस्ताव मिलने वाला है।

सिंह-: डिप्रेशन या तनाव से मन की शांति भंग हो सकती है. संदिग्ध आर्थिक लेन-देन में फंसने से सावधान रहें। आपके पहनावे या रूप-रंग में आपके द्वारा किए गए परिवर्तन परिवार के सदस्यों को परेशान कर सकते

कन्या-: आज आपको अपने स्वास्थ्य को लेकर थोड़ा सचेत रहने की आवश्यकता होगी. छात्रों को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए थोड़ी अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है।

तुला-: आज आपको प्रोजेक्ट के काम में जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा. जो आगे की सफलता के लिए भी मददगार साबित होगा। ऑफिस के काम में दूसरों की राय लेने से बचें।

वृश्चिक-: अपनी नकारात्मक भावनाओं और प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखें। आपकी रूढ़िवादी सोच/पुराने विचार आपकी प्रगति में बाधक बन सकते हैं, इसकी दिशा बदल सकते हैं

धनु-: आज आपको किसी प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. कार्यस्थल पर आपका प्रदर्शन उत्कृष्ट रहेगा और आप हाथ में लिए गए कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा करेंगे।

मकर-: आज आपको धन का लाभ मिलेगा. पैसों के लेन-देन के मामले में कोई भी फैसला लेने से पहले सोच लें। यह फायदेमंद साबित होगा। आज आपके काम में जो भी बाधा आ रही है

कुंभ-: सेहत को नज़रअंदाज़ न करें, शराब से दूर रहें. जो लोग आपके पास क्रेडिट के लिए आते हैं, उन्हें अनदेखा करना बेहतर है। आपका कोई करीबी आज बहुत अजीब मूड में रहेगा और इसे समझना लगभग नामुमकिन

मीन-: आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। आज आप अपनी वाणी की मधुरता से दूसरों के मन पर सकारात्मक प्रभाव छोड़ने में सफल रहेंगे। आपके विनम्र स्वभाव की सराहना की जाएगी।

सम्पादकीय

यदि किसी ग्रंथ में लोकतांत्रिक एवं नारी स्वतंत्रता के विपरीत किसी प्रथा का उल्लेख हो, तो क्या उसे मंजूरी मिल जाएगी

हिजाब मामले में कर्नाटक उच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ सवीच्च न्यायालय में दायर की जाने वाली याचिकाओं की संख्या बढ़ती जा रही है। ताजा याचिका इंडियन मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड की ओर से दाखिल की गई है। यह कोई सरकारी संस्था नहीं, बल्कि एनजीओ जैसा एक स्वयंभू संगठन है। मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के वकील की मानें तो कर्नाटक उच्च न्यायालय का फैसला इस्लामिक ग्रंथों और विशेष रूप से पवित्र कुरान की गलत समझ पर आधारित है। यह वही बोर्ड है, जिसने 1985 में शाहबानो मामले में दिए गए सुप्रीम कोर्ट के फैसले को राजीव गांधी सरकार पर दबाव बनाकर संसद से पलटवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। तब इस बोर्ड के लोगों का कहना था कि मुस्लिम समाज को शरीयत के हिसाब से ही चलने का अधिकार मिलना चाहिए। उस समय पवित्र कुरान का भी हवाला दिया गया था। तीन तलाक मामले में इस बोर्ड के लोगों ने यह तो माना था कि यह प्रथा खराब है, फिर भी वे उसी जारी रखने के पक्ष में थे। इससे यह सहज ही समझा जा सकता है कि जब कभी निकाह हलाला मामले की सुनवाई होगी तो उसे भी जायज बताने की ही कोशिश होगी। यह गनीमत रही कि सुप्रीम कोर्ट ने तीन तलाक को प्रतिबंधित कर दिया। जैसे सुप्रीम कोर्ट ने तीन तलाक मामले में यह पाया कि यह प्रथा इस्लाम का अनिवार्य हिस्सा नहीं, उसी तरह कर्नाटक उच्च न्यायालय भी इस नतीजे पर पंहुचा कि हिजाब इस्लाम का बुनियादी हिस्सा नहीं। प्रश्न यह है कि यदि तीन तलाक इस्लाम के अनिवार्य हिस्से के रूप में दर्ज होता तो क्या उसे जारी रखने की मंजूरी दे दी जाता यही प्रशन हिजाब मामले में भी कर्नाटक उच्च न्यायालय के फैसले के संदर्भ में भी उठता है। यदि कहीं किसी इस्लामी ग्रंथ अथवा पवित्र कुरान में यह लिखा होता कि हिजाब-बुर्का आदि इस्लाम का अनिवार्य हिस्सा है तो क्या उसे स्कूली कक्षाओं में पहनने की मंजूरी दे दी जाती इन सवालों पर विचार इसलिए होना चाहिए, क्योंकि यदि सैकड़ों-हजारों वर्ष पुराने किसी धर्मग्रंथ में किसी ऐसी प्रथा का उल्लेख हो, जो आज के इस युग में समानता, पंथनिरपेक्षता, लोक व्यवस्था, संवैधानिक नैतिकता, महिला स्वतंत्रता आदि के लिहाज से उपयुक्त न हो तो क्या उसे जारी रखने की मंजूरी दे दी जाएगी? यदि सामाजिक सुधार के फैसले इस आधार पर लिए जाएंगे कि संबंधित समाज के किसी धर्मग्रंथ में किसी प्रथा के बारे में क्या लिखा है तो यह गंभीर समस्याएं खड़ी करने का काम करेगा। अगर सामाजिक प्रथाओं और रीति-रिवाजों के मामले में धर्मग्रंथों में क्या लिखा है, इस पर ध्यान दिया जाता तो वे अनेक सुधार संभव नहीं होते, जो हिंदू समाज में हुए। यह सही है कि हिंदू समाज में व्यापक सामाजिक सुधार आजादी के बाद हिंदू कोड बिल के माध्यम से हुए, लेकिन यह भी एक तथ्य है कि इस समाज में सुधारों का सिलसिला अंग्रेजों के शासनकाल में ही कायम हो गया था। यदि अंग्रेजी सत्ता सती प्रथा और बाल विवाह के चलन को खत्म करने के साथ लड़कियों और लड़कों की विवाह योग्य आयु बढ़ाने, विधवा विवाह को मान्यता देने, हिंदू महिलाओं को संपत्ति का अधिकार देने वाले नियम-कानून बना सकी तो इसीलिए, क्योंकि इसके लिए स्वयं हिंदू समाज के नेता पैरवी कर रहे थे, जैसे कि राजा राममोहन राय, केशव चंद्र सेन, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, बाल गंगाधर तिलक, हरविलास शारदा आदि। वास्तव में ऐसे समाज सुधारकों की एक लंबी सूची है। ऐसा नहीं है कि इन समाज सुधारकों को हिंदू समाज के लोगों के विरोध का सामना न करना पड़ा हो। विरोध के बाद भी वे अडिग रहे। विरोध का सामना प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और कानून मंत्री बाबा साहब आंबेडकर को भी तब करना पड़ा, जब वे हिंदू कोड बिल पारित कराने की कोशिश कर रहे थे। इसी विरोध के कारण इस बिल को चार हिस्सों में पारित कराया गया। हालांकि मुस्लिम समाज के लोगों ने भी समय-समय पर अपने समाज में सुधार की आवाज उठाई, लेकिन सरकारों ने या तो ऐसे लोगों की अनदेखी करना पसंद किया या फिर उनके बजाय मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड जैसे संगठनों और नेताओं को महत्व दिया। इसी कारण शाहबानो वाले फैसले को संसद में मुस्लिम महिला तलाक अधिकार संरक्षण विधेयक लाकर निष्प्रभावी किया गया। फिलहाल तो ऐसा कोई अंदेशा नहीं है, लेकिन इस पर तो देश की निगाहें है ही कि हिजाब मामले में सुप्रीम कोर्ट क्या फैसला देता है।

मेडिकल शिक्षा में आत्मनिर्भरता की ओर निरंतर बढ़ते कदम

युद्धग्रस्त यूक्रेन से सकुशल वतन लौटे मेडिकल छात्रों के भविष्य को लेकर व्याप्त अनिश्चितता के संदर्भ में केंद्र सरकार ने संसद में कहा है कि विदेश में मेडिकल की पढ़ाई कर रहे भारतीय छात्र, जो रूस-यूक्रेन युद्ध और कोरोना महामारी जैसी असामान्य स्थितियों के चलते इंटर्नशिप पूरी नहीं कर सके, अब देश में अपनी इंटर्नशिप पूरी कर सकेंगे। सरकार के इस कदम से उन हजारों छात्रों को राहत मिलेगी जो यूक्रेन संकट के कारण अपने पाठ्यक्रम को अधूरा छोड़ कर भारत आ गए हैं। आंकड़ों के अनुसार, हर साल 25 हजार से अधिक छात्र मेडिकल की पढ़ाई के लिए विदेश जाते हैं। अहम सवाल यह है कि मेडिकल के ये विद्यार्थी डिग्री हासिल करने के

लिए विदेश क्यों जाते हैं? दरअसल भारत में नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट (नीट) की परीक्षा पास करना बहुत कठिन है। राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग के आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2021-22 में देश में कुल 596 मेडिकल कालेज थे, जिनमें नीट पास एमबीबीएस सीटों की संख्या 88,120 थी। जाहिर है देश में नीट के लिए सीटें भी उम्मीदवारों के अनुपात में कम हैं। जो छात्र नीट परीक्षा उत्तीर्ण नहीं कर पाते हैं वे रूस, यूक्रेन, कजाखस्तान या चीन में प्रवेश लेने पहुंच जाते हैं। इनमें अधिकांश वे छात्र होते हैं जिनके परिवार अमीर या उच्च मध्यम वर्ग के होते हैं। उन्हें डोनेशन कोटा से वहां आसानी से प्रवेश मिल जाता है। हालांकि यूरोप, इंग्लैंड और अमेरिका में एमबीबीएस में प्रवेश करना बहुत मुश्किल होता है। इस वजह से मेडिकल छात्र इन देशों में जाने के बजाय रूस, यूक्रेन या चीन में जाकर एमबीबीएस करते हैं। परंपरागत एवं प्रोफेशनल शिक्षा के क्षेत्र में निजी शिक्षण संस्थानों का योगदान और दायरा बढ़ता जा रहा है। इस वजह से बड़ी तादाद में छात्र शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। पर कई छात्र योग्यता होने के बावजूद इन संस्थानों में दाखिला नहीं ले पाते हैं, क्योंकि उनके अभिभावकों के पास भारी फीस चुकाने की क्षमता नहीं होती। बहुत से माता-पिता के लिए कर्ज लेकर शुल्क चुकाना भी संभव नहीं होता है। इन निजी मेडिकल कालेजों में साढ़े चार साल के कुल एमबीबीएस शिक्षा के लिए 50 लाख से एक करोड़ रुपये तक की फीस वसूली जाती है। इसमें दो राय नहीं कि निजी शिक्षण संस्थाओं को सरकारी कालेजों की तुलना में संचालित करना थोड़ा खर्चीला काम है, परंतु इसका यह मतलब भी नहीं कि छात्रों से मनमाना डोनेशन और अधिक शुल्क वसूला जाए। यूक्रेन संकट के बाद मेडिकल छात्रों का जीवन संकट में पड़ गया, तब यह सवाल उठने लगा है कि आखिर भारत में मेडिकल की शिक्षा इतनी महंगी क्यों है। इस पर विमर्श होना चाहिए और प्राइवेट मेडिकल कालेज की फीस नियंत्रित करने के लिए पहल होनी चाहिए। कुल मिलाकर बात यह है कि यूक्रेन आदि देशों में चिकित्सा शिक्षा के लिए जाने का उद्देश्य अपेक्षाकृत सस्ती पढ़ाई है। अगर हम देश में मेडिकल सीटों को बढ़ाएं, तो विदेश में जाकर मेडिकल पढ़ाई करने वाले छात्रों की संख्या में कमी ला सकते हैं। साथ ही प्राइवेट मेडिकल कालेजों की फीस नियंत्रित करना भी जरूरी है। जब तक भारत में चिकित्सा शिक्षा प्रणाली छात्रों की जरूरत के अनुरूप नहीं बनेगी, उनका विदेश जाना जारी रहेगा। विदेश में जाकर मेडिकल छात्रों का पढ़ाई करना न केवल भारत को उसकी बहुमूल्य विदेशी मुद्रा से वंचित करता है, बल्कि कुशल श्रमशक्ति को भी बाहर निकाल देता है। ऐसा नहीं है कि पिछले कुछ वर्षों में देश में मेडिकल की सीटों में बढ़ोतरी नहीं हुई है। देश में एमबीबीएस सीटों को वर्ष 2014 के 54 हजार के मुकाबले वर्ष 2020 में 80 हजार किया जा चुका है। इसी अवधि के दौरान पीजी के लिए सीटों की संख्या 24 हजार से बढ़कर 54 हजार हो गई है। वर्ष 2021 में इन सीटों के लिए 16 लाख उम्मीदवारों ने नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट दिया था। यह आंकड़ा डाक्टर बनने के इच्छुक छात्रों की संख्या और उन्हें प्रशिक्षित करने की भारत की क्षमता में अंतर को दर्शाता है। सरकारी प्रयास मेडिकल शिक्षा के क्षेत्र में सरकार ने नेशनल मेडिकल कमीशन (एनएमसी) में बड़े बदलाव किए गए हैं। साथ ही दशकों पुरानी संस्था भारतीय चिकित्सा परिषद को खत्म कर चार स्वायत्त बोर्डों सनतक और परासनतक चिकित्सा शिक्षा बोर्ड, चिकित्सा आकलन और मानक बोर्ड व नैतिक एवं चिकित्सा पंजीकरण बोर्ड का गठन किया गया है, जो एनएमसी को दिन-प्रतिदिन के काम-काज में मदद करेंगे। सरकार स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे के विस्तार पर जोर दे रही है, जो अच्छी बात है कि पिछले दिनों देश में मेडिकल की पढ़ाई सस्ती करने के लिए केंद्र सरकार ने प्राइवेट मेडिकल कालेजों में आधी सीटों पर सरकारी मेडिकल कालेज के बराबर ही फीस लेने का बड़ा फैसला किया है। इसके अलावा आने वाले समय में सरकार हर तीन संसदीय क्षेत्रों पर एक मेडिकल कालेज की स्थापना करने जा रही है। साथ ही जिला और रेफरल अस्पतालों को अपग्रेड कर नए मेडिकल कालेज बनाने की योजना पर भी काम हो रहा है। पिछले दिनों केंद्र सरकार ने मेडिकल शिक्षा को बढ़ावा देने और स्वास्थ्य सेवा से जुड़ी आधारभूत सुविधा और मानव शक्ति की उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से नए मेडिकल कालेजों की स्थापना की बात कही है जो स्वागतयोग्य है। सरकार मेडिकल सीटें बढ़ाने पर भी विचार कर रही है।

इतिहास को तथ्यों के साथ वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया

इतिहास किसी भी देश के विद्यार्थी के लिए, चाहे वह माध्यमिक तक इस विषय को पढ़ता हो अथवा उसमें सनतक तक ज्ञान अर्जित करना चाहता हो, एक ऐसा विषय है जो उसके मस्तिष्क पटल पर एक गहरी छाप छोड़ता है। यह ऐसा विषय है जिसमें सामयिक शोधकार्यों के अनुसार तथ्यों और उसके प्रति नजरिये में परिवर्तन होता रहता है। यह भी सही है कि वैश्विक परिवेश के अनुसार पाठ्यक्रमों में बदलाव एक सतत प्रक्रिया है। प्रश्न है कि इस इतिहास को किस रूप में और कैसे प्रस्तुत किया जाए। यदि भारतीय इतिहास का घटनाक्रम अपनी यात्रा में समावेशी है तो तथाकथित प्रगतिवाद का कोई भी मानक इसे अनन्यवेशी स्थापित नहीं कर सकता। परंतु भारतीय इतिहास

में अनन्यवेशी तत्वों ने क्या प्रभाव डाले, यह तब तक समझ के परे होगा जब तक किसी राष्ट्र के इतिहास में यह स्पष्ट नहीं किया जाए कि एक लंबे कालखंड की राजनीतिक कोलाहल के उपरांत भी देश ने 'स्वऽ की 'निरंतरता और मूल्योंऽ को जीवित रखा, और कैसे रखा शायद यह तब तक स्पष्ट नहीं होगा जब तक देश की पीढ़ियों को 'भारत बोधऽ के मूल्य को समझने का सुअवसर उसके पाठ्यक्रम से प्राप्त नहीं हो।यदि कोई प्रगतिवाद इसको इतिहास का अंश नहीं मानता तो यह उस श्रेणी में आने वाले इतिहासकारों का अपना सोच है। यदि हम औपनिवेशिक दृष्टिकोण और उसके अनुयायी समूह के इतिहास लेखन के मानकों पर भारतीय इतिहास लेखन और पाठ्यक्रम निर्धारण करेंगे तो यह भारतीय इतिहास और उसके पाठ्यक्रम निर्धारण में पक्षपात स्वतः उत्पन्न कर देगा। इसे सही करना इस पाठ्यक्रम निर्माण की बड़ी चुनौती दिखती है। इसी दृष्टिकोण से एलओसीएफ यानी 'लर्निंग आउटकम आधारित करिकुलम फ्रेमवर्कऽ सनतक इतिहास के पाठ्यक्रम के तहत ऐसे ऐतिहासिक तत्वों का समावेश किया गया है जो मात्र भारतीय इतिहास के मूल आधार, एशिया महाद्वीप के उत्थान पतन और पुनरुत्थान, विश्व संस्कृतियां, काल खंडों में भारतीय सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक इतिहास लेखन की परंपराओं को संतुलित रूप से प्रस्तुत करता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्मित पाठ्यक्रम की विशेषता है कि यह समग्र रूप से भारतीय इतिहास को युवा पीढ़ी के समक्ष लाना चाहता है। तात्पर्य यह है कि भारत जैसे समृद्ध सांस्कृतिक राष्ट्र को दिल्ली केंद्रित इतिहास के रूप में ही नहीं समझा जा सकता है। देश के इतिहास की विकास यात्रा या चुनौतियों से भरी यात्रा को मात्र दिल्ली केंद्रित इतिहास सुस्पष्ट कर ही नहीं सकता। यदि देश की सांस्कृतिक इकाइयों के विकास को क्रमबद्ध रूप से समझना है तो इससे आगे जाना होगा और प्रत्येक उस क्षेत्रीय इकाई की प्रस्तुति करनी होगी जो इस देश के इतिहास को प्रभावित करने का कार्य करती है। तात्पर्य यह है कि भारतीय इतिहास को एक क्षेत्र विशेष से परिभाषित नहीं किया जा सकता। मध्यकाल में यह पाठ्यक्रम इसी दिल्ली केंद्रित अथवा विशेष राजा या घटना केंद्रित इतिहास की प्रचलित प्रथा से प्रस्थान है। निश्चित ही भारत को समझने का यही बेहतर उपाय है। यह पाठ्यक्रम ऐतिहासिक घटनाओं के महत्व की वरीयता तय करता हुआ न्यायाधीश की भूमिका में नहीं है, न ही यह सम्राट केंद्रित है और न ही यह किसी विषय विशेष पर आधारित है। इतिहास के पाठ्यक्रम की परिकल्पना करते समय इतिहास बोध से संबद्ध समस्याएं एवं मुद्दे मूलभूत प्रश्न हो जाते हैं। इतिहास में ज्ञान के सरोकार मूलतः ज्ञान मीमांसा अथवा ज्ञान का सिद्धांत दर्शन की वह शाखा है जो ज्ञान की प्रकृति, प्रयोजन और इससे संबंधित पूर्वधारणाएं एवं आधार बिंदु तथा ज्ञान को लेकर होने वाले दावों के सामान्य विश्वसनीयता की चिंता करती है। ऐतिहासिक ज्ञान एवं उसका न्यायोचित प्रस्तुतीकरण पाठ्यक्रम निर्माण से जुड़ी एक बड़ी चुनौती है। एक राष्ट्र के इतिहास के संदर्भ वाले मुद्दे किस तरह से वैज्ञानिक अन्वेषण एवं पूर्वाग्रह के सवालों से उलझते हैं, यह इस विधा के छात्र के लिए वाद विवाद का प्रमुख प्रश्न है। यह तभी संभव है जब युवा मस्तिष्क को समझने, अनुसंधान व विवेचन करने और राष्ट्र के वृहत्तर संदर्भों को ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया जाए। यह पाठ्यक्रम इसी प्रक्रिया को स्थापित करने का उद्देश्य रखता है, क्योंकि सनतक स्तर के विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम का प्रारूप तैयार करते समय इतिहास के राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य को रेखांकित करने का सतर्क प्रयास करना आवश्यक है। विशेष तौर पर एशिया के पुनरुत्थान को लेकर, जिसे सभ्यताओं का उद्गम स्थल माना जाता है, विद्यार्थियों को भारत की मूलभूत संकल्पना एवं उसकी निरंतरता से परिचित कराना इस पाठ्यक्रम के महत्वपूर्ण मानक हैं। इतिहास में भौगोलिक राजनीतिक सीमाओं का निर्माण एक अनवरत प्रक्रिया रही है। राज्य की प्रकृति निश्चित रूप से संस्कृतियों को प्रभावित करती है, और यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि इतिहास में इसके सबल साक्ष्य मौजूद हैं। परंतु विश्व इतिहास इस बात का साक्षी है कि राज्य की प्रतिकूल प्रवृत्ति के चलते अपरिवर्तनीय अवस्थाएं उत्पन्न हुई हैं जिससे अपूरणीय क्षति हुई। सनतक स्तर के छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वह राष्ट्र और राज्य की संकल्पनाओं के बीच के भेद को समझें। वह यह भी समझें कि किस तरह राष्ट्र अपने स्वरूप एवं अंतरवस्तु के साथ पूरी तरह सजीव है, जबकि राज्य के साथ ऐसा नहीं है। यह महत्वपूर्ण तथ्य निश्चित रूप से रेखांकित किया जाना चाहिए कि बिना अतीत के एक राष्ट्र नहीं हो सकता। इस अतीत की निरंतरता एवं राष्ट्र का निर्माण समकालीन शोधार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण बिंदु है। इसे ध्यान में रखते हुए सनतक स्तर पर 'भारत बोधऽ शीर्षक से एक अनिवार्य प्रश्न पत्र तैयार किया गया है जो निश्चित तौर पर सभ्यता की निरंतरता एवं भारतीय इतिहास को पश्चिमी दृष्टि से समझने की अपेक्षा अपनी दृष्टि से समझने को प्रोत्साहित करेगा।

इमरान खान को उनके हाल पर छोड़कर पाकिस्तानी सेना ने विपक्ष को राजनीतिक बाजी पलटने के लिए एकजुट कर दिया

पाकिस्तान की नेशनल असेंबली में इमरान खान सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव आखिरकार स्वीकार हो गया है। अब उस पर अगले तीन से सात दिनों के भीतर मतदान होगा। इमरान सरकार के लिए इस अविश्वास प्रस्ताव को मात दे पाना मुश्किल लग रहा है, क्योंकि उनकी पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ यानी पीटीआइ में विद्रोह

हो गया है। नेशनल असेंबली में कुल 342 सीटें हैं और बहुमत के लिए 172 आवश्यक हैं। इमरान की पार्टी के 155 सदस्य हैं। उनके गठबंधन के पाले में 178 सदस्य हैं, जबकि विपक्ष की कुल सदस्य संख्या 163 है। अगर 12 विद्रोही सांसद एकजुट रहते हैं तो संख्याबल सरकार के खिलाफ होगा। ऐसे आसार भी दिख रहे हैं कि सहयोगी दलों के कुछ अन्य सदस्य भी अविश्वास प्रस्ताव के पक्ष में मतदान करेंगे। यदि ऐसा होता है तो इमरान 1957 के बाद अविश्वास प्रस्ताव से सत्ता गंवाने वाले पाकिस्तान के पहले प्रधानमंत्री होंगे। हालांकि आठ मार्च को अविश्वास प्रस्ताव आने के बाद से इमरान एवं उनके मंत्रियों ने सेना को लेकर तमाम सकारात्मक बयान दिए हैं और ऐसी खबरें भी आ रही हैं कि सेना प्रमुख जनरल कमर बाजवा और इमरान के बीच कुछ सौदेबाजी हो रही है, लेकिन एक बार जब भरोसे की दीवार दरक जाए तो विश्वास बहाल हो पाना कठिन हो जाता है। यह टकराव इस संदर्भ में और उल्लेखनीय हो जाता है कि बाजवा का विस्तारित कार्यकाल इसी वर्ष के अंत में समाप्त होना है और उस समय प्रधानमंत्री को उनका उत्तराधिकारी चुनना होगा। माना जा रहा है कि अगले सेना प्रमुख के लिए आइएसआइ के पूर्व महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल फैज हमीद इमरान की पहली पसंद हैं। इसकी वजह यह है कि हमीद ने राजनीतिक प्रबंधन में इमरान की खूब मदद की। जब पिछले साल बाजवा ने हमीद को पेशावर कार्प्स कमांडर बनाया तो इमरान क्रुद्ध हो गए थे। कुछ हफ्तों तक इस स्थानांतरण को लटकाए रखने के बाद ही इमरान ने उक्त प्रस्ताव पर सहमति जताई। ऐसे में यही अनुमान लगाया जा सकता है कि बाजवा और अन्य जनरल नहीं चाहते कि हमीद अगले सेना प्रमुख बनें। अगर इमरान आश्वस्त करें कि वह हमीद को अगला सेना प्रमुख नहीं बनाएंगे तो भी इसकी उम्मीद कम ही है कि जनरल उनकी बात पर भरोसा करेंगे। अपनी सरकार बचाने के लिए इमरान हर हथकंडा अपना रहे हैं। वह विद्रोही सांसदों की खुशामद से लेकर उन्हें धमका भी चुके हैं। एक हैरतअंगेज घटनाक्रम में पीटीआइ कार्यकर्ताओं ने इस्लामाबाद के उस सिंध हाउस पर धावा बोल दिया, जहां उनके विरोधी सांसद ठहरे हुए थे। पीटीआइ नेता सार्वजनिक रूप से अपील कर रहे हैं कि इन नेताओं के लिए पार्टी के दरवाजे खुले हुए हैं और उनकी शिकायतों का समाधान किया जाएगा। जब विद्रोही गुट के तेवर नरम होने के कोई उम्मीद नहीं दिखी तो इमरान ने प्रेसिडेंशियल रेफरेंस का सहारा लेकर सुप्रीम कोर्ट का रुख किया। यहां पाकिस्तानी संविधान के अनुच्छेद 63ए पर पेच फंसा हुआ है। उसमें प्रविधान है कि नेशनल असेंबली का कोई सदस्य यदि अविश्वास प्रस्ताव के दौरान पार्टी की इच्छा के विरुद्ध मतदान करता है तो वह सदन का सदस्य नहीं रह जाता। अदालत ने पूछा है कि ऐसी अयोग्यता क्या जीवन भर के लिए है या फिर संबंधित सदस्य अपनी सदस्यता गंवाकर अगला चुनाव लड़? के योग्य है? अदालत ने यह भी पूछा है कि क्या अविश्वास प्रस्ताव के दौरान ऐसे सदस्यों का मत गिना जाएगा या नहीं? अदालत ने मामले की सुनवाई तो आरंभ कर दी है, लेकिन लगता नहीं कि उसका फैसला अविश्वास प्रस्ताव पर मतदान से पहले आ पाएगा। इस पहलू से भी विद्रोहियों के नरम पडे के कोई संकेत नहीं, क्योंकि उन्हें लगता है कि इमरान पूरे पाकिस्तान और विशेषकर पंजाब जैसे महत्वपूर्ण प्रांत में इतने अलोकप्रिय हो गए हैं कि उन लोगों का अगले चुनाव में पीटीआइ के टिकट पर वापस जीतकर आना मुश्किल है। तमाम तिकड़मों के साथ इमरान यह भी दिखाने में लगे हैं कि जनता का व्यापक समर्थन अभी भी उनके साथ है। इस्लामाबाद में रविवार को आयोजित विशाल रैली में उन्होंने जनकल्याण के अपने कामों को इस्लाम की चाशनी में डुबोकर पेश किया। विपक्षी नेताओं पर तीखे वार करने के साथ ही उन्होंने दावा किया कि विदेशी ताकतों और पैसों के दम पर उनकी सरकार को गिराने की साजिश हो रही है। इससे पहले उन्होंने संकेत दिया था कि रूस-यूक्रेन युद्ध में उनके तटस्थ रवैये से पश्चिमी देश कुपित हैं। स्पष्ट है कि इमरान जनता की सहानुभूति पाना चाहते हैं और अगले चुनाव की तैयारी में लगे हैं। विपक्षी दल भी लामबंद हो रहे हैं। इसने पाकिस्तान में सियासी तापमान चढ़ा दिया है। यह सब ऐसे वक्त में हो रहा है, जब पाकिस्तान बाहरी और आंतरिक मोर्चे पर कई चुनौतियों से दो-चार है। अब पाकिस्तान चुनाव की ओर जाता दिख रहा है। राजनीतिक दुविधा एवं अनिश्चितता से केवल सेना को ही फायदा होना है। सेना भले स्वयं को एक पेशेवर सैन्य बल के रूप में प्रस्तुत करे, लेकिन वह बड़ी हद तक राजनीतिक है, जो इस प्रकरण में भी प्रत्यक्ष हो रहा है। इमरान को उनके हाल पर छोड़कर सेना ने विपक्ष को यही संदेश दिया कि वह अविश्वास प्रस्ताव के मामले में कोई हस्तक्षेप नहीं करेगी। इसी संकेत ने विपक्षी नेताओं का हौसला बढ़ाया है। अन्यथा वे इमरान के खिलाफ इस हद तक नहीं जाते। पाकिस्तानी जनता भी यही मानती है कि सेना ही इकलौता ऐसा संस्थान है, जिसमें स्थायित्व है और वही मुश्किल दशा में देश को सही दिशा देने में सक्षम है। भारत को लेकर सेना का निरंतर भयादोहन इस भरोसे की एक बड़ी वजह है। ऐसे में पाकिस्तान में राजनीतिक मोर्चे पर चाहे जो परिवर्तन हो जाए, लेकिन भारत की दृष्टि में तो पाकिस्तान के असली नीति-नियंता एवं हुक्मरान तो फौजी जनरल ही रहेंगे।

देश में ऐसा कानून भी बनाया जाए जो लोगों को अनचाहे वैवाहिक रिश्तों से आसानी से मुक्ति दिलाए

भारत में वैवाहिक संबंधों में कुछ ऐसा घटित हो रहा है, जिस पर गंभीर चिंतन-मनन की आवश्यकता है। इसकी वजह यही है कि पिछले कुछ दशकों के दौरान विवाह मानवीय और भावनात्मक संबंधों के जुड़ाव के बजाय अधिकारों की प्राप्ति के रणक्षेत्र में परिवर्तित हो रहा है, जहां दंपती संबंधों की कड़वाहट को एक विकृत रूप देने पर आतुर नजर आते हैं। देश की दो विभिन्न अदालतों के निणय यह बताने के लिए काफी हैं कि वैवाहिक संबंधों का टकराव एक बेहद गंभीर सामाजिक विकृति के रूप में उभर रहा है। बीते दिनों पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय ने पति की प्रतिष्ठा को खराब करने के लिए पतनें द्वारा अपमानजनक पोस्ट करने को मानसिक क्रूरता मानते हुए टिप्पणी दी कि 'एक बार जब दो पक्ष लंबे समय से अलग हैं और उनमें से किसी एक ने तलाक के लिए याचिका पेश की है तो यह अच्छी तरह से माना जा सकता है कि शादी टूट गई है। निःसंदेह न्यायालय को पक्षों के बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए गंभीरता से प्रयास करना चाहिए, फिर भी अगर यह पाया जाता है कि दोनों का एक होना असंभव है तो तलाक को रोकना नहीं चाहिए।' पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय की तरह पिछले दिनों दिल्ली उच्च न्यायालय ने एक मामले में क्रूरता के आधार पर पति के पक्ष में निणय सुनाते हुए कहा कि 'विवाहेतर संबंध जैसे आरोप मानसिक पीड़ा और क्रूरता के समान हैं।' भारतीय वैधानिक प्रक्रिया चूंकि बहुत जटिल और लंबी है इसलिए ऐसी स्थिति में कानून का दुरुपयोग भी किया जाता है। पीड़ित पक्ष न्यायालय के सामने साल दर साल अपने जीवन का बहुमूल्य समय निकाल देता है, परंतु उसे विषाक्त विवाह संबंधों से सहज मुक्ति नहीं मिल पाती, क्योंकि न्यायिक व्यवस्था विवाह विच्छेद के उन नियमों के साथ स्वयं को बंधा पाती है, जो वर्षों पूर्व निर्मित हुए थे। हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 की धारा-13 क्रूरता, परित्याग, मतांतरण, व्यभिचार तथा मानसिक विकार के कारण पति-पतनें को संबंध विच्छेद के लिए याचिका प्रस्तुत करने का अधिकार देती है। वहीं विशेष विवाह अधिनियम, 1954 की धारा-27 के तहत विधिपूर्वक संपनन विवाह के लिए विवाह विच्छेद के प्रविधान दिए गए हैं, परंतु जिन मामलों में वैवाहिक संबंध पूर्ण रूप से अव्यावहारिक, भावनात्मक रूप से मृतप्राय यानी जिसमें सुधार की कोई संभावना न हो तथा अपूर्ण रूप से टूट चुके हों, वह विवाह विच्छेद का आधार नहीं बनना न्यायालय के समक्ष अनेक बार पीड़ादायक स्थिति उत्पनन कर देता है। हालांकि संविधान के अनुच्छेद-142 के तहत उच्चतम न्यायालय को यह शक्ति है कि जिन मामलों में कानून या विधि द्वारा निणय नहीं किया जा सकता, ऐसी स्थिति में वह उस मामले को स्वयं के अधिकार क्षेत्र में लाकर अंतिम निणय दे सकता है। उल्लेखनीय है कि चार अक्टूबर, 2019 को आर श्रीनिवास कुमार बनाम आर समेधा मामले में सुप्रीम कोर्ट ने विवाह विच्छेद का निणय देते हुए कहा कि 'जब वैवाहिक संबंध उस स्थिति तक खराब हो चुके हों कि वे किसी भी स्थिति में सुधारे नहीं जा सकें तो कानून द्वारा इस वास्तविकता पर ध्यान नहीं देना अव्यावहारिक तथा समाज के लिए हानिकारक होगा। ऐसे वैवाहिक संबंध निष्फल होते हैं तथा इनका जारी रहना दोनों पक्षों को मानसिक प्रताड?ा देना है। इन मामलों में किसी वैधानिक प्रविधान की अनुपस्थिति के कारण न्यायालय द्वारा अनुच्छेद-142 के तहत अपनी असाधारण शक्तियों का प्रयोग करना आवश्यक है।' 21 मार्च, 2006 को नवीन कोहली बनाम नीलू कोहली मामले में सुप्रीम कोर्ट ने भारत संघ को हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 में संशोधन करने पर गंभीरता से विचार करने की सिफारिश की थी, ताकि वैवाहिक संबंधों में आई कड़वाहट को विवाह विच्छेद के एक आधार के रूप में सम्मिलित किया जा सके। फलस्वरूप 2009 में भारत के विधि आयोग ने अपनी 217वीं रिपोर्ट में अपरिवर्तनीय संबंध विच्छेद को विवाह विच्छेद का आधार बनाने के लिए हिंदू विवाह अधिनियम तथा विशेष विवाह अधिनियम में शामिल करने की अनुशंसा की।

संक्षिप्त समाचार

खराब कानून व्यवस्था के खिलाफ भाजपा 22 या 26 अप्रैल को निकालेगी नवान्न अभियान

कोलकाता। बीरभूम जिले के रामपुरहाट में हुई हिंसा की घटना के बाद से राज्य में मुख्य विपक्षी भाजपा ममता सरकार के खिलाफ लगातार हमलावर है। इसी क्रम में प्रदेश भाजपा इकाई राज्य में खराब होती कानून व्यवस्था के विरूद्ध 22 या 26 अप्रैल को नवान्न (राज्य सचिवालय) अभियान की तैयारी में है। प्रदेश अध्यक्ष डा सुकांत मजूमदार ने बताया कि 22 या 26 अप्रैल को नवान्न मार्च निकालने पर विचार चल रहा है। हालांकि फाइनल तारीख अभी तय नहीं हुई है, लेकिन इन्हीं दोनों तारीखों में किसी एक दिन पार्टी की ओर से मार्च निकाला जाएगा। मजूमदार ने कहा कि राज्य की कानून- व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है। यहां माफिया का राज है। छात्र नेता अनीस खान की हत्या के बाद रामपुरहाट के बोगटूई गांव में तृणमूल कांग्रेस के नेता की हत्या के बाद गुंडों द्वारा घरों में आग लगाकर 10 लोगों को जिंदा जलाकर मारने की घटना ने तृणमूल कांग्रेस के आपराधिक लक्षणों को उजागर कर दिया है। इसीलिए पार्टी कानून व्यवस्था के मुद्दे पर यह मार्च निकालेगी। बता दें कि इससे पहले भाजपा की युवा इकाई यानी भाजयुमो ने राज्य में खराब होती कानून व्यवस्था के विरूद्ध मंगलवार को कोलकाता में रैली निकाली थी।

उच्च माध्यमिक परीक्षा कल से, नकल रोकने को बेहद कड़े कदम उठा रहा परिषद

कोलकाता। बंगाल शिक्षा बोर्ड की 12वीं की परीक्षा (उच्च माध्यमिक) शनिवार से शुरू होगी। परीक्षा में नकल रोकने को पश्चिम बंगाल उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद इस बार बेहद कड़े कदम उठा रहा है। परिषद के अध्यक्ष चिरंजीव भट्टाचार्य ने स्पष्ट रूप से कहा है कि किसी स्कूल में सामूहिक तौर पर नकलबाजी की खबर मिलने पर वहां के सभी परीक्षार्थियों के परीक्षाफल को स्थगित कर दिया जाएगा और उस स्कूल की मान्यता भी रद की जा सकती है। उच्च माध्यमिक परीक्षा 27 अप्रैल तक चलेगी। इस बार परीक्षार्थियों की संख्या 7,45,066 है। छात्रों की तुलना में छात्राओं की संख्या 71,000 अधिक है। स्कूल में ही परीक्षा देंगे। भट्टाचार्य ने कहा कि किसी वैन्यू में कोई बड़ी अप्रिय घटना होने पर वहां के वैन्यू सुपरवाइजर और इंविजिलेटर इसके लिए जिम्मेदार होंगे और उस मामले में परिषद नियमों के मुताबिक कार्रवाई करेगा।

प्रदेश में कोविड-19 से अनाथ/निराश्रित हुए बच्चों का प्रदेश सरकार कर रही है भरण-पोषण

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। प्रदेश में कोविड-19 महामारी के कारण अनाथ हुए बच्चों के उनके भरण-पोषण, शिक्षा चिकित्सा आदि की व्यवस्था हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने उ0प्र0 मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना प्रारम्भ की है। शून्य से 18 वर्ष की उम्र तक के ऐसे बच्चे जिनके माता या पिता अथवा दोनों की मृत्यु कोविड-19 के संक्रमण से हो गई है। ऐसे बच्चों को रू0 4000/- प्रतिमाह की दर से सरकार द्वारा सहायता दी जा रही है। इस महामारी में कुछ ऐसे बच्चे जो पूर्णतया अनाथ हो गए है, उन्हें बाल कल्याण समिति के आदेश से महिला एवं बाल विकास विभाग के अंतर्गत संचालित बाल्य देखभाल संस्थाओं में आवासित कराया जा रहा है। 11 से 18 वर्ष तक की आयु के बच्चों की कक्षा-12 तक की निःशुल्क शिक्षा हेतु अटल आवासीय विद्यालयों तथा बालिकाओं को कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों में प्रवेश कराया जा रहा है। प्रदेश सरकार अनाथ हुई बालिकाओं के शादी योग्य होने पर शादी हेतु रू0 101000/- (एक लाख एक हजार) की राशि भी उपलब्ध करा रही है। ऐसी श्रेणी के अन्तर्गत आने वाले कक्षा-9 या इससे ऊपर की कक्षा में अथवा व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर रहे 18 वर्ष तक के बच्चों को सरकार द्वारा टैबलेट/लैपटाप भी उपलब्ध कराये जा रहे है। प्रदेश में जनपद स्तर पर अनाथ हुए बच्चों को लाभ दिलाने हेतु महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा बच्चों को अपनी देखभाल में रखने वाले अभिभावकों से सम्पर्क कर आवेदन पर भराए जा रहें है। अब तक प्रदेश में 9,904 ऐसे बच्चे जिनके माता-पिता दोनों या माता या पिता में से किसी एक की मृत्यु कोविड से हुयी है, को चिन्हित कर लगातार त्रैमासिक रूप में अग्रिम धनराशि प्रेषित करते हुए प्रदेश सरकार इनका भरण-पोषण, शिक्षा, चिकित्सा, बालिकाओं के विवाह आदि पर धनराशि दे रही है। प्रदेश सरकार के मुखिया योगी आदित्यनाथ जी ने कोविड-19 के कारण माता-पिता दोनों या किसी एक अथवा अभिभावक को खोने वाले बच्चों के साथ ही अब उन बच्चों को भी हरसंभव मदद पहुॅचाने की योजना शुरू की है जिन्होने कोविड से इतर कारणों से कोरोना काल में अपनों को खोया है। सरकार द्वारा जुलाई 2021 में उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (सामान्य) शुरू की गई है। इस योजना का लाभ बच्चों, किशोरों को प्रदान किये जाने हेतु सरकार द्वारा समस्त जिलाधिकारियों को विस्तृत दिशा-निर्देश जारी कर दिये गये है। इस योजना के अंतर्गत 18 साल से कम उम्र के ऐसे बच्चे जिन्होनें कोरोना से इतर कारणों से पहली मार्च 2020 के बाद माता-पिता दोनों या किसी एक को अथवा अभिभावक को खोया है, उनको प्रतिमाह 2500 रूपये की मदद पहुंचाई जा रही है इस श्रेणी में आने वाले 18 से 23 साल के युवक/युवती जिन्होंने कक्षा-12 की परीक्षा उत्तीर्ण कर राजकीय डिग्री कालेज, विश्वविद्यालय अथवा तकनीकी संस्थान से सनतक की डिग्री या डिप्लोमा प्राप्त करना चाह रहे है, उन्हें लाभान्वित किया जा रहा है। इसके अलावा नीट, जेईई व क्लैट जैसे राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले मेधावी छात्रों को 23 वर्ष की आयु पूरी होने या सनतक शिक्षा अथवा मान्यता प्राप्त तकनीकी संस्थान से डिप्लोमा प्राप्त करने में जो भी पहले हो तक, इस योजना का लाभ दिया जा रहा है। इसमें वह किशोर भी शामिल किये जा रहे है जिनकी माता तलाकशुदा या परित्यक्त है अथवा जिनके माता-पिता या परिवार का मुख्यकर्ता जेल में है। इसके साथ ही बाल श्रम/बाल भिक्षावृत्ति/बाल वेश्यावृत्ति से मुक्त कराकर परिवार/पारिवारिक वातावरण में समायोजित कराये गये या भिक्षावृत्ति/वेश्यावृत्ति में शामिल परिवारों के बच्चों को भी इस योजना में लाभान्वित किया जा रहा है। प्रदेश में इस योजना के अंतर्गत अभी तक कुल 4,946 बच्चों को चिन्हित कर लाभान्वित किया गया है।

शोपियां मुठभेड़ में मारा गया लश्कर का आतंकी, जनवरी 2022 से था लापता

श्रीनगर। दक्षिण कश्मीर के जिला शोपियां के तुर्कवागाम इलाके में शुक्रवार रात से जारी मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने लश्कर-ए-तैयबा के

एक स्थानीय आतंकवादी को मार गिराया है। इलाके में छिपे अन्य आतंकियों के फरार हो जाने की आशंका जताई जा रही है। सुरक्षाबलों ने आतंकी के मारे जाने के बाद इलाके में सर्च ऑपरेशन चलाया, जब इस बात की पुष्टि हो गई कि वहां और कोई आतंकी मौजूद नहीं है, ऑपरेशन समाप्त कर सुरक्षाकर्मी आतंकी का शव व मुठभेड़ स्थल से बरामद हथियार लेकर वहां से लौट गए। पुलिस ने एक आतंकी के मारे जाने की पुष्टि करते हुए कहा कि मारे गए आतंकी की पहचान मुनीब अहमद शेख निवासी टॉक मुहल्ला शोपियां के तौर पर हुई है। वह इसी साल आतंकवाद में शामिल हुआ। जनवरी 2022 में उसके परिजनों ने स्थानीय पुलिस स्टेशन में उसकी गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पुलिस अधिकारी के अनुसार, घर से लापता हो जाने के बाद मुनीब लश्कर में शामिल हो गया था। स्थानीय सूत्रों का कहना है कि इलाके में दो से तीन आतंकियों की मौजूदगी की सूचना था। सुरक्षाबलों ने आतंकियों की तलाश में गत वीरवार रात को ही तुर्कवागाम इलाके में तलाशी अभियान शुरू किया था। एसओजी, सेना और सीआरपीएफ के संयुक्त दल ने जब घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया इलाके में छिपे आतंकियों ने उन पर गोलीबारी शुरू कर दी। अंधेरा होने की वजह से सुरक्षाबलों ने रात को ऑपरेशन रोक दिया। ऐसी आशंका जताई जा रही है कि मुनीब वहीं रूका, जबकि अन्य आतंकी अंधेरे का लाभ उठाकर वहां से फरार हो गए। सुबह रोशनी होते ही गोलीबारी का सिलसिला फिर शुरू किया और आतंकी को मार गिराया गया। वहीं, पुलिस अधिकारियों ने आतंकियों के फरार होने की पुष्टि नहीं की है। उन्होंने कहा कि एक आतंकी के मारे जाने के बाद सुरक्षाबलों ने आसपास के इलाकों में घंटों तलाशी अभियान चलाया परंतु आसपास किसी आतंकी की मौजूदगी की पुष्टि नहीं हुई। इसलेए उपरांत सुरक्षाबलों ने आतंकी के शव व मुठभेड़ स्थल से बरामद हथियार बरामद कर ऑपरेशन को समाप्त करने की घोषणा की।

शासकीय सेवा में कड़ी मेहनत सफलता दिलाती है- श्री जी.एस. मर्सकोल सहायक संचालक श्री मार्की को दी गई सेवानिवृत्ति पर भावभीनी विदाई

(आधुनिक समाचार सेवा)
दुर्गेश कुमार गुप्ता

शहडोल। शहडोल 31 मार्च 2022- शासकीय सेवा में आने पर उसे सफलतम ढंग से निर्वहन करने के लिए त्याग, तपस्या एवं कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है। सेवा में स्वाभिमान को बनाए रखते हुए

अभिमान को मौका नहीं देना चाहिए। तभी जीवन में उत्कृष्ट सफलताएं प्राप्त होती हैं। जनसम्पर्क विभाग जिला प्रशासन का आंख, कान व एडवाईजर के रूप में माना जाता है। उक्त उद्गार जिला जनसम्पर्क कार्यालय शहडोल में पदस्थ उप संचालक श्री जी.एस. मर्सकोले ने आज कार्यालय में पदस्थ सहायक संचालक जनसम्पर्क शहडोल श्री रणजीत सिंह मार्की की अधिवार्षिकी सेवा पूर्ण होने पर सेवानिवृत्ति के अवसर पर आयोजित सम्मान समारोह में व्यक्त किए। इस मौके पर श्री मार्की ने कहा कि हमारी सेवाएं भोपाल से शुरू हुई और विंध्य क्षेत्र में पूर्ण हुई। मैने विभाग की निष्ठा, कर्मठता तथा दायित्वों का भलीभांति निर्वहन करते हुए सेवा पूर्ण किया।श्री मार्की की विदाई समारोह के अवसर पर जनसम्पर्क विभाग शहडोल के श्री जी.पी. मिश्र ने कहा कि पहले के समय में और अब के समय में इस विभाग के दायित्वों का निर्वहन करने में काफी अन्तर आ गया है। वर्तमान में इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के आ जाने से कार्यों में सुगमता हुई है। पहले के समय में संचार साधनों की कमी के कारण काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। उस समय विभाग की अपनी अलग महत्ता एवं भूमिका थी। वर्तमान में इसका परिदृष्य उल्टा हो गया है। योग्य व्यक्तियों को समय पर पदोनन्ति व उनके अनुभव का लाभ ना लेकर उनकी अनदेखी की जा रही है। यह विभाग के लिए अच्छा संदेश नहीं है। इस मौके पर श्री शिवशंकर शर्मा, मानस मिश्रा, ओम जायसवाल, प्रेमलाल पनिका, श्री रामपाल पनिका, श्री अमोल सिंह, श्री राजेश बैगा सहित अन्य लोगों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के प्रारंभ में सेवानिवृत्त सहायक संचालक श्री रणजीत सिंह मार्की को पुष्पहार से उनका स्वागत किया गया तथा समापन अवसर पर शाल-श्रीफल व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर श्रीमती बी. परास मार्की, श्री कमल सिंह, श्रीमती शकुन्तला सिंह धुर्वे, प्रीति सिंह, अंजना सिंह, हेमंत सिंह, मयंक सिंह, संतोष वर्मा सहित अन्य लोग उपस्थित रहें।

कलेक्टर की समझाइश से कुपोषित बच्ची हुई सुपोषित

(आधुनिक समाचार सेवा)
दुर्गेश कुमार गुप्ता

शहडोल। शहडोल 31 मार्च 2022- जनपद पंचायत ब्योहारी के ग्राम आखेटपुर में 16 दिसम्बर 2020 को प्रभा बसोर पिता भगवानदास

बसोर जन्म से ही गंभीर कुपोषित थी। कुपोषण को दृष्टिगत रखते हुए कलेक्टर श्रीमती वंदना वैद्य द्वारा ग्राम का भ्रमण कर कुपोषित बच्ची के माता-पिता को पोषण आहार खिलाने, उसकी देखभॉल जैसे जानकारी दी गई तथा बच्ची को एनआरसी केन्द्र में भर्ती कराने के लिए भी समझाइश दी गई थी और कलेक्टर श्रीमती वंदना वैद्य की समझाइश के बाद कुपोषित बच्ची के माता-पिता द्वारा एनआरसी केन्द्र में भर्ती कराया गया तब उसका वजन 3 किलो का था तथा उन्हें पोषण आहार पर्याप्त दिया गया और आज कुपोषित बच्ची अब सुपोषित हो चुकी है पहले से स्वस्थ्य भी रहने लगी और बच्ची का वजन अब 5 किलो से अधिक हो चुका है। कार्य के लिए उनका परिवार कलेक्टर को धन्यवाद दिया।

ऊर्जा में आत्मनिर्भरता के लिए आगे बढ़ रहा जम्मू कश्मीर

जम्मू। शहरीकरण और औद्योगीकरण ने पूरे जम्मू कश्मीर में बिजली की मांग बढ़ाई है। इस जरूरत को पूरा करने के लिए प्रदेश की सरकार बिजली उत्पादन बढ़ाने के लगातार प्रयास कर रही है। प्रदूषण और वैश्विक जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं ने हमें अक्षय ऊर्जा संसाधनों को अपनाने के लिए प्रेरित किया है। वर्तमान बजट में विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सौर और जलविद्युत उत्पादन पर जोर दिया है। यह सब ऊर्जा के क्षेत्र में जम्मू कश्मीर को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में प्रयास है। इसके लिए संकल्प के साथ आगे बढ़ा जा रहा है। जम्मू और कश्मीर में सौर ऊर्जा की अच्छी संभावना है। इससे बिजली आवश्यकता के एक हिस्से को पूरा करने में मदद करेगी। पीएम कुसुम योजना में नए बजट में 375 सोलर वाटर पंप स्थापित किए जाएंगे, जिससे 47159 लोगों को बिजली लाभ, 18750 लोगों को प्रत्यक्ष कृषि लाभ और 160000 लोगों को अप्रत्यक्ष कृषि लाभ मिलेगा। जम्मू सोलर सिटी मिशन के तहत, आवासीय क्षेत्र में 200 मेगावाट की कुल क्षमता के ग्रिड से जुड़े रूफटाप सोलर पावर प्लांट 2022-23 में 50000 घरों को प्रदान किए जाएंगे, जिससे दो लाख की आबादी को लाभ होगा। जम्मू स्मार्ट

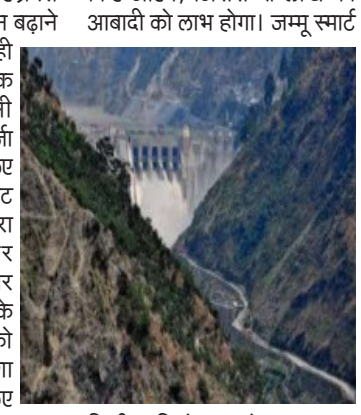

सिटी परियोजना के तहत 12 मेगावाट ग्रिड से जुड़े रूफटाप सौर ऊर्जा संयंत्रों को 2022-23 में 200 सरकारी भवनों को 48000 किलोवाट के जलविद्युत क्षेत्र में उपलब्ध कराया जाना है। इसी तरह, श्रीनगर स्मार्ट सिटी परियोजना के माध्यम से चार मेगावाट की कुल क्षमता के ग्रिड से जुड़े रूफटाप सौर ऊर्जा संयंत्रों को 2022-23 में 16000 किलोवाट के जलविद्युत क्षेत्र में 70 भवनों को उपलब्ध कराई जाएगी।

इंश्योरेंस के नाम पर फर्जी आई डी बनाकर कम्पनी ने 71 हजार का किया ठगी, धारक दर-दर फरियाद के लिए लगा रही गुहार।

(आधुनिक समाचार सेवा)
सर्वेश कुमार यश

हरहुआ (वाराणसी)। साइबर क्राइम फ्राड व ठगी की घटनाएं इस कदर हावी होती जा रही है कि कब कौन न शिकार हो जाये।आये दिन कोई न कोई इसका शिकार हो रहा है। डिजिटल युग मे तरह तरह के लोक लुभावने योजनाओं का इश्तहार मोबाइल पर आते रहते हैं और गारंटी सहित बैंक

खाते व कम्पनी के डिटेल तक अपलोड रहते हैं।गूगल पर भी इनकी डिटेल है। यहाँ तक कि इंश्योरेंश से जुड़ी कम्पनियों के शहरों में ब्रांच ऑफिस भी खोल रखें हैं। लुभावने पालिसी के बाबत उदाहरण के तौर पर हरहुआ बाजार की निवासिनी हंसा मोदनवाल के साथ जो हुआ वह फ्राड व ठगी की सच्ची तश्वीर पेश करने को काफी है। ठएक्साइट लाइट इंश्योरेंश कम्पनी शाखा सिगरा वाराणसीठ में एक पालिसी 03203768 से मु0 21256 रुपए का वार्षिक प्लान के तहत इंश्योरेंश करवाया था। 12/10/21 को कम्पनी द्वारा मैसेज आया कि आप 71 हजार रुपये जमा करिए तो अभिकर्ता कम्पनी बना देगी और तब लाखों की कमाई होती रहेगी।विश्वास में आकर तीन किस्तों में क्रमशः 12/10/21को मु0 21734 रुपये, 16/10/21 को 29000 हजार व 20/10/21 को मु0 20262 रुपये कम्पनी के एकांउन्ट न0- 3113153977 आई एफ एस सी न0ँ 0000181 शाखा बंगलौर के कोटक बैंक में ट्रांसफर कर दिया। प्रार्थिनी जब 22/10/21 को ब्रांच ऑफिस सिगरा जाकर ब्रांच मैनेजर से जानकारी ली तो ब्रांच मैनेजर ने कहा कि ब्रांच के खाते में एक रुपया तक नहीं आया है। आपके साथ फर्जी व्यक्तियों द्वारा फर्जी आई डी बनाकर रुपया हड़प कर लिया गया। स्थानीय थाने में व साइबर क्राइम आफिस में शिकायत कीजिये। प्रार्थिनी ने स्थानीय बड़ागांव में 22/10/21 को शिकायती पत्र देकर दर-दर ऑफिसों का चक्कर काट रही है।कोई भी विभाग साइबर क्राइम होने पर न तो कार्यवाही कर रहा है और न ही रुपये वापस कराने में मदद कर रहा है। यह तो एक हंसा मोदनवाल के साथ घटी घटना है। इस तरह आये दिन कितने हंसा देवी व लोग ठगी व फ्राड का शिकार हो रहे हैं। धड़ल्ले से सरकारी लाइसेंस संरक्षण में फल-फूल रहे इस कारोबार ने कितनो के घर व जीवन बर्बाद कर दिए।जांच के नाम पर ढांक के पात रिजल्ट मिल रहे है। सरकार ऐसे इंश्योरेंश कम्पनियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करे ताकि एक हंसा मोदनवाल सहित अनेक लोग इस तरह से हो रहे ठगी से बच सके। अब हंसा मोदनवाल साइबर क्राइम वाराणसी कार्यालय में अपनी गुहार लगाने के निणय्र के साथ कम्पनी के खिलाफ कड़ी कार्यवाही व जांच कर धन वापस करने की गुहार की तैयारी में जुट वकीलों से राय मशविरा कर रही है। हंसा न्याय व धन वापस पाने के लिए किसी भी हद तक जाने का इरादा बना लिया है। देखना है कि सरकारी व्यवस्था कब तक हंसा को न्याय दिला पाती है। पति सोहन मोदनवाल ने भी अपराधियो के गिरेबान तक पहुंचने में पतनी संग जुट गए है।व्यापार मण्डल पिंडरा तहसील अध्यक्ष व मानवाधिकार संगठन के प्रदेश मीडिया प्रभारी रामजियावन गुप्त ने फ्राड व ठगी की घटनाओं पर चिंता जताते हुए शासन से त्वरित कार्यवाही करने व पीड़ितों को न्याय दिलाने की सरकार से मांग की है।

सुपरटेक के ट्विन टावर गिराने की तैयारियों में आई तेजी सोसाइटी के सामने की सड़क बंद

सुपरटेक एमराल्ड कोर्ट के 40 मंजिला ट्विन टावरों को ध्वस्त करने के लिए तेजी से काम हो रहा है। एडिफिस संस्था की ओर से टावर के सामने वाली सड़क बंद कर दी गई है। यह सड़क गेझा रोड से इस मार्ग को जोड़ती थी।

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। सुपरटेक एमराल्ड कोर्ट के 40 मंजिला ट्विन टावरों को ध्वस्त करने के लिए तेजी से काम हो रहा है। एडिफिस संस्था की ओर से गुरुवार को टावर के सामने वाली सड़क बंद कर दी गई है। सुपरटेक एमरल्ड कोर्ट के सामने टीन की चादर तथा बेरिकेडिंग लगाकर दोनों ओर की लगभग 500 मीटर सड़क बंद की गई है। यह सड़क गेझा रोड से इस मार्ग को जोड़ती थी। अब गेझा गांव की ओर से आने-जाने वालों को इसके करीब के ही दूसरे रास्ते से जाना होगा। उन्हें करीब एक किलोमीटर का अतिरिक्त सफर तय करना होगा। इसके

अलावा कंपनी द्वारा दोनों टावर के पास स्थित कार ड्राइव एरिया की सड़क को भी तोड़ दिया गया है महज 9 सेकेंड में ध्वस्त हो जाएंगे सुपरटेक के यह ट्विन टावर इससे वहां पर कोई वाहन न आ सके। इन टावरों के आस-पास के पूरे क्षेत्र की बेरिकेडिंग भी कर दी गई है। इसके साथ ही इन टावरों में 10 अप्रैल को होने वाले ट्रायल ब्लास्ट की तैयारी भी तेज हो गई है। वहीं, धूल उड़ने से लोग परेशान हैं। उन्होंने इस बारे में शिकायत भी की है। क्या था मामला सुप्रीम कोर्ट ने चार अक्टूबर 2021 को सुपरटेक लिमिटेड की याचिका खारिज कर दी थी। अदालत ने सुरक्षा मानकों पर खरा नहीं उतरने के कारण इमारतों को ध्वस्त करने के अपने पूर्व के निर्देश में संशोधन करने से इनकार कर दिया था। सुप्रीम कोर्ट ने 31 अगस्त, 2021 के अपने फैसले में अवैध इमारतों को तोड़ने के साथ ही फ्लैट खरीदारों को उनकी पूरी रकम लौटाने करने का भी निर्देश दिया था। कोर्ट ने नोएडा के टी-16 (एपेक्स) और टी-17 (सेयेन) ट्विन टावर्स के निर्माण में नोएडा प्राधिकरण और रियल एस्टेट कंपनी सुपरटेक के अधिकारियों की नापाक मिलीभगत के लिए उन पर मुकदमा चलाने का भी आदेश दिया था।

कैबिनेट मंत्री अनिल राजभर को श्रम मंत्रालय बनाए जाने पर कार्यकर्ताओं ने जमकर किया स्वागत

(आधुनिक समाचार सेवा)
सर्वेश कुमार यश

हरहुआ (वाराणसी)। उत्तरप्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री श्रम मंत्रालय बनाये जाने पर वाराणसी प्रथम आगमन पर अनिल राजभर का भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं द्वारा हरहुआ क्षेत्र सातोमहुआ में आशुतोष मिश्र 'अजय' के नेतृत्व में ढोल नगाड़े बजाकर व माल्यर्पण भव्य स्वागत किया गया। वहीं मंत्री पैदल चलकर प्राचीन हनुमान जी के मंदिर में दर्शन पूजन किया। वहां हर हर महादेव,जय बजरंगबली के गगन भेदी जयकारों परिसर गूंज उठा

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से जिलाध्यक्ष हंसराज विश्वकर्मा, जिला उपाध्यक्ष अखंड प्रताप सिंह,संजय सोनकर,विनय सिंह हिटलर ,गौतम सिंह,डॉ हंसराज सिंह ,सीताराम पटेल,कैलाश राय,अनिल पांडेय, विजय वर्मा,पंकज तिवारी,गगन चौबे,अनुराग मिश्र, पंकज मौर्य ,कृष्णा पांडेय,बिहारी पटेल, धीरज मिश्रा,श्यामकार्तिक मिश्रा,चाणक्य त्रिपाठी,प्रवीण सिंह,अपरबल सिंह,जिला मंत्री स्वाति मिश्रा,मुमताज बानो,पीर अली,पूजा विनोद कननैजिया, सहित सैकड़ो कार्यकर्ता उपस्थित रहे ।

राजामौली की फिल्म ने मचाई बॉक्स ऑफिस पर तबाही, 7 दिन में कमाए इतने करोड़

नई दिल्ली। 7: एसएस राजामौली की मैगन्म ओपस और भारत की सबसे महंगी फिल्मों में से एक 'आरआरआर' ने ग्लोबल बॉक्स ऑफिस पर तूफान ला दिया। फिल्म की कमाई से कई रिकॉर्ड टूटते नजर

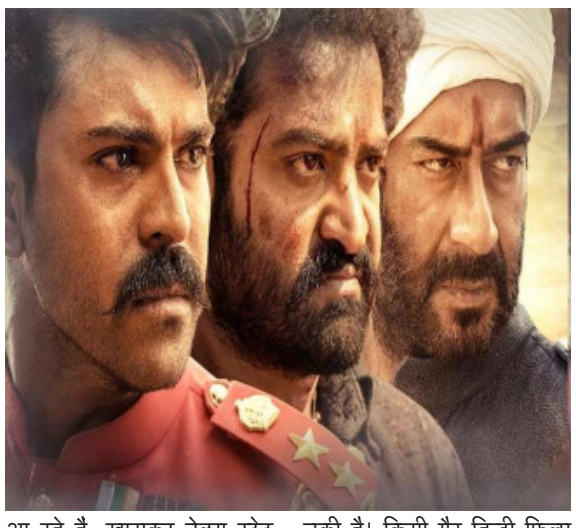

आ रहे हैं, खासकर तेलुगु स्टेट और यूएसए में। फिल्म ने हिन्दी बाजार में अच्छी शुरुआत की, लेकिन इसकी खास बात यह रही कि इसने इसे बरकरार रखा है। वीकेंड पर अच्छा बिजनेस करने के बाद भी फिल्म सोमवार को फिल्म कुछ खास नहीं गिरी। वीकडे में भी फिल्म ने अपनी रफ्तार बनाई रखी और अपना पहला हफ्ता पूरा होने तक फिल्म अकेले हिन्दी बेल्ट में 131 करोड़ का अंकड़ा पार कर चुकी है। किसी गैर हिन्दी फिल्म के लिए करोना महामारी के बाद इतना कमाना वाकई जादू जैसा है। इससे पहले पुष्पा ने बड़ी मुश्किल से 100 करोड़ से थोड़ा ही ज्यादा का बिजनेस किया था। अब उम्मीद है कि आरआरआर जल्द ही 200 करोड़ के क्लब में शामिल हो सकती है। लागत के मामले में आरआरआर एक बड़ी फिल्म है। इसके अलावा, फिल्म में कई बार देरी भी हुई है, जिसने फिल्म के बजट को बुरी तरह प्रभावित किया है। हालांकि, एसएस राजामौली ने न केवल यह सुनिश्चित किया है कि लागत की भरपाई की जाए, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया है कि हर इनवेस्टर और पार्टनर फिल्म से पैसा कमाएं। आरआरआर नीतीश तिवारी के निर्देशन वाली दंगल और एसएस राजामौली की बाहुबली 2 के बाद दुनिया भर में तीसरी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली भारतीय फिल्म के रूप में उभर कर सामने आई है। आरआरआर की सफलता विशेष है, क्योंकि यह इसने कई विपरीत कारणों के बावजूद सफलता उर्जित की है। यहां देखें (हिंदी) के नेट बॉक्स ऑफिस कलेक्शन परः - शुक्रवार : 19 करोड़ शनिवार : 24 करोड़ रविवार : 31.5 करोड़ सोमवार : 17 करोड़ मंगलवार : 15 करोड़बुधवार : 13 करोड़ गुरुवार : 12 करोड़ (शुरुआती अनुमान) नेट कलेक्शनः 131.5 करोड़।

Ganeshed Acharya की बढ़ी मुश्किलें, महिला डांसर के 'उत्पीड़न' के मामले में चार्जशीट दायर.....

नई दिल्ली। कोरियोग्राफर गणेश आचार्य की मुश्किलें बढ़ गई हैंत् मुंबई पुलिस ने कई धाराओं के अंतर्गत उनपर केस दर्ज किया था इसकी अब चार्जशीट फाइल कर

दी गई हैत् मुंबई पुलिस ने गणेश आचार्य के खिलाफ चार्जशीट फाइल की है गणेश आचार्य पर यौन उत्पीड़न, पीछा करना, परेशान करना जैसे गंभीर आरोप लगे हैं यह केस 2020 में एक को-डांसर ने फाइल किया था ओशिवारा पुलिस स्टेशन के अफसर संदीप शिंदे शिकायत की जांच कर रहे थे इस बारे में बताते हुए उन्होंने कहा, 'अब कोर्ट में चार्जशीट फाइल कर दी गई है गणेश आचार्य और उनके असिस्टेंट पर धारा 354, 354, 354, 509, 323, 504, 506 और 34 के अंतर्गत चार्जशीट दर्ज की गई है गणेश आचार्य से मामले पर बातचीत नहीं हो पाई है गणेश आचार्य पर एक को-डांसर पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया था, जिससे उन्होंने इनकार किया थात् उन्होंने कहा था कि यह झूठ और आधारहीन बात है हालांकि उनपर एफआईआर दर्ज कर ली गई थी गणेश आचार्य ने मामले में महिला पर मानहानि का दावा भी ठोका थात् महिला ने पुलिस में शिकायत करते हुए कहा था कि उन्होंने गणेश आचार्य की बात मानने से इनकार कर दिया था और वह उनसे 'फेवर' मांग रहे थे, नहीं देने पर वह उन्हें अपमानित करते थे और उन्हें अश्लील फिल्में दिखाते थे महिला के अनुसार गणेश आचार्य ने उनसे कहा था कि अगर उन्हें सफलता चाहिए तो उन्हें उनके साथ संबंध बनाने होंगे, जब उन्होंने ऐसा करने से इंकार कर दिया, तब 6 महीने बाद इंडियन फिल्म और टेलीविजन कोरियोग्राफर एसोसिएशन ने उनकी मेंबरशिप रद्द कर दी महिला ने आगे कहा, 'जब उन्होंने इस बात का विरोध किया तब 2020 में गणेश आचार्य ने उन्हें अपमानित किया और उनके असिस्टेंट पर हमला किया।'

बॉक्स ऑफिस पर की बंपर कमाई, कोरियोग्राफर गणेश आचार्य पर केस दर्ज, 'आनंदी' की बरसी पर इमोशनल हुए फैंस

नई दिल्ली। खबरों में सबसे पहले एसएस राजामौली की मैगन्म ओपस और भारत की सबसे महंगी फिल्मों में से एक आरआरआर ने ग्लोबल बॉक्स ऑफिस पर तूफान ला दिया है। फिल्म ने हिन्दी बेल्ट में भी जबरदस्त कमाई करते हुए 131 करोड़ से ज्यादा का कलेक्शन कर लिया है। तो वहीं कोरियोग्राफर गणेश आचार्य की मुश्किलें बढ़ गई है। मुंबई पुलिस ने कई धाराओं के अंतर्गत उनपर केस दर्ज किया था। इसकी अब चार्जशीट फाइल कर दी गई है। गणेश आचार्य पर यौन उत्पीड़न, पीछा करना, परेशान करना जैसे गंभीर आरोप लगे हैं। छोटे पर्दे की बालिका बधू यानि प्रत्युषा बनर्जी की आज पुण्यतिथि है। लोगों की इस प्यारी 'आनंदी' ने मजह 24 साल की उम्र में ही दुनिया को अलविदा कह दिया।

उन्होंने एक अप्रैल 2016 को अपने कमरे में पंखे से लटककर आत्महत्या कर ली थी। सोशल मीडिया पर फैंस अपनी फेवरेट एक्ट्रेस को याद कर इमोशनल हो रहे हैं।

द कश्मीर फाइल्स, और गंगूबाई काठियावाड़ी ने पहली तिमाही में कमाये 700 करोड़ से ज्यादा

नई दिल्ली। साल 2022 की शुरुआत कोरोना वायरस पैनडेमिक की तीसरी लहर की आशंका के बाद फिल्मों की रिलीज डेट टलने के साथ हुई और जनवरी में बॉक्स ऑफिस पर सननटा छाया रहा। मगर, फरवरी आते-आते ओमिक्रोन के मामले नियंत्रित होने लगे और प्रोटोकॉल्स का पालन करते हुए फिल्में सिनेमाघरों में रिलीज होना शुरू हुईं और इसी के साथ बॉक्स ऑफिस अपनी पुरानी रंगत में लौटने लगा। शुरुआती हिचक के बाद फरवरी के अंत में दर्शक सिनेमाघरों में लौटना शुरू हुए और मार्च में सिनेमाघरों में फिल्मों का कारोबार पटरी पर लौट आया। 2022 की पहली तिमाही की सबसे बड़ी उपलब्धियां गंगूबाई काठियावाड़ी, द कश्मीर फाइल्स और आरआरआर हैं तो सबसे बड़ी नाकामयाबी बच्चन पांडेय रही। दिसम्बर में ओमिक्रॉन के मामले बढ़ने के बाद लगाये गये प्रतिबंध शिथिल होने के बाद साल 2022 की पहली रिलीज बधाई दो थी, जो 11 फरवरी को सिनेमाघरों में उतरी। राजकुमार राव और भूमि पेडनेकर की मुख्य भूमिकाओं वाली फिल्म ने लगभग 20 करोड़ का कलेक्शन किया। इसके बाद 24 फरवरी को तमिल फिल्म वलिमै हिंदी में भी जोर-शोर से रिलीज हुई, मगर आश्चचर्यजनक रूप से यह हिंदी

बेल्ट में नकार दी गयी। 25 फरवरी को साल की पहली बहुप्रतीक्षित फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी सिनेमाघरों में पहुंची। संजय लीला भंसाली और आलिया भट्ट की पहली जुगलबंदी को देखने के लिए दर्शकों ने सिनेमाघरों का रुख किया। लगभग 128 करोड़ का कलेक्शन करके गंगूबाई काठियावाड़ी ने 100 करोड़ क्लब का फीता काटा और 2022 की पहली बड़ी सफलता बनी। हालांकि, इसके बाद 4 मार्च को आयी अमिताभ बच्चन की झुंड को तारीफें तो मिलीं, मगर बॉक्स ऑफिस पर सिर्फ 17 करोड़ ही मिल सके। 11 मार्च को विवेक अग्निहोत्री निर्देशित द कश्मीर फाइल्स सिनेमाघरों में पहुंची, जिसने बॉक्स ऑफिस गणित का हिसाब-किताब रखने वालों को अचम्भे में डाल दिया। एक स्मॉल रिलीज के तौर पर सिनेमाघरों में उतरी पिल्म देखते ही देखते इतनी बड़ी होती चली गयी कि 200 करोड़ क्लब का उद्घाटन किया और रिलीज के 20 दिनों में फिल्म 240 करोड़ के आस-पास पहुंच चुकी है। उम्मीद की जा रही है कि कश्मीरी पंडितों के पलायन पर बनी यह फिल्म 250 करोड़ का लाइफ टाइम कलेक्शन कर लेगी। इसके साथ बड़े-बड़े दावों और उम्मीदों पर सवार तेलुगु फिल्म राधे श्याम पूरी तरह असफल रही। पैन-इंडिया स्तर पर रिलीज हुई राधे श्याम हिंदी बेल्ट में सिर्फ 20 करोड़ के आस-पास ही जुटा सकी और 2022 की पहली बड़ी असफलता के रूप में दर्ज हुई। 18 मार्च को एक बार फिल बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचने की उम्मीद जगी, जब अक्षय कुमार की चर्चित फिल्म बच्चन पांडेय आयी, मगर हैरानी तब हुई, जब ओपनिंग वीकेंड के बाद बच्चन पांडेय बैठती चली गयी और लगभग 50 करोड़ का कारोबार करके सिमट गयी। हालांकि, अक्षय ने बाद में बच्चन पांडेय की असफलता के पीछे द कश्मीर फाइल्स की लहर को जिम्मेदार माना। बच्चन पांडेय साल 2022 की पहली बड़ी बॉलीवुड असफलता बनकर रह गयी। और फिर 25 मार्च को आयी भारतीय सिनेमा की द मोस्ट अवेटेड फिल्म आरआरआर। बाहुबली निर्देशक एसएस राजामौली की इस फिल्म से सिनेमा लवर्स के साथ ट्रेड को भी बेतहाशा उम्मीदें थीं और फिल्म ने किसी को निराश नहीं किया। आरआरआर बॉक्स ऑफिस तूफानी गति से दौड़ रही है। तेलुगु के साथ तमिल, मलयालम, कनन्ड़ और हिंदी में रिलीज हुई फिल्म सभी भाषाओं में 400 करोड़ का नेट कलेक्शन कर चुकी है, वहीं सिर्फ हिंदी बेल्ट में फिल्म का नेट कलेक्शन 120 करोड़ हो चुका है। राजामौली की इस फिल्म से बड़ा कलेक्शन करने की पूरी उम्मीद है। आरआरआर ने द कश्मीर फाइल्स की रफ्तार को भी धीमा किया है। इन सभी फिल्मों का मिला-जुला कारोबार देखें तो पहली तिमाही में बॉक्स ऑफिस पर लगभग 800 करोड़ का नेट कलेक्शन हुआ है, जिसने 2022 की पहली तिमाही को जोरदार आगाज दिया है तो वित्तीय वर्ष 2021-22 को शानदार विदाई दी है।

आर्यन खान ड्रग्स मामले में कोर्ट ने एनसीबी को दी राहत, 60 दिनों में कर सकेंगे चार्जशीट दायर, पढ़ें पूरी खबर

नई दिल्ली। आर्यन खान ड्रग्स मामले में सुनवाई करते हुए मुंबई सेशन कोर्ट ने आज नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो को बड़ी राहत देते हुए चार्जशीट फाइल करने के लिए 60 दिनों का और समय दिया है गौरतलब है कि इस मामले में एनसीबी को 90 दिनों में चार्जशीट फाइल करनी थी इस मामले में शाह रुख खान के बेटे आर्यन खान करीब 1 महीने मुंबई के आर्थर रोड जेल में रह चुके हैं उनके साथ कई अन्य लोगों को भी इस मामले में

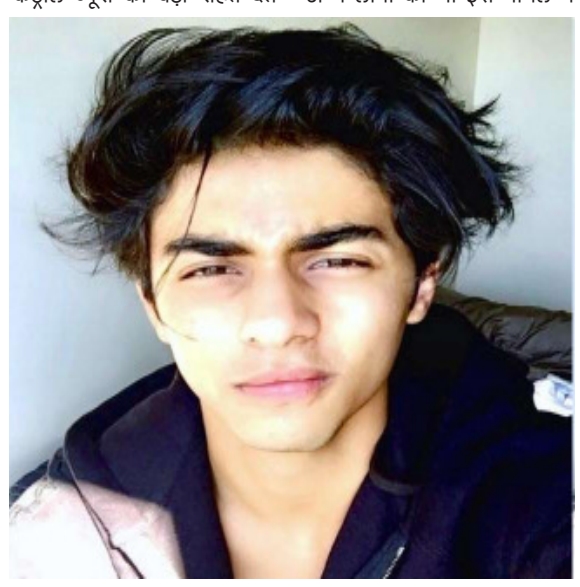

जेल में रहना पड़ा था एनसीबी का कहना है कि मामले की अभी भी जांच चल रही हैत् गौरतलब है कि एनसीबी की एसआईटी मामले की जांच कर रही है इस मामले में एनसीबी की एसआईटी को अप्रैल तक चार्जशीट फाइल करना था हालांकि उन्होंने कोर्ट में एक एप्लीकेशन फाइल की है इसके साथ और समय की मांग की है जज बीबी पाटील ने मामले की सुनवाई की गौरतलब है कि इस मामले में कई हाई-प्रोफाइल नाम जुड़े हुए हैंत् क्रिमिनल प्रोसीजर कोड सीआरपीसी के अनुसार ड्रग्स से जुड़े कानूनों के अनुसार एफआईआर रजिस्टर होने के 180 दिनों के भीतर चार्जशीट फाइल करनी होती है अब एजेंसी ने जांच करने के लिए और समय की मांग की है सीआरपीसी 90 दिनों की अवधि तक और समय दे सकता है पिछली बार आर्यन खान ड्रग्स मामला मीडिया की खबरों में छाया रहा था एनसीबी ने आर्यन खान समेत 19 अन्य लोगों को आरोपी बनाया है 28 अक्टूबर को मुंबई उच्च न्यायालय ने आर्यन खान समेत दो अन्य लोगों को जमानत दी थीत् एनसीबी ने कहा था कि उन्होंने एक ड्रग्स पार्टी का भंडाफोड़ किया था जो कि मुंबई से गोवा जाने वाली क्रूज पर होने वाली थी।

रश्मिका मंदाना संग अमिताभ बच्चन पर चढ़ा अल्लू अर्जुन की 'पुष्पा' का रंग, 'श्रीवल्ली' ने कहा- हम झुकेगा नही

नई दिल्ली। पिछले साल रिलीज हुई अल्लू अर्जुन की तेलुगु फिल्म पुष्पा का खुमार बॉक्स ऑफिस से लेकर सोशल मीडिया तक पर नजर आया, जहां फिल्म के गानों पर बनी रील्स खूब वायरल हुईं। वहीं, जब फिल्म की लीडिंग लेडी रश्मिका मंदाना से सामना हुआ तो अमिताभ बच्चन भी पुष्पा के रंग में रंगे नजर आये। अमिताभ ने इंस्टाग्राम पर रश्मिका मंदाना के साथ अपनी एक तस्वीर शेयर करके इसके कैप्शन में लिखा है- पुष्पा, जिसके जवाब

में रश्मिका ने लिखा- सर, हम झुकेगा नहीं। फिल्म का यह मोनोलॉग काफी वायरल हुआ था, जिसमें पुष्पा के किरदार में अल्लू अर्जुन अपनी दाढ़ी के नीचे हाथ फेरते हुए कहते हैं, नाम से फ्लॉवर समझे क्या, फायर है, मैं झुकेगा नहीं। इस सीन पर खूब मीम और इंस्टाग्राम रील्स बनी थीं। रश्मिका ने फिल्म में श्रीवल्ली नाम का फीमेल लीड रोल निभाया था। रश्मिका अब अमिताभ बच्चन के साथ गुडबाय में नजर आएंगी, जिसकी वो शूटिंग कर रही हैं। यह रश्मिका की दूसरी हिंदी फिल्म होगी। बता दें, गुडबाय की शूटिंग उत्तराखंड के ऋषिकेश और देहरादून में भी की गयी है। गुडबाय का निर्देशन विकास बहल कर रहे हैं, जबकि निर्माता एकता कपूर हैं। नीना गुप्ता, पावेल गुलाटी और सुनील ग्रोवर भी अहम किरदारों में नजर आएंगे। रश्मिका सिद्धार्थ मल्होत्रा के साथ मिशन मजनू से बॉलीवुड डेब्यू करेंगी, जो इसी साल रिलीज होने वाली है। मिशन मजनू पीरियड स्पाई फिल्म है और 10 जून को रिलीज होने वाली है। इस फिल्म का निर्देशन शांतनु बागची ने किया है। पुष्पा की बेतहाशा कामयाबी के बाद रश्मिका मंदाना की हिंदी बेल्ट में भी बड़ी फैन फॉलोइंग बन गयी है। पुष्पा के हिंदी वर्जन ने 100 करोड़ से अधिक कलेक्शन किया था। अब फैंस के इसके दूसरे भाग पुष्पा- द रूल का इंतजार है।

जाह्नवी कपूर की पैंट पर दिल देख हैरान रह गए सोशल मीडिया यूजर्स, पूछ रहे ऐसे-ऐसे सवाल

नई दिल्ली। श्रीदेवी की बेटी जाह्नवी कपूर फिल्म से ज्यादा सोशल मीडिया पर पॉपुलर है। फैंस अक्सर हॉट और सिजलिंग ड्रेस में उनकी तस्वीरों और वीडियोज का इंतजार

करते हैं। पैपराजी भी फिटनेस फ्रीक एक्ट्रेस को जिम से आते-जाते कैप्चर कर ही लेते हैं। हाल ही में जाह्नवी का एक वीडियो इंटरनेट पर जबरदस्त तरीके से वायरल हो रहा है, जिसे देखने के बाद लोग उन्हें जमकर ट्रोल रह रहे हैं। जाह्नवी कपूर को हाल ही में मुंबई के खार इलाके में एक जिम के बाहर स्पॉट किया गया। इस दौरान वह स्पैगिटी क्रॉप टॉप में नजर आईं। इसके साथ ही वह ब्राउन जॉगर्स पहने हुए थीं। हर बार की तरह इस बार भी पैपराजी ने जाह्नवी का वीडियो शेयर किया। जिसमें लोगों का ध्यान उनके जॉगर्स पैंट पर गया और शुरू हो गया ट्रोल करना का सिलसिला। दरअसल, जाह्नवी की पैंट में पीछे की तरफ एक हार्ट शेप जैसा स्टिकर लगा हुआ दिखा, जिसे लेकर कुछ यूजर्स उनका मजाक उड़ा रहे हैं। एक यूजर ने कमेंट करते हुए पूछा, 'पजामा रफू कराकर रखा है क्या?'। तो वहीं एक दूसरे यूजर ने जाह्नवी को मलाइका 2.0 बताया। तो किसी ने पूछा, 'ये कौंसी चल है भगवान'। वर्कफ्रंट की बात करें तो जाह्नवी जल्द ही वरुण धवन के साथ फिल्म 'बवाल' में नजर आने वाली हैं। इस फिल्म को 'दंगल' के डायरेक्टर नितेश तिवारी डायरेक्ट करने वाले हैं। ये फिल्म अगले साल 7 अप्रैल को रिलीज की जाएगी, बवाल' को साजिद नाडियाडवाला की प्रोडक्शंस नाडियाडवाला ग्रैंडसन सपोर्ट करने वाली है। सोशल मीडिया पर इसे लेकर काफी बज हैं। पोस्टर शेयर करते हुए वरुण ने लिखा, 'अब होगा बवाल...साजिद नाडियावाला और नितेश तिवार के साथ अपनी अगली फिल्म के लिए बहुत एक्साइटेड हूं। 7 अप्रैल 2023 को थिएटर में आप लोगों से मिलने का इंतजार नहीं कर सकता'। हालांकि फिल्म की कहानी क्या होगी इस बारे में अभी कोई जानकारी सामने नहीं आई है।

सलमान खान को पड़ोसी का 'मुंह बंद' रखने के मामले में लगा झटका, कोर्ट ने याचिका खारिज करते हुए आरोपों को माना सही

नई दिल्ली। सलमान खान ने पनवेल स्थित अपने फार्म हाउस को लेकर विवाद होने पर एनआरआई पड़ोसी केतन कक्कड़ के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दर्ज किया था इसके साथ उन्होंने उनका मुंह बंद करने वाली एक पिटिशन भी फाइल की थी सेशन कोर्ट के जज ए एच लद्धाड ने 23 मार्च को सलमान खान

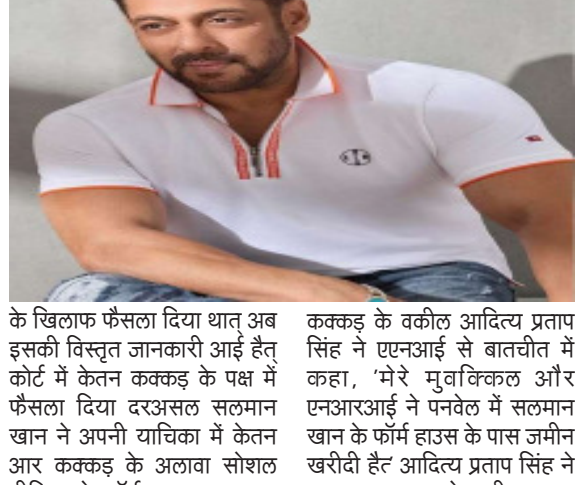

के खिलाफ फैसला दिया थात् अब इसकी विस्तृत जानकारी आई हैत् कोर्ट में केतन कक्कड़ के पक्ष में फैसला दिया दरअसल सलमान खान ने अपनी याचिका में केतन आर कक्कड़ के अलावा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म गूगल, यूट्यूब, फेसबुक, ट्विटर, संदीप फोगाट, पारस भट्ट और उज्जवल नारायण को पार्टी बनाया थात् इन सब के खिलाफ दायर की गई याचिका को कोर्ट ने खारिज कर दिया है कोर्ट ने अपने आदेश में बताया कि केतन कक्कड़ ने शिकायत और शो कॉज नोटिस को प्रूफ के तौर पर दिखाया है जो यह सिद्ध कर रहे हैं कि सलमान ने अपने पनवेल स्थित प्रॉपर्टी के पास अवैध कब्जा किया है इसके चलते केतन कक्कड़ की भूमिका विसलब्लोअर की है केतन कक्कड़ के वकील आदित्य प्रताप सिंह ने एएनआई से बातचीत में कहा, 'मेरे मुवक्किल और एनआरआई ने पनवेल में सलमान खान के फॉर्म हाउस के पास जमीन खरीदी हैत् आदित्य प्रताप सिंह ने सलमान पर आरोप भी लगाया उन्होंने कहा, 'सलमान खान ने जमीन हथियाने का प्रयास किया उन्होंने न सिर्फ पुलिस बल्कि अधिकारियों का भी सहयोग लियात् जब उनके क्लाइंट ने ऐसा करने से रोकने का प्रयास किया, तब सलमान खान ने मुंबई सिटी सिविल एंड सेशन कोर्ट में उनके क्लाइंट के खिलाफ याचिका दायर की, जिसे अब कोर्ट ने खारिज कर दिया है इसके चलते यह साबित होता है कि मेरे मुवक्किल ने सलमान खान के खिलाफ जो भी आरोप लगाए है, उन्हें जज ने सही माना है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डा0 दीपक अरोरा द्वारा
रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए
बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र.) 211002 से मुद्रित
एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी
औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
(उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।